



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (i)

PART II—Section 3—Sub-section (i)

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 508]

नई दिल्ली, बृहस्पतिवार, दिसम्बर 15, 2005/अग्रहायण 24, 1927

No. 508]

NEW DELHI, THURSDAY, DECEMBER 15, 2005/AGRAHAYANA 24, 1927

गृह मंत्रालय

अधिसूचना

नई दिल्ली, 15 दिसम्बर, 2005

सा.का.नि. 718(अ).—केन्द्रीय सरकार पंजाब पुनर्गठन अधिनियम, 1966 (1966 का 31) की धारा 87 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, पंजाब मूल्य वर्धित कर अधिनियम, 2005 (2005 का पंजाब अधिनियम सं. 8) इस अधिसूचना की तारीख का पंजाब राज्य में यथा प्रवृत्त निम्नलिखित उपांतरण सहित चंडीगढ़ संघ राज्यक्षेत्र में विस्तारित करती है, अर्थात् :—

उपांतरण

1. समस्त अधिनियम में,—

(क) निम्नलिखित के सिवाय, "पंजाब राज्य" और "राज्य" शब्दों के स्थान पर, जो :—

(i) वृहत् नाम;

(ii) धारा 2(न)(v) का स्पष्टीकरण (3);

(iii) धारा 2(न)(v) का स्पष्टीकरण (4)(v);

(iv) धारा 4(18) में; और

(v) 'अंतराज्य' या 'अंतरराज्यिक' शब्दों के स्थान पर, :—

(अ) धारा 13(1) के पहले परंतुक;

(आ) धारा 13 के खंड (2) के उप-खंड (क) और उप-खंड (ख) में;

(इ) धारा 19 का खंड (5);

(ई) धारा 20 के खंड (1) के उप-खंड (ख) और उप-खंड (घ);

(उ) धारा 51 के पहले परंतुक के खंड (2) में; और

(ऊ) धारा 84 का खंड (ख),

जहां-जहां वे आते हैं, के स्थान पर "चंडीगढ़ संघ राज्यक्षेत्र" शब्द रखे जाएंगे;

(ख) निम्नलिखित के सिवाय, "राज्य सरकार" शब्दों के स्थान पर, :—

(i) धारा 2(न);

(ii) धारा 2(न)(v) का स्पष्टीकरण (4)(ix); और

(iii) धारा 4(3),

जहां-जहां वे आते हैं, के स्थान पर, "प्रशासक" शब्द रखे जाएंगे;

(ग) धारा 86 और धारा 89 में, "राज्य सरकार" शब्दों के स्थान पर "चंडीगढ़ संघ राज्यक्षेत्र प्रशासन" शब्द रखे जाएंगे;

(घ) "इस अधिनियम" शब्दों के पश्चात्, जहां-जहां वे आते हैं, "चंडीगढ़ संघ राज्यक्षेत्र में यथा विस्तारित" शब्द अंतःस्थापित किए जाएंगे; और

(ङ) "पंजाब साधारण सेल्स टैक्स एक्ट, 1948", शब्दों के पश्चात् जहां जहां वे आते हैं "चंडीगढ़ संघ राज्यक्षेत्र को यथा विस्तारित" शब्द अंतःस्थापित किए जाएंगे।

2. धारा 1 की उपधारा (1) में, "पंजाब मूल्यवर्धित कर अधिनियम, 2005" शब्दों और अंकों के पश्चात् "चंडीगढ़ संघ राज्यक्षेत्र यथा विस्तारित" शब्द अंतःस्थापित किए जाएंगे।

3. धारा 2 में,—

(i) खंड (क) के पश्चात् निम्नलिखित नया खंड अंतःस्थापित किया जाएगा, अर्थात् :—

"(कक) 'प्रशासक' से संविधान के अनुच्छेद 239 के अधीन राष्ट्रपति द्वारा नियुक्त चंडीगढ़ संघ राज्यक्षेत्र का प्रशासक अभिप्रेत है।";

(ii) खंड (यट) का लोप किया जाएगा।

4. धारा 4 के खंड (18) में, "राज्य की संचित निधि" शब्दों के स्थान पर, "भारत की संचित निधि" शब्द रखे जाएंगे।

5. धारा 51 की उप-धारा (8) में, "राज्य सरकार के खजाने" शब्दों के स्थान पर, "केन्द्रीय खजाने" शब्द रखे जाएंगे।

6. धारा 69 की उप-धारा (2) के स्थान पर निम्नलिखित उपधारा रखी जाएगी, अर्थात् :—

"(2) भारतीय साक्ष्य अधिनियम, 1872 में अंतर्निष्ठ किसी बात के होते हुए भी कोई न्यायालय, यथापूर्वोक्त के सिवाय, चंडीगढ़ प्रशासन के किसी अधिकारी से यह अपेक्षा करने का हकदार नहीं होगा कि वह उसके समक्ष ऐसा कोई कथन, विवरणी, लेख, दस्तावेज या अभिलेख या उसका कोई भाग पेश करे या उसके संबंध में साक्ष्य दे।

इस धारा की कोई बात ऐसे किसी कथन, विवरणी, लेख, अभिलेख, दस्तावेजों या साक्ष्य के संबंध में या चंडीगढ़ संघ राज्यक्षेत्र के उत्पाद शुल्क और कराधान विभाग के उपयोग के लिए या भारत सरकार या किसी राज्य सरकार के पदधारियों के संबंध में या ऐसे किसी अधिकरण के पदधारी द्वारा, जिसके साथ चंडीगढ़ प्रशासन ने कोई संविदा की है, आंकड़े तैयार करने के प्रयोजन के लिए, भारतीय दंड संहिता, 1860 के अधीन अभियोजन के प्रयोजन के लिए उपधारा (1) में निर्दिष्ट किन्हीं विशिष्टियों के प्रकटन पर लागू नहीं होगी।"

7. धारा 70 की उपधारा (3) के स्थान पर निम्नलिखित उपधारा रखी जाएगी, अर्थात् :—

"(3) यथा चंडीगढ़ संघ राज्यक्षेत्र को विस्तारित इस अधिनियम के अधीन बनाया गया प्रत्येक नियम बनाए जाने के पश्चात् यथाशीघ्र संसद के प्रत्येक सदन के समक्ष, जब यह ऐसी कुल दस दिनों की अवधि के लिए सत्र में हो जो एक सत्र में अथवा दो या अधिक आनुक्रमिक सत्रों में पूरी हो सकती है, रखा जाएगा और यदि उस सत्र के, जिसमें यह इस प्रकार पुरस्थापित किया गया है, या पूर्वोक्त आनुक्रमिक सत्र के ठीक बाद के सत्र के अवसान के पूर्व सदन उस नियम में कोई परिवर्तन करने के लिए सहमत हो जाए या सदन इस बात से सहमत हो जाए कि वह नियम नहीं बनाया जाना चाहिए तो ऐसा नियम, यथास्थिति, तत्पश्चात् केवल ऐसे परिवर्तित रूप में ही प्रभावी होगा या उसका कोई प्रभाव नहीं होगा, तथापि, उस नियम के ऐसे परिवर्तित या निष्प्रभाव होने से पहले उसके अधीन की गई किसी बात की विधिमान्यता पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा।"

8. धारा 91 की उपधारा (2) में "विधानसभा" शब्दों के स्थान पर "संसद के प्रत्येक सदन" शब्द रखे जाएंगे।

9. धारा 92 में,—

(i) उपधारा (1) का लोप किया जाएगा;

(ii) उपधारा (3) में,—

(क) खंड (क) का लोप किया जाएगा; और

(ख) खंड (ख) से खंड (छ) को क्रमशः खंड (क) से खंड (च) तक पुनर्संख्यांकित किया जाएगा।

10. धारा 94 का लोप किया जाएगा।

[फ्र. सं. यू-11015/1/2005-यूटीएल]

के० एस० सुगाथन, संयुक्त सचिव

भाग 1

अनुसूचक

विधिक और विधायी कार्य विभाग

पंजाब

अधिसूचना

12 अप्रैल, 2005

सं. 13-वि/2005.—पंजाब राज्य के विधान-मंडल का निम्नलिखित अधिनियम को भारत के राष्ट्रपति से 8 अप्रैल, 2005 को अनुमति प्राप्त हुई और इसे सर्वसाधारण की जानकारी के लिए प्रकाशित किया जाता है :

पंजाब मूल्य वर्धित कर अधिनियम, 2005

(2005 का पंजाब अधिनियम सं. 8)

माल के विक्रय या क्रय पर मूल्य वर्धित कर और व्यापारावर्त कर के उद्ग्रहण
और संग्रहण तथा इससे संबंधित या उसके आनुषंगिक विषयों का

उपबंध करने तथा पंजाब साधारण सेल्स टैक्स

अधिनियम, 1948 का निरसन

करने के लिए

अधिनियम।

भारत गणराज्य के छप्पनवें वर्ष में पंजाब राज्य विधानमंडल द्वारा निम्नलिखित रूप में यह अधिनियमित हो :—

अध्याय-1

प्रारंभ

1. संक्षिप्त नाम और प्रारंभ.—(1) इस अधिनियम का संक्षिप्त नाम पंजाब मूल्यवर्धित कर अधिनियम, 2005 है।
(2) यह उस तारीख को जिसे राज्य सरकार राजपत्र में अधिसूचना द्वारा नियत करें, प्रवृत्त होगा।
2. परिभाषाएँ.—इस अधिनियम में जब तक संदर्भ में अन्यथा अपेक्षित न हो :—
 - (क) "लेखा बहियों" से कारबार संव्यवहार का अभिलेख और जिसमें किसी रीति में जिसके अंतर्गत इलैक्ट्रॉनिक माध्यम भी है, रखे गए रजिस्टर और दस्तावेज सम्मिलित हैं, अभिप्रेत हैं;
 - (ख) "नियत दिन" से वह तारीख अभिप्रेत है जिसको यह अधिनियम प्रवृत्त होगा;
 - (ग) "कारबार" में निम्नलिखित सम्मिलित है,—
 - (i) कोई व्यवसाय, वाणिज्य, विनिर्माण प्रोद्यम या सम्मुत्थान, चाहे व्यवसाय, वाणिज्य, विनिर्माण, प्रोद्यम या सम्मुत्थान लाभ कमाने के उद्देश्य से किया जाता है या नहीं तथा इससे कोई लाभ प्रोद्भूत होता हो या नहीं; और
 - (ii) ऐसे व्यवसाय, वाणिज्य, विनिर्माण प्रोद्यम या सम्मुत्थान से संबंधित या उसके आनुषंगिक या समनुषंगी संव्यवहार;
 - (घ) "पूँजी माल" से कोई संयंत्र, मशीनरी या उपस्कर अभिप्रेत है जिसके अंतर्गत विक्रय के लिए कराधेय माल के विनिर्माण प्रसंस्करण और पैकेजिंग में उपयोग किए जाने वाले प्रदूषण नियंत्रण, क्वालिटी नियंत्रण, प्रयोगशाला नियंत्रण और शीत भंडारण के लिए उपस्कर सम्मिलित हैं;
 - (ङ) "मालवाहक" में कोई व्यक्ति या कोई परिवहन कंपनी या कोई बुकिंग अभिकरण सम्मिलित है जो माल का परिवहन करता है, प्राप्त करता है या उसको परिदान करता है;
 - (च) "आकस्मिक व्यापारी" से किसी ऐसे कराधेय व्यक्ति या रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति से भिन्न कोई व्यक्ति अभिप्रेत है जो मालिक, अभिकर्ता या किसी अन्य हैसियत में माल के क्रय, विक्रय, प्रदाय या वितरण से अंतर्बलित कारबार की प्रवृत्ति का या राज्य में किसी प्रदर्शनी सह-विक्रय से, चाहे नकबी के लिए आस्थगित संदाय के लिए या कमीशन, परिलब्धि या अन्य मूल्यवान प्रतिफल के लिए आकस्मिक संव्यवहार करता है;
 - (छ) "आयुक्त" से धारा 3 की उपधारा (1) के अधीन राज्य सरकार द्वारा नियुक्त "उत्पाद-शुल्क और कराधान आयुक्त" अभिप्रेत है;

- (ज) "घोषित माल" से केन्द्रीय विक्रय कर अधिनियम, 1956 की धारा 14 के अधीन अंतरराष्ट्रिय व्यापार या वाणिज्य में विशेष महत्व का घोषित माल अभिप्रेत है;
- (झ) "पदाभिहित अधिकारी" से धारा 3 के अधीन नियुक्त कोई अधिकारी अभिप्रेत है और जिसे इस अधिनियम के प्रयोजनों को कार्यान्वित करने के लिए राज्य सरकार द्वारा जारी की गई किसी अधिसूचना द्वारा शक्तियां प्रदत्त की गई हैं;
- (ञ) "दस्तावेज" से हकदारी विलेख, लेखन या अंतरालेखन अभिप्रेत है और जिसमें इलैक्ट्रानिक आंकड़े, कंप्यूटर कार्यक्रम, कंप्यूटर टेप, कंप्यूटर डिस्क, फोटोचित्र, वीडियोटेप और उस प्रकार की वस्तु सम्मिलित हैं जो साक्ष्य प्रस्तुत करते हैं;
- (ट) "माल" से समाचार पत्रों, अनुयोज्य दावों, धन, स्टॉकों, शेयरों और प्रतिभूतियों से भिन्न और जिसमें पशुधन, खड़ी फसल, घास, वृक्ष, पौधे जो भूमि में लगाए गए हैं या उसका भाग हैं, जिनके लिए, विक्रय से पूर्व विक्रय संविदा के अधीन हटाए जाने का करार किया गया है, चाहे मूर्त या अमूर्त सभी प्रकार की जंगम संपत्ति अभिप्रेत है;
- (ठ) "माल यान" में निम्नलिखित सम्मिलित हैं—
- (i) सड़कों पर उपयोग के लिए बनाए गए कोई यांत्रिक रूप से नोदित यान चाहे उसमें नोदन की शक्ति किसी बाह्य या आंतरिक स्रोत से प्रेषित की जाती है और जिसमें कोई चेंसिस सम्मिलित है जिससे कोई बाड़ी नहीं है और माल के वहन के उपयोग के लिए सन्निर्मित या बनाया गया कोई ट्रेलर और इस प्रकार सन्निर्मित न किया गया या बनाया गया कोई यान जब उसके माल के वहन के लिए एकमात्र रूप से या यात्रियों के अतिरिक्त उपयोग किया जाता है किन्तु जिसमें बिछाई गई पटरियों पर चलने वाला कोई यान या केवल किसी कारखाने या संलग्न परिसरों में उपयोग के लिए बनाया गया किसी विशेष प्रकार का कोई यान सम्मिलित नहीं है;
- (ii) एकमात्र रूप से माल के, या यात्रियों सहित वहन के लिए उपयोग किया जाने वाला पशु द्वारा खींचे जाने वाला या मनुष्य द्वारा खींचे जाने वाला यान।
- (ड) "सकल व्यापारावर्त" में दी गई अवधि के दौरान किसी व्यक्ति द्वारा किए गए विक्रय और/या क्रय की कुल राशि सम्मिलित है, जिसमें किसी भाड़े, भंडारण, डेमेरेज, बीमा और माल के संबंध में उसका परिदान के समय या उससे पूर्व व्यक्ति द्वारा की गई कार्रवाई के मद्दे भारत कोई राशि सम्मिलित है।

स्पष्टीकरण—

- (1) किसी व्यक्ति द्वारा राज्य के बाहर किए गए किसी विक्रय, आगम, जो राज्य के भीतर और बाहर दोनों में कारबार करता है, सकल व्यापारावर्त में सम्मिलित नहीं होंगे,
- (2) अग्रिम संविदा, संव्यवहार के संबंध में जिसमें माल वास्तव में परिदत्त नहीं किया जाता है किसी व्यक्ति से प्राप्य या प्राप्त राशि सकल व्यापारावर्त में सम्मिलित नहीं की जाएगी;
- (3) अवक्रय पर या किस्तों द्वारा संदाय की किसी प्रणाली पर माल के परिदान के संव्यवहारों के संबंध में सकल व्यापारावर्त में सम्मिलित की जाने वाली रकम माल में संपत्ति के क्रय या उसके अर्जन को पूरा करने के अनुक्रम में, जिससे करार संबंधित है, किसी अवक्रय करार के अधीन निक्षेप के रूप में या अन्य आरंभिक संदाय के रूप में या प्रत्यय या किसी ऐसे निक्षेप या संकाय के मुद्दे ऐसे करार के अधीन दिए जाने वाले प्रत्यय के रूप में अवक्रेता द्वारा यथा संदेय कोई राशि सम्मिलित है, चाहे वह राशि स्वामी को या किसी व्यक्ति को संदत्त की जाती है या संदत्त की गई है अथवा धनराशि के संदाय द्वारा या माल के स्थानांतरण या परिदान द्वारा या किसी अन्य रूप से उन्मोचन कर दिया गया है, किन्तु इसमें करार के भंग के लिए शास्ति या ब्याज या प्रतिकर या नुकसानी के रूप में संदेय कोई राशि सम्मिलित नहीं है।
- (4) किसी संकर्म संविदा के अधीन विक्रय के लिए करार किए गए जंगम माल के संबंध में सकल व्यापारावर्त में सम्मिलित की जाने वाली राशि इसका विक्रय मूल्य होगी।
- (क) "आयात" से राज्य की राज्यक्षेत्रीय अधिकारिता के बाहर किसी स्थान से राज्य में माल का जाना अभिप्रेत है;
- (ण) किसी कराधेय व्यक्ति के संबंध में "निवेश कर", से राज्य में कराधेय माल के विनिर्माण या प्रसंस्करण या पैक करने में किसी व्यक्ति द्वारा पुनः विक्रय या उपयोग के लिए क्रेता माल के क्रय पर उसके द्वारा इस अधिनियम के अधीन संदत्त या संदेय मूल्य वर्धित कर अभिप्रेत है;
- (त) "निवेश कर प्रतिदाय" से इस अधिनियम के अधीन किसी कराधेय व्यक्ति को उपलब्ध निवेश कर का प्रतिदाय (जिसे संक्षेप में निवेश कर का प्रतिदाय कहा गया है) अभिप्रेत है;
- (थ) "विनिर्माण" में कोई क्रियाकलाप सम्मिलित है जो कुछ प्रसंस्करणों, उपचार, श्रम के रूप में किसी वस्तु या वस्तुओं में परिवर्तन लाते हैं और जिसके परिणामस्वरूप किसी नई और भिन्न वस्तु में संपरिवर्तन होता है, सुभिन्न नाम, लक्षण उपयोग वाले वाणिज्यिक भाषा में समझे गए हैं किन्तु जिसमें विनिर्माण में ऐसे क्रियाकलाप सम्मिलित नहीं हैं जो अन्यथा अधिसूचित किए जाएं;

- (द) "अपराध" से इस अधिनियम के अधीन दंडनीय बनाई गई कोई कार्रवाई या लोप अभिप्रेत है;
- (ध) किसी कराधेय व्यक्ति के संबंध में "निर्गम कर" से, इस अधिनियम के अधीन यथास्थिति मान के विक्रय या क्रय से संबंधित भारित या प्रभार्य या संदेय कर अभिप्रेत है;
- (न) "व्यक्ति" में कोई एकमात्र स्वामित्वधारी, कोई भागीदारी कोई हिन्दू अविभक्त कुटुम्ब, कोई कम्पनी, कोई सोसाइटी, कोई न्यास, कोई क्लब, कोई संस्था, कोई संगम, कोई स्थानीय प्राधिकरण, किसी राज्य सरकार, संघ राज्यक्षेत्र सरकार या केन्द्रीय सरकार का कोई विभाग, कोई सरकारी उद्यम, कोई कानूनी निकाय या कोई अन्य निगमित निकाय सम्मिलित नहीं है जो कारबार, क्रय, विक्रय, प्रदाय या इस तथ्य पर यह दिए बिना कि ऐसे व्यक्ति के कारबार का मुख्य स्थान राज्य से बाहर है, राज्य में किसी माल के वितरण के सामान्य अनुक्रम में है या नहीं और जहां किसी ऐसे व्यक्ति के कारबार का मुख्य स्थान राज्य में नहीं है, "व्यक्ति" में ऐसे कारोबार के संबंध में राज्य में ऐसे व्यक्ति का स्थानीय प्रबंधक या अधिकर्ता सम्मिलित है और इसमें निम्नलिखित के कारबार में लगा कोई व्यक्ति भी सम्मिलित है,—

- (i) नकदी, आस्थगित संदाय या अन्य मूल्यवान् प्रतिफल के लिए किसी माल में संपत्ति की किसी संविदा के अनुसरण से अन्यथा अंतरण;
- (ii) संकर्म संविदा के निष्पादन में अंतर्बलित माल में (चाहे माल के रूप में या किसी अन्य रूप में) संपत्ति का अंतरण;
- (iii) अवक्रम पर या किस्तों द्वारा संदाय की किसी प्रणाली पर माल का परिदान;
- (iv) नकदी, आस्थगित संदाय या अन्य मूल्यवान् प्रतिफल के लिए किसी प्रयोजन हेतु (चाहे किसी विनिर्दिष्ट अवधि के लिए है या नहीं) किसी माल का उपयोग करने के अधिकार का अंतरण; और
- (v) माल का किसी रूप में या किसी सेवा के भाग के रूप में या किसी अन्य रीति में, चाहे जो भी हो जो खाद्य या मानव उपयोग के लिए कोई अन्य वस्तु या कोई पेय को (चाहे मादक हो या नहीं), जहां ऐसे प्रदाय या सेवा, नकदी, आस्थगित संदाय या अन्य मूल्यवान् प्रतिफल के लिए है:

परन्तु यह कि कोई कृषक या उसके कुटुम्ब का कोई सदस्य, जो राज्य के भीतर अनन्य रूप से कृषि उपज का, जो राज्य में किसी भूमि पर उगाई जाती है जिसमें उसका हित है, चाहे वह उसका स्वामी, बंधकदार, किराएदार या अन्यथा है, विक्रय करता है, तो उसे कोई व्यक्ति नहीं समझा जाएगा;

स्पष्टीकरण—

- (1) कोई सहकारी सोसाइटी या कोई क्लब या कोई संगम जो माल का अपने सदस्य को विक्रय करता है या प्रदाय करता है, इस खंड के अर्थान्तर्गत कोई व्यक्ति है।
- (2) कोई फैक्टर, कोई दलाल, कोई कमीशन अधिकर्ता किसी व्यक्ति का अधिकर्ता, कोई निलामीकर्ता या कोई अन्य वाणिज्यिक अधिकर्ता चाहे जिस नाम से ज्ञात हो, और चाहे वह इसमें इससे पूर्व उसी वर्णन का हो या नहीं जो माल के विक्रय, प्रदाय या क्रय का कारबार करता है और जिसे कारबार के रूढ़िगत अनुक्रम में स्वामियों के माल का विक्रय करने या उनकी ओर से माल का क्रय करने का प्राधिकार है, इस खंड के अर्थान्तर्गत कोई व्यक्ति है।
- (3) इस खंड के प्रयोजन के लिए "सरकार" में भारत सरकार या किसी राज्य की सरकार या भारत का संघ या संघ राज्यक्षेत्र सम्मिलित होंगे।
- (4) निम्नलिखित व्यक्तियों या निकायों में से प्रत्येक जो किसी माल का, व्ययन करता है, जिसके अंतर्गत अदावाकृत या अधिदत्त या अनुपयोगी रूप में या स्क्रेप, अधिशेष, पुराना या अनावश्यक माल या फैकी गई सामग्री या अपशिष्ट उत्पाद, चाहे निलामी द्वारा या अन्यथा प्रत्यक्षतः या किसी अधिकर्ता की मार्फत नकदी या आस्थगित संदाय या किसी अन्य बहुमूल्य प्रतिफल के लिए हो, इस तथ्य पर ध्यान दिए बिना कि इस अधिनियम में अंतर्दिष्ट किसी बात के होते हुए भी ऐसे व्ययन कारबार के अनुक्रम में था या नहीं, इस अधिनियम के प्रयोजनों के लिए ऐसे व्ययन की सीमा तक कोई व्यक्ति समझा जाएगा, अर्थात् :—

- (i) नगर पालिका, नगर परिषद और तत्समय प्रवृत्त किसी विधि के अधीन गठित अन्य स्थानीय प्राधिकारी;
- (ii) रेल अधिनियम, 1989 के अधीन यथापरिभाषित रेल प्रशासन;
- (iii) परिवहन और निर्माण कम्पनियां;
- (iv) मोटरयान अधिनियम, 1988 के अधीन अनुदत्त परिवहन यानों के लिए परमिट धारक कोई व्यक्ति जिनका भाड़े के लिए उपयोग किया जाता है या जो उपयोग किए जाने के लिए उपयुक्त है;
- (v) राज्य सड़क परिवहन निगम;

- (vi) सीमा-शुल्क अधिनियम, 1962 को प्रशासित करने वाला भारत सरकार का सीमा-शुल्क विभाग ;
- (vii) बीमा और वित्तीय निगम या कंपनियाँ और भारतीय रिजर्व बैंक, 1934 की दूसरी अनुसूची में सम्मिलित बैंक ;
- (viii) विज्ञापन अधिकरण; और
- (ix) केन्द्रीय सरकार या किसी राज्य सरकार के स्वामित्वाधीन या उसके द्वारा स्थापित या उसके प्रशासनिक नियंत्रणाधीन, कोई अन्य निगम, कंपनी, निकाय या प्राधिकरण।
- (घ) "कारबार का स्थान" से कोई स्थान अभिप्रेत है जहाँ कोई व्यक्ति माल का क्रय या विक्रय करता है और जिसमें वह स्थान सम्मिलित है जहाँ ऐसा व्यक्ति माल का भंडारण, प्रसंस्करण, उत्पादन या विनिर्माण करता है या लेखा बहियाँ या दस्तावेज रखता है या कोई अन्य स्थान जहाँ कारबार क्रियाकलाप संचालित की जाती है ;
- (फ) "विहित" से इस अधिनियम के अधीन बनाए गए नियमों द्वारा विहित अभिप्रेत है;
- (ब) "क्रय" से इसके सभी व्याकरणीय रूप भेदों या सजातीय पदों सहित किसी बंधक, आडमान, प्रभार या गिरवी के अधीन से अन्यथा भिन्न नकदी या आस्थगित संदाय या अन्य मूल्यवान प्रतिफल के लिए माल का अर्जन अभिप्रेत है और इसमें निम्नलिखित सम्मिलित हैं :—
- (i) नकदी, आस्थगित संदाय या अन्य मूल्यवान प्रतिफल के लिए किसी माल में संपत्ति की किसी संविदा के अनुसरण से अन्यथा भिन्न अंतरण;
 - (ii) संकर्म संविदा के निष्पादन में अंतर्वर्तित माल में संपत्ति का अंतरण (चाहे माल के रूप में हो या किसी अन्य रूप में);
 - (iii) अवक्रय पर या किस्तों द्वारा संदाय की किसी प्रणाली पर माल का परिदान;
 - (iv) नकदी, आस्थगित संदाय या अन्य मूल्यवान प्रतिफल के लिए किसी प्रयोजन हेतु किसी माल का उपयोग करने के लिए अधिकार का अंतरण, (चाहे किसी विनिर्दिष्ट अवधि के लिए हो या नहीं);
 - (v) माल का किसी रूप में या किसी सेवा के भाग के रूप में या किसी अन्य रीति में, चाहे जो भी हो जो खाद्य या मानव उपयोग के लिए कोई अन्य वस्तु या कोई पेय को (चाहे मादक हो या नहीं), जहाँ ऐसे प्रदाय या सेवा, नकदी, आस्थगित संदाय या अन्य मूल्यवान प्रतिफल के लिए है, प्रदाय,
- और किसी माल का ऐसा अंतरण, परिदान या प्रदाय किसी ऐसे व्यक्ति से अंतरण, परिदान या प्रदाय करने वाला व्यक्ति या जिसको ऐसा अंतरण, परिदान या प्रदाय किया जाता है, इस माल का कोई क्रय समझा जाएगा ;
- (भ) "क्रय मूल्य" से किसी क्रय के लिए किसी व्यक्ति द्वारा संदत्त या संदेय मूल्यवान प्रतिफल की राशि अभिप्रेत है, जिसमें उसके परिदान के समय या उसके पूर्व माल के संबंध में किसी व्यक्ति द्वारा भाड़े, भंडारण, डेमेरेज, बीमा के मद्दे प्रभारित कोई राशि और की गई किसी बात के लिए प्रभारित कोई अन्य राशि सम्मिलित है;

स्पष्टीकरण—

- (1) क्रय मूल्य में, ऐसे क्रय के संबंध में किसी व्यक्ति द्वारा इस अधिनियम के अधीन संदत्त या संदेय क्रय मूल्य सम्मिलित नहीं होगा।
 - (2) अनुसूची ज में सूचीबद्ध माल के संबंध में, विक्रेता या क्रेता द्वारा या उसकी ओर से पंजाब एग्रीकल्चरल प्रोड्यूस मार्केट्स ऐक्ट, 1961 (1961 का पंजाब अधिनियम 23) या पंजाब रूरल डेवलपमेंट ऐक्ट, 1987 (1987 का पंजाब अधिनियम 6) पंजाब इन्फ्रास्ट्रक्चर (डेवलपमेंट एंड रेग्यूलेशन) ऐक्ट, 2002 (2002 का पंजाब अधिनियम 8) के अधीन संदत्त या संदेय कोई कर, शुल्क, उपकर या फीस भी क्रय मूल्य का भाग होगा।
- (म) "त्रैमासिक" से किसी कलेंडर वर्ष की 1 अप्रैल, 1 जुलाई, 1 अक्टूबर और 1 जनवरी से आरंभ होने वाले तीन मास की कोई अवधि अभिप्रेत है ;
- (य) "रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति" से ऐसा व्यक्ति अभिप्रेत है, जो इस अधिनियम के अधीन व्यापारावर्त कर का संदाय करने के प्रयोजन के लिए रजिस्ट्रीकृत है ;
- (यक) "निरसित अधिनियम" से पंजाब जनरल सेल्स टैक्स ऐक्ट, 1948 अभिप्रेत है ;
- (यख) "फुटकर बीजक" से किसी कराधेय या रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति या किसी आकस्मिक व्यापारी द्वारा क्रेता को जारी किया गया कोई बीजक अभिप्रेत है जिसमें विक्रय किया गया माल, उसके मूल्य, मात्रा और कीमत सहित सूचीबद्ध है ;
- (यग) "विवरणी" से विहित प्ररूप में विवरणी अवधि से इसमें कारबार का सच्चा और सही लेखा अभिप्रेत है ;
- (यघ) "विवरणी अवधि" से ऐसा व्यक्ति अभिप्रेत है जिसके लिए किसी व्यक्ति द्वारा विवरणी दी जानी है ;

(यड) "उलटा निवेश कर प्रतिदाय" से निवेश कर प्रतिदाय की कोई राशि अभिप्रेत है जो निम्नलिखित के मद्दे किसी कराधेय व्यक्ति द्वारा लौटा दी जानी अपेक्षित है —

- (i) कर पर जिसके संबंध में निवेश कर प्रतिदाय का दावा किया जाता है माल के विक्रेता से प्राप्त निर्गम कर के लिए साख पत्र;
- (ii) निवेश कर प्रतिदाय का उपभोग करने के पश्चात् लौटाया गया माल;
- (iii) निवेश कर प्रतिदाय का उपभोग करने के लिए विहित शर्तों के अनुसरण में तत्पश्चात् उपयोग न किया गया माल; और
- (iv) धारा 13 की उपधारा (8) और उपधारा (9) के उपबंधों के अनुसरण में उसे लौटा देने के लिए अपेक्षित उपभोग करने पर साख;

(यच) "विक्रय" से इसके सभी व्याकरणीय रूप भेदों या सजातीय पदों सहित किसी बंधक, आडमान, प्रभार या गिरवी के अधीन से अन्यथा भिन्न नकदी या आस्थगित संदाय या अन्य मूल्यमान प्रतिफल के लिए माल का अर्जन अभिप्रेत है और इसमें निम्नलिखित सम्मिलित हैं :—

- (i) नकदी आस्थगित संदाय या अन्य मूल्यवान प्रतिफल के लिए किसी माल में संतति की किसी संविदा के अनुसरण से अन्यथा भिन्न अंतरण;
- (ii) संकर्म संविदा, निष्पादन में अंतर्वर्तित माल में संपत्ति का अंतरण (चाहे माल के रूप में हो या किसी अन्य रूप में);
- (iii) अवक्रय पर या किस्तों पर संदाय की किसी प्रणाली के माल का परिदान;
- (iv) नकदी, आस्थगित संदाय या अन्य मूल्यवान प्रतिफल के लिए किसी प्रयोजन हेतु किसी माल का उपयोग करने के लिए अधिकार का अंतरण (चाहे किसी विनिर्दिष्ट अवधि के लिए हो या नहीं);
- (v) किसी अनिगमित संगम या व्यक्ति निकाय द्वारा अपने सदस्यों को नकदी, आस्थगित संदाय या अन्य मूल्यवान प्रतिफल के लिए माल का प्रदाय;
- (vi) माल का किसी रूप में या किसी सेवा के भाग के रूप में या किसी अन्य रीति में, चाहे जो भी हो जो खाद्य या मानव उपयोग के लिए कोई अन्य वस्तु या कोई पेय हो (चाहे मादक हो या नहीं), जहां ऐसे प्रदाय या सेवा नकदी, आस्थगित संदाय या अन्य मूल्यवान प्रतिफल के लिए है, प्रदाय; और
- (vii) इस धारा के खंड (न) के स्पष्टीकरण (4) में निर्दिष्ट माल का व्ययन;

और किसी ऐसे व्यक्ति को माल का अंतरण, परिदान या प्रदाय करने वाले व्यक्ति द्वारा जिसको ऐसा अंतरण, परिदान या प्रदाय किया जाता है, किन्तु जिसमें कोई बंधक, आडमान प्रभार या गिरवी सम्मिलित नहीं है, किसी माल का ऐसा अंतरण, परिदान या प्रदाय ऐसे माल का कोई विक्रय समझा जाएगा।

(यछ) "विक्रय मूल्य" से किसी क्रय के लिए किसी व्यक्ति द्वारा प्राप्त या प्राप्य मूल्यवान प्रतिफल की राशि अभिप्रेत है, जिसमें उसके परिदान के समय या उससे पूर्व माल के संबंध में किसी व्यक्ति द्वारा भाडे, भंडारण, डेमेरेज, बीमा के मद्दे प्रभारित कोई राशि और की गई किसी बात के लिए प्रभारित कोई अन्य राशि सम्मिलित है;

स्पष्टीकरण—

- (1) संकर्म संविदा के निष्पादन में अंतर्वर्तित माल में संपत्ति के अंतरण से इसमें (चाहे माल के रूप में या किसी अन्य रूप में) विक्रय माल से ऐसी राशि अभिप्रेत है जो ऐसी संकर्म संविदा के निष्पादन के लिए किसी व्यक्ति को संदेय या संदेय मूल्यवान प्रतिफल की रकम से कटौती करके, ऐसे निष्पादन के लिए माल में संपत्ति के अंतरण के संबंध में से अन्यथा उद्भूत श्रम और अन्य प्रभारों तथा प्रोद्भूत लाभ के रूप में राशि प्राप्त होती है। जहां ऐसे श्रम और अन्य प्रभारों की मात्रा को निश्चित नहीं किया जा सकता है, वहां विक्रय मूल्य, माल के अर्जन की लागत होगा और उन पर लाभ के अंतर में माल में संपत्ति के अंतरण की लागत को जोड़कर तथा उसके संबंध में ऐसे माल में संपत्ति के, चाहे उस रूप में हो या किसी अन्य रूप में, संविदाकार को अंतरण होने तक, सभी अन्य व्यय तथा जहां संपत्ति किसी विभिन्न रूप में अंतरित होता है, वहां इसमें संपरिवर्तन की लागत सम्मिलित होगी।
- (2) अवक्रय पर या किस्तों द्वारा संदेय की किसी प्रणाली पर माल के परिदान के संबंध में, ऐसे परिदान के लिए किसी व्यक्ति को संदेय मूल्यवान प्रतिफल की राशि।
- (3) ऐसे अंतरण के लिए प्राप्त या प्राप्य मूल्यवान प्रतिफल के प्रयोजन के लिए किसी माल के उपयोग के अधिकार, अंतरण के संबंध में (चाहे किसी विनिर्दिष्ट व्यक्ति के लिए हो या नहीं)।
- (4) केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क और नमक अधिनियम, 1944 (1944 का 1) या सीमा-शुल्क अधिनियम, 1962 (1962 का 52) या पंजाब उत्पाद-शुल्क अधिनियम, 1914 (1914 का 1) के अधीन माल पर उद्गृहीत या उद्गृहणीय शुल्क की राशि ऐसे माल के

विक्रय मूल्य का भाग समझी जाएगी, चाहे ऐसा शुल्क विक्रेता द्वारा या किसी अन्य व्यक्ति द्वारा या उसकी ओर से संदत्त या संदेय हो।

(5) विक्रय मूल्य में ऐसे विक्रय के संबंध में किसी व्यक्ति को संदत्त या संदेय कर में सम्मिलित नहीं होगा।

- (यज) "अनुसूची" से इस अधिनियम से संलग्न अनुसूची अभिप्रेत है ;
- (यझ) "धारा" से इस अधिनियम की कोई धारा अभिप्रेत है ;
- (यञ) "राज्य" से पंजाब राज्य अभिप्रेत है ;
- (यट) "राज्य सरकार" से पंजाब राज्य की सरकार अभिप्रेत है ;
- (यठ) "कराधेय माल" से इस अधिनियम की धारा 16 के अधीन कर मुक्त घोषित किए गए माल से भिन्न, माल अभिप्रेत है ;
- (यड) "कर की अवधि" से ऐसी अवधि अभिप्रेत है जिसके लिए इस अधिनियम और उसके अधीन बनाए गए नियमों के अधीन किसी व्यक्ति से कर का संदाय करने की अपेक्षा की जाती है ;
- (यढ़) "कराधेय व्यक्ति" से ऐसा व्यक्ति अभिप्रेत है जो इस अधिनियम के अधीन मूल्य वर्धित कर का संदाय करने के प्रयोजन के लिए रजिस्ट्रीकृत है ;
- (यण) "कराधेय व्यापारावर्त" से विक्रय या क्रय के सकल व्यापारावर्त का वह भाग अभिप्रेत है जो विक्रय या क्रय के सकल व्यापारावर्त से ऐसी कटौती जो इस अधिनियम के अधीन अनुज्ञेय हैं या जो विहित की जाएं, करने के पश्चात्, अवधारित की जाए, जिन पर कोई व्यक्ति कर का संदाय करने का दायी होगा ;
- (यत) "अधिकरण" से अधिनियम की धारा 4 के अधीन गठित अधिकरण अभिप्रेत है ;
- (यथ) "व्यापारावर्त कर" जिसे संक्षेप में व्या. कर कहा गया है इस अधिनियम के उपबंधों के अनुसार किसी रजिस्ट्रीकृत अवधि के लिए कराधेय व्यापारावर्त पर उद्ग्रहणीय कोई कर अभिप्रेत है ;
- (यद) "मूल्य वर्धित कर" (जिसे संक्षेप में वेट कहा गया है) से इस अधिनियम के अधीन किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति से भिन्न किसी व्यक्ति के कराधेय व्यापारावर्त पर उद्ग्रहणीय कोई कर अभिप्रेत है ;
- (यध) "मूल्य वर्धित कर बीजक" से छूट प्राप्त यूनिट से भिन्न किसी अन्य कराधेय व्यक्ति को किसी कराधेय व्यक्ति द्वारा जारी किया गया कोई बीजक अभिप्रेत है जिसमें प्रदाय किया गया माल, उसके मूल्य, मात्रा, कीमत और प्रभारित मूल्य वर्धित कर सहित सूचीबद्ध हैं ;
- (यन) "यान" में कोई पोत, नौका, नाव, रैफ्ट, किसी रीति में नोदित इमारती, बांस या प्लवमान सामग्री अभिप्रेत है ;
- (यप) "संकर्म संविदा" में, नकदी, आस्थगित संदाय या अन्य मूल्यवान प्रतिफल के लिए, निर्माण, संनिर्माण, विनिर्माण, प्रसंस्करण, किसी जंगम या स्थावर संपत्ति को बनाने, उसके परिनिर्माण, प्रतिष्ठापन, भरण, सुधार उपांतरण, मरम्मत या स्थापित करने के लिए करार सम्मिलित है ; और
- (यफ) "वर्ष" से 1 अप्रैल से आरंभ होने वाले और 31 मार्च को समाप्त होने वाला वित्तीय वर्ष अभिप्रेत है।

3. आयुक्त और अन्य अधिकारी.— (1) इस अधिनियम के प्रयोजनों को कार्यान्वित करने के लिए राज्य सरकार, किसी अधिकारी को आयुक्त के रूप में और उसकी सहायता करने के लिए ऐसे अन्य अधिकारियों को, जिन्हें वह उपयुक्त समझे, नियुक्त कर सकेगी।

(2) आयुक्त की संपूर्ण राज्य पर अधिकारिता होगी और उसे इस अधिनियम द्वारा या उसके अधीन प्रदत्त शक्तियां होंगी और वह उस पर अधिरोपित सभी कर्तव्यों का पालन करेगा। उपधारा (1) के अधीन नियुक्त सभी अन्य अधिकारी ऐसी शक्तियों का जो राज्य सरकार द्वारा उसे प्रदत्त की जाएं, प्रयोग करेगा।

(3) आयुक्त की सहायता करने के लिए उपधारा (1) के अधीन नियुक्त प्रत्येक अधिकारी, आयुक्त के साधारण अधीक्षण और नियंत्रण के अधीन रहते हुए अपनी शक्तियों का प्रयोग करेगा।

(4) उपधारा (1) के अधीन नियुक्त अधिकारी, भारतीय दंड संहिता, (1860 का केन्द्रीय अधिनियम 45) की धारा 21 के अर्थात्तगत लोक सेवक समझे जाएंगे।

4. अधिकरण का गठन.— (1) राज्य सरकार, राजपत्र में अधिसूचना द्वारा इस अधिनियम के अधीन अधिकरण को प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग और कृत्यों का निर्वहन करने के लिए एक अधिकरण का गठन करेगा।

(2) अधिकरण, राज्य सरकार द्वारा नियुक्त किए जाने वाले एक अध्यक्ष और तीन अन्य सदस्यों से मिलकर बनेगा।

(3) अध्यक्ष या तो उच्च न्यायालय का कोई सेवानिवृत्त न्यायाधीश होगा या राज्य सरकार के मुख्य सचिव या भारत सरकार के सचिव की पंक्ति का कोई सेवानिवृत्त या सेवारत अधिकारी होगा।

(4) उप-धारा (2) के अधीन नियुक्त सदस्य के पास निम्नलिखित अर्हताएं और अनुभव होगा, अर्थात् :—

(क) कोई विधि स्नातक होना चाहिए और उसे उच्च न्यायालय में या भारत के उच्चतम न्यायालय में कर से संबंधित विषयों में कम से कम पंद्रह वर्षों का व्यवसाय करने का अनुभव होना चाहिए; या

(ख) उसे राज्य के उत्पाद-शुल्क और कराधान विभाग का कोई सेवानिवृत्त या सेवारत अधिकारी होना चाहिए जिसमें उसे कम से कम दो वर्ष का अतिरिक्त उत्पाद-शुल्क और कराधान आयुक्त के पद का अनुभव होना चाहिए; या

(ग) उसे चार्टर्ड अकाउंटेंट अधिनियम, 1949 (1949 का केन्द्रीय अधिनियम 38) के अधीन चार्टर्ड अकाउंटेंट के रूप में व्यवसाय करने का कम से कम पंद्रह वर्ष का अनुभव होना चाहिए; या

(घ) उसे संघ सरकार द्वारा गठित सीमा-शुल्क, केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क और सेवा कर अपील अधिकरण के किसी सदस्य के रूप में नियुक्ति के लिए पात्र होना चाहिए :

परन्तु अधिकरण का एक सदस्य उपर्युक्त प्रवर्गों में से प्रत्येक में से नियुक्त किया जाएगा।

(5) राज्य सरकार, सदस्यों में से किसी सदस्य को अधिकरण, उपाध्यक्ष के रूप में नियुक्त कर सकेगा।

(6) उपाध्यक्ष, अध्यक्ष की ऐसी शक्तियों का प्रयोग और ऐसे कृत्यों का पालन करेगा जो अध्यक्ष द्वारा किसी साधारण या विशेष लिखित आदेश द्वारा उसे प्रत्यायोजित किया जाए। अध्यक्ष की अनुपस्थिति में उपाध्यक्ष, अध्यक्ष के रूप में कार्य करेगा।

(7) अधिकरण का अध्यक्ष या कोई सदस्य उसके पद ग्रहण करने की तारीख से तीन वर्ष की अवधि के लिए पद धारण करेगा और वह पुनर्नियुक्ति के लिए पात्र नहीं होगा।

(8) कोई व्यक्ति, अधिकरण के अध्यक्ष या सदस्य के रूप में नियुक्त नहीं किया जाएगा या नहीं बना रहेगा, यदि वह सड़सठ वर्ष की आयु प्राप्त नहीं कर लेता है।

(9) अधिकरण का अध्यक्ष, उपाध्यक्ष और अन्य सदस्य, उतने वेतन और भत्ते के हकदार होंगे और सेवा की उन शर्तों द्वारा शासित होगा जो राज्य सरकार द्वारा विनिर्दिष्ट की जाएं।

(10) अधिकरण का अध्यक्ष, उपाध्यक्ष या कोई सदस्य राज्य सरकार द्वारा पद से हटाया जा सकेगा, यदि,—

(क) वह दिवालिया न्यायनिर्णीत हो गया है; या

(ख) वह अपने पद के कर्तव्यों से बाहर नियोजन प्राप्त करता है; या

(ग) वह मानसिक मन्दता या किसी अन्य कारण अपने कर्तव्यों का पालन करने में अशक्त हो गया है; या

(घ) वह अवचार का दोषी है जिसके कारण वह अधिकरण के अध्यक्ष या उपाध्यक्ष या सदस्य के रूप में बने रहने के लिए अयोग्य हो गया है; या

(ङ) वह नैतिक अधमता से अतर्कित किसी अपराध के लिए दोषी है।

(11) यथास्थिति अध्यक्ष, उपाध्यक्ष या कोई सदस्य, राज्य सरकार को सम्बोधित अपने हस्ताक्षर द्वारा लिखित में किसी समय अपने पद को त्याग सकेगा किन्तु अपने त्यागपत्र की तारीख से जिसको उसे स्वीकार किया जाता है, प्रभावी होगा।

(12) अधिकरण का अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, और सदस्य भारतीय दंड संहिता (1860 का अधिनियम 45) की धारा 21 के अर्थान्तर्गत लोक सेवक समझा जाएगा।

(13) इस अधिनियम के अधीन किए गए कोई आदेश या कोई कार्यवाई या अधिकरण के समक्ष की गई कार्यवाइयों को, केवल इस आधार पर कि अधिकरण के गठन में कोई त्रुटि है, किसी रीति में प्रश्नगत नहीं किया जाएगा।

(14) अधिकरण को, लागत को अधिनिर्णीत करने की शक्ति होगी। ऐसी लागतों के बकाया को, भू-राजस्व के बकाया के रूप में वसूल किया जाएगा।

(15) राज्य सरकार की पूर्व मंजूरी के अधीन रहते हुए अधिकरण अपनी प्रक्रिया को विनियमित करने के प्रयोजन के लिए, इस अधिनियम के प्रयोजनों और उसके अधीन बनाए गए नियमों के अनुरूप विनियम बनाएगा।

(16) राज्य सरकार द्वारा दिए गए अनुदेशों के अधीन रहते हुए, ऐसे स्थान या स्थानों पर, जो वह उपयुक्त समझे, बैठक करेगा।

(17) राज्य सरकार, यथास्थिति ऐसे अधिकारियों या पदधारियों को, जो वह इस अधिनियम के अधीन अपने कृत्यों को कार्यान्वित करने के लिए अधिकरण को समर्थ बनाने के लिए आवश्यक समझे, नियुक्त कर सकेगी।

(18) अधिकरण के प्रशासनिक व्यय, जिसके अंतर्गत अधिकरण के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, सदस्य, अधिकारी और पदधारी को संदेय वेतन, भत्ते और पेंशन यदि कोई हो, राज्य की संचित निधि से भारित किया जाएगा।

5. अधिकरण की प्रक्रिया.— (1) उनके सदस्यों में से अध्यक्ष द्वारा गठित न्यायपीठों द्वारा अधिकरण की शक्ति का प्रयोग और कृत्यों का निर्वहन निम्नलिखित द्वारा किया जाएगा :—

- (क) तीन सदस्यों से मिलकर बनने वाली कोई न्यायपीठ;
- (ख) दो सदस्यों से मिलकर बनने वाली कोई न्यायपीठ; और
- (ग) कोई एकल सदस्य।

(2) उप-धारा (1) के खंड (ग) में निर्दिष्ट एकल सदस्य या तो अध्यक्ष या कोई अन्य सदस्य होगा :

परन्तु यदि कोई मामला किसी ऐसे एकल सदस्य के समक्ष होता है, जो अध्यक्ष नहीं है या ऐसी न्यायपीठ है जिसमें अध्यक्ष कोई सदस्य नहीं है, जिसमें विधि का प्रश्न अंतर्बलित है, यथास्थिति ऐसा एकल सदस्य या न्यायपीठ अपने विवेकानुसार ऐसे मामले को ऐसी न्यायपीठ द्वारा, जिसमें अध्यक्ष एक सदस्य होगा, विनिश्चय किए जाने के लिए आरक्षित कर सकेगा।

(3) जहां कोई अपील या आवेदन तीन सदस्यों से मिलकर बनने वाली किसी न्यायपीठ द्वारा सुना जाता है और सदस्यों का किसी बिन्दु पर राय में मतभेद है, तब उस बिन्दु को बहुमत की राय के अनुसार विनिश्चय किया जाएगा।

(4) जहां कोई अपील या आवेदन दो सदस्यों से मिलकर बनने वाली किसी न्यायपीठ द्वारा सुना जाता है और सदस्य किसी बिन्दु पर अपनी राय में विभाजित हैं तब उस बिन्दु को तीन सदस्यों से मिलकर बनने वाली, जिनमें एक अध्यक्ष होगा, किसी न्यायपीठ को विनिश्चय के लिए विनिर्दिष्ट किया जाएगा।

(5) यदि, अधिकरण से या विभिन्न न्यायपीठ से किसी विवाद्यक पर विविध निर्णय हैं तो अध्यक्ष आशुक्त से किसी प्रतिनिर्देश पर, उस विवाद्यक का विनिश्चय करने के लिए अधिकरण की बहु सदस्य वाली न्यायपीठ का गठन करेगा जिसमें वह स्वयं एक सदस्य और कम से कम दो अन्य सदस्य होंगे। ऐसी कोई न्यायपीठ पूर्वतर विनिश्चयों को मंगा सकेगी और विवाद्यक का नए सिरे से विनिश्चय करने के लिए अग्रसर होगी। ऐसी किसी न्यायपीठ द्वारा अधिकृत आदेश या नियम का उस विषय पर सभी पूर्ववर्ती आदेशों या नियमों पर अध्यारोही होगा और पक्षकारों पर बाध्यकर होगा।

अध्याय-2

कर का भार और उद्ग्रहण

6. कर का भार और उद्ग्रहण.— (1) प्रत्येक व्यक्ति, किसी आकस्मिक व्यापारी और धारा 16 के अधीन कर मुक्त घोषित माल में अनन्य रूप से संव्यवहार करने वाले व्यक्तियों के सिवाय, जिसको सकल व्यापारावर्त इस अधिनियम के प्रारंभ से ठीक पूर्ववर्ती वर्षों के दौरान या उसके पश्चात्वर्ती किसी वर्षों के दौरान उप-धारा (3) के खंड (क) में यथा उपबंधित कराधेय राशि से अधिक हो जाता है, इस अधिनियम के अधीन मूल्य वर्धित कर के रूप में कराधेय व्यापारावर्त पर कर का संदाय करने का दायी होगा।

(2) प्रत्येक व्यक्ति, किसी आकस्मिक व्यापारी और धारा 16 के अधीन कर मुक्त घोषित माल में अनन्य रूप से संव्यवहार करने वाले व्यक्तियों के सिवाय, जिसका सकल व्यापारावर्त इस अधिनियम के प्रारंभ से ठीक पूर्ववर्ती वर्षों के दौरान या उसके पश्चात्वर्ती किसी वर्षों के दौरान उप-धारा (3) के खंड (ख) में यथा उपबंधित कराधेय राशि से अधिक हो जाता है, इस अधिनियम के अधीन व्यापारावर्त कर के रूप में कराधेय व्यापारावर्त पर कर का संदाय करने का दायी होगा।

(3) इस धारा के प्रयोजन के लिए, 'कराधेय' राशि से निम्नलिखित अभिप्रेत हैं—

(क) मूल्य वर्धित कर के लिए किसी कराधेय व्यक्ति के रूप में रजिस्ट्रीकरण के लिए—

- (i) किसी ऐसे व्यक्ति के संबंध में, जो राज्य में किसी माल के विक्रय या विनिर्माण में उपयोग के लिए या प्रसंस्करण के लिए कराधेय माल का आयात करता है, एक रुपया ;
- (ii) किसी ऐसे व्यक्ति के संबंध में, जो राज्य के भीतर या बाहर पारेषण/शाखा अंतरण आधार मर माल प्राप्त करता है, जिस पर इस अधिनियम के अधीन कोई कर संदाय नहीं किया गया है, एक रुपया ;
- (iii) धारा 19 के अधीन कर का संदाय करने के दायी किसी व्यक्ति के संबंध में, एक रुपया ;
- (iv) किसी ऐसे व्यक्ति के संबंध में जो विनिर्माणकर्ता है, एक लाख रुपया ;
- (v) स्वैच्छिक संगठन के संबंध में पांच लाख रुपए ;
- (vi) किसी अन्य व्यक्ति के संबंध में, पच्चीस लाख रुपए।

(ख) व्यापारावर्त कर के लिए किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति के रूप में रजिस्ट्रीकरण के लिए—

खंड (क) में विनिर्दिष्ट व्यक्तियों से भिन्न किसी व्यक्ति के संबंध में, जिसका पूर्ववर्ती वर्षों के दौरान व्यापारावर्त पांच लाख रूपए से अधिक है किन्तु पच्चीस लाख रूपए से कम है।

(4) प्रत्येक व्यक्ति, जो इस अधिनियम के अधीन कर का संदाय करने के लिए, मूल्य वर्धित कर के रूप में या व्यापारावर्त कर के रूप में दायी हो गया है, तीन आनुक्रमिक वर्षों के अवसान तक, जिसमें प्रत्येक के दौरान उसकी कुल व्यापारावर्त कराधेय राशि से अधिक नहीं होता है, इस प्रकार दायी बना रहेगा और ऐसे अवसान की तारीख के पश्चात् ऐसी और अवधि, जो राज्य सरकार द्वारा अधिसूचना द्वारा विनिर्दिष्ट की जाए और ऐसी विनिर्दिष्ट अवधि के अवसान पर कर का संदाय करने का दायित्व नहीं रहेगा।

(5) प्रत्येक व्यक्ति, जिसका कर का संदाय करने का दायित्व, उपधारा (4) के अधीन नहीं रहता है उस तारीख से जिसको उसका सकल व्यापारावर्त पुनः कराधेय राशि से अधिक हो जाता है, इस अधिनियम के अधीन कर का संदाय करने के लिए पुनः दायी होगा।

(6) प्रत्येक आकस्मिक व्यापारी, इस अधिनियम के अधीन कराधेय व्यापारावर्त पर मूल्य वर्धित कर के रूप में जिसके अंतर्गत राज्य के भीतर अभिकर्ता की मार्फत विक्रय भी है, कर का संदाय करने का दायी होगा।

7. केन्द्रीय विक्रय कर अधिनियम, 1956 के अधीन रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति के दायित्व.—केन्द्रीय विक्रय-कर अधिनियम, 1956 (1956 का केन्द्रीय अधिनियम संख्यांक 74) के अधीन रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, इस अधिनियम के अधीन उस राज्य के भीतर उसके द्वारा विक्रय मूल्य वर्धित कर को संदत्त करने का दायित्व होगा, तथ्यों को दृष्टि में लाए बिना इस अधिनियम की धारा 6 के अधीन कर संदत्त का दायित्व नहीं है। तथापि, किसी व्यक्ति की दशा में इस धारा के उपबंध लागू नहीं होंगे, जो धारा 16 के अधीन अनन्य रूप से कर मुक्त माल घोषित किया गया है।

8. मूल्य वर्धित कर की दर.—(1) इस अधिनियम के उपबंधों के अध्याधीन किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति से भिन्न व्यक्ति को कराधेय आवर्त पर, मूल्य वर्धित कर ऐसी दर पर जो अनुसूची में विनिर्दिष्ट की जाए, लेकिन एक रुपये में तीस पैसे से अनुधिक न हो, उद्ग्रहीत किया जाएगा।

परन्तु कर की दर घोषित माल के क्रय या विक्रय पर लागू होगी, जो केन्द्रीय विक्रय-कर अधिनियम 1956 की धारा 15 के खण्ड (क) में यथाविनिर्दिष्ट चार प्रतिशत या ऐसी दर से अधिक न हो।

(2) इस धारा में अंतर्दिष्ट किसी बात के होते हुए भी, जहां कोई माल, पात्र में या किसी पैकिंग सामग्री में पैक किए हुए, विक्रीत किया गया है तो ऐसे पात्र या सामग्री पैकिंग पर कर की दर लागू होगी, चाहे पात्र या पैकिंग सामग्री की कीमत पृथक् रूप से भारित की गई है या नहीं, जो उसमें अंतर्दिष्ट या पैक किया गया माल को वही दर लागू होगी और पात्र के संबंध में आवर्त और पैकिंग सामग्री ऐसे माल के आवर्त में सम्मिलित होगी। वही माल कर मुक्त पात्र में या पैकिंग सामग्री में पैक विक्रीत किया गया है, ऐसे पात्र या पैकिंग सामग्री कर मुक्त होगी।

(3) राज्य सरकार, अधिसूचना द्वारा, अपने इस प्रकार करने के आशय की 15 दिन की सूचना देने के पश्चात् अधिसूचना द्वारा कर सकेगी कि उस अनुसूची में से किसी विनिर्दिष्ट कर की दर जोड़ने या लोप करने या अन्यथा परिवर्तन करने के लिए अनुसूचियों को संशोधन करने और तदुपरि, अनुसूची तदनुसार संशोधित समझी जाएगी :

परन्तु यदि राज्य सरकार का समाधान हो गया है कि विद्यमान परिस्थितियां, जिसमें तत्काल कार्रवाई करना आवश्यक है तो वह लिखित में कारणों को अभिलिखित करके पूर्व सूचना की शर्त को अभिमुक्ति देना है।

9. व्यापारावर्त कर की दर.—इस अधिनियम के उपबंधों के अधीन, किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति के विक्रय के कराधेय आवर्त उसी दर पर व्यापारावर्त कर जो एक रुपये में दो पैसे से अधिक न हो जिस राज्य सरकार, राजपत्र में, अधिसूचना द्वारा विनिर्देश करें, उद्ग्रहीत किया जाएगा।

10. कर पूर्णांकित करना.—मूल्य वर्धित कर या व्यापारावर्त कर की रकम पचास पैसे या कम को अनभिज्ञता कर के निकटतम रुपये में संगणित किया जाएगा और पचास पैसे से अधिक को एक रुपये में संगणित करना है।

11. कर के संग्रहण का वर्जन जब संदेय नहीं.—(1) कोई व्यक्ति, जो इस अधिनियम के अधीन रजिस्ट्रीकृत नहीं है या यदि रजिस्ट्रीकृत है तो किसी विक्रय या क्रय के संबंध में कर संदाय का दायी नहीं है। कर के रूप में कोई रकम किसी व्यक्ति से संग्रहण नहीं करेगा,

(2) कोई व्यक्ति, जो इस अधिनियम के अधीन रजिस्ट्रीकृत है, कर के रूप में कोई रकम, इस अधिनियम के अधीन कर उद्ग्रहीत योग्य उस रकम से अधिक संग्रहण नहीं करेगा,

(3) कोई व्यक्ति, जो इस अधिनियम के अधीन रजिस्ट्रीकृत है तो माल के विक्रय के संबंध में कर के रूप में कोई रकम संग्रहण नहीं करेगा, जिसको धारा 16 के अधीन कर मुक्त है,

(4) यदि कोई व्यक्ति, इस अधिनियम के पूर्वगामी उपबंधों के उल्लंघन में कर संग्रहण करता है तो वह ऐसे संग्रहण के ठीक पश्चात् इस प्रकार संग्रहित किए गए कर को सरकारी कोषागार में जमा करने का दायी होगा। ऐसे व्यक्ति के असफल की दशा में, जमा कर को, यथास्थिति, आयुक्त या पदाभिहित अधिकारी इस अधिनियम के उपबंधों के अनुसार ऐसे कर की वसूली लिखित में आदेश द्वारा करेगा।

12. रजिस्ट्रीकृत व्यक्तियों का दायित्व.—(1) धारा 9 के अधीन रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, विनिर्दिष्ट दर पर संगणित का दायित्व होगा।

(2) नियत दिन पर, रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति द्वारा स्टॉक में धारित कराधेय माल का विक्रय, जिसमें निरसित अधिनियम के अधीन कर के संदाय के बिना क्रय किया गया था जो इस अधिनियम के अधीन उन मालों के लिए विनिर्दिष्ट दर पर कर का दायी होगा।

(3) कोई रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, जिसका रजिस्ट्रीकरण धारा 21 के अधीन निरन्तर किया गया है, इस अधिनियम के अधीन कराधेय माल का विवरण नियत दिन से तीस दिन की अवधि के भीतर, नियत दिन पर स्टॉक में धारित है, ऐसे प्ररूप में और ऐसे प्राधिकारी को प्रस्तुत करेगा, जो अधिसूचित किया जाए।

(5) कोई रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, अपने द्वारा बनाए गए विक्रय के लिए किसी फुटकर बीजक केवल जारी करेगा और मूल्य वर्धित कर बीजक जारी करने का पात्र नहीं होगा।

(6) कोई रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, केन्द्रीय विक्रय-कर अधिनियम, 1956 के अधीन रजिस्ट्रीकरण धारण का पात्र नहीं होगा।

13. निवेश कर प्रत्यय.—(1) कोई कराधेय व्यक्ति, निवेश कर प्रत्यय का हकदार होगा, ऐसी रीति में और ऐसी शर्तों के अधीन, जो विहित की जाए, कराधेय माल के संबंध में पूंजी माल सम्मिलित है, कर अवधि के दौरान राज्य के भीतर किसी कराधेय व्यक्ति से उसके द्वारा क्रय किया गया :

परन्तु ऐसा माल उस राज्य में विक्रय करने के लिए है या अंतर्राज्य व्यापार के अनुक्रम में या वाणिज्य या निर्यात के अनुक्रम में या विनिर्माण करना, प्रसंस्करण करने या पैकिंग करने में उपयोग करने के लिए उस राज्य के भीतर विक्रय करना या निर्यात के अनुक्रम में विक्रय के लिए है।

परन्तु यह है कि कराधेय व्यक्ति किसी अन्य दशा में आंशिक निवेश कर प्रत्यय का हकदार इस धारा में यथा उपबंधित ऐसी रीति में होगा और ऐसी शर्तों के अधीन जो विहित की जाए :

परन्तु यह है कि यदि क्रय इस उपधारा के विनिर्दिष्ट प्रयोजन के लिए आंशिक रूप से उपयोग किया गया और कराधेय व्यक्ति ऐसे प्रयोजन के लिए उपयोग किए गए माल की पहचान करने में असमर्थ है तब निवेश कर प्रत्यय ऐसी रीति में, उस सीमा तक के अनुपात में अनुज्ञात किया जाएगा, जो ऐसे प्रयोजनों के लिए उपभोग किया गया।

परन्तु आगे यह है कि धारा 19 के अधीन कराधेय व्यक्ति द्वारा क्रय कर संदत्त या संदेय के संबंध में, निवेश कर प्रत्यय उसमें अधिकथित शर्तों के अधीन अनुज्ञात किया जाएगा।

(2) निवेश कर प्रत्यय जिसकी सीमा राज्य में कर संदत्त की रकम, माल के क्रय पर केवल चार प्रतिशत से अधिक होना अनुज्ञात किया जाएगा।

(क) विक्रय के रूप से भिन्न, उस राज्य के बाहर अन्तर्राज्य व्यापार के अनुक्रम में या वाणिज्य या निर्यात के अनुक्रम में भारत के राज्यक्षेत्र से बाहर भेजा गया; और

(ख) विक्रय के रूप से भिन्न, राज्य के बाहर अन्तर्राज्य व्यापार के अनुक्रम में या वाणिज्य या भारत के राज्यक्षेत्र के बाहर निर्यात के अनुक्रम में कराधेय माल का विनिर्माण करने में या पैकिंग करने के उपयोग में भेजा गया।

(3) जहां कोई कराधेय व्यक्ति फुटकर काम के आधार पर और प्रसंस्करण करने के लिए आंशिक रूप से प्रसंस्कृत या पश्चात् ऐसे रूप में कोई माल भेजता है तो वहां पर ऐसे माल के मूल्य के चार प्रतिशत से निवेश कर प्रत्यय का विकलन करेगा। यदि ऐसा माल प्रसंस्करण करने के पश्चात् ऐसे व्यक्ति द्वारा वापिस प्राप्त किया गया है तो प्रेषण करने के समय पर विकलित निवेश कर प्रत्यय पुनः स्थापित करेगा। ऐसा व्यक्ति, तथापि, जब भी मांगने पर ऐसे माल को प्राप्त करने के साक्ष्य के अभिलेख चालान या मिमो या कोई अन्य दस्तावेज के आकार में समुचित साक्ष्य प्रस्तुत करने को अपेक्षित करेगा।

(4) मिट्टी तेल, ट्रान्सफार्मर तेल, खनिज तारपीन तेल, मिश्रित जल मैथेनल, नैफ्था और स्नेहक तेल पर निवेश कर प्रत्यय, की सीमा तक केवल अनुज्ञात किया जाएगा, जिसमें कर संदत्त की रकम, उस राज्य में चार प्रतिशत से अधिक है।

परन्तु इन मालों को कराधेय माल का उत्पादन में या शक्ति के बन्दीत उत्पादन का उपयोग किया गया है।

(5) इस धारा के अधीन कोई कराधेय व्यक्ति क्रय पर कर संदत्त के संबंध निवेश कर प्रत्यय के लिए अर्हित नहीं किया जाएगा,—

(क) मोटर गाडियां जिसके अंतर्गत वाणिज्य वाहन, दो पहिया, तीन पहिया और स्पेयर-पार्ट्स की भण्डार और उनके अनुरक्षण के लिए, जब तक कराधेय व्यक्ति ऐसी मोटर गाडियों या स्पेयर पार्ट्स के व्यवहार के कारबार करने में नहीं है ;

(ख) पेट्रोल, डीजल, विमानन टरबाइन फ्यूल, लिक्विड पेट्रोलियम गैस और संघनित प्राकृतिक गैस, जब तक कराधेय व्यक्ति ऐसे उत्पादों को विक्रय करने के कारबार में नहीं है ;

(ग) सिविल संरचना और अचल माल या संपत्तियां ;

(घ) कार्यालय उपस्कर और भवन सामग्री, जब तक कराधेय व्यक्ति ऐसे माल के कारबार के व्यवहार करने में नहीं है ;

(ङ) फर्नीचर फिक्सचर, जिसके अंतर्गत विद्युत फिक्सचर और फिटिंग है, जब तक कराधेय व्यक्ति ऐसे माल के कारबार में नहीं है ;

- (च) वातानुकूलित ईकाई, एयर सर्कुलेटर और रफ्रिजरेटर ईकाई, जब तक कराधेय व्यक्ति ऐसे माल या विक्रय के लिए या कराधेय माल का स्टोरेज या कराधेय माल का विनिर्माण प्रसंस्करण में जहां वातानुकूलित, एयर सर्कुलेटिंग या रफ्रिजरेटर आवश्यक है वहां कारबार में नहीं है ;
- (छ) तुला चौकी, जब विनिर्माण परिसरों में स्थापित के सिवाय, कराधेय माल का विनिर्माण प्रसंस्करण करने में उपयोग के लिए ;
- (ज) अनुसूची (क) में विनिर्दिष्ट माल का विनिर्माण करना, प्रसंस्करण करना या पैकिंग करने में उपयोग किया गया माल ;
- (झ) विद्युत ऊर्जा के उत्पादन, वितरण और पारेषण में उपयोग किया गया माल, जब तक विद्युत ऊर्जा के ऐसे उत्पादन, वितरण और पारेषण का बन्दीत उपभोग करने के लिए नहीं है, उस दशा में, इस धारा की उपधारा (4) के उपबंधों के अधीन अनुज्ञात किया जा सकेगा ;
- (ञ) खाद्य, पेय और तम्बाकू उत्पादों के उपबंध, जब तक कराधेय व्यक्ति खाद्य, पेय और तम्बाकू उत्पादों के विक्रय करने के कारबार में नहीं है, और
- (ट) माल व्यक्तिगत उपभोग और दान के लिए उपयोग किया गया है।

(6) कोई व्यक्ति, जो मूल्य वर्धित कर के लिए पूर्वतर में रजिस्ट्रीकृत था और व्यापारावर्त कर के लिए उसने स्वयं ने पश्चात्पूर्ती रजिस्ट्रीकृत प्राप्त कर लिया है उस दिन को, उसके द्वारा धारित स्टॉक पर, विकल्प के ऐसे परिवर्तन के पूर्व उसके द्वारा प्राप्त निवेश कर प्रत्यय को उलटना होगा जब वह किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति के रूप में रजिस्ट्रीकृत था।

(7) कोई व्यक्ति, जो व्यापारावर्त कर के लिए पूर्वतर में रजिस्ट्रीकृत था और मूल्य वर्धित कर के लिए उसने स्वयं पश्चात्पूर्ती रजिस्ट्रीकृत प्राप्त कर लिया है। जो उस दिन, उसके द्वारा धारित किए गए माल स्टॉक पर, निवेश कर प्रत्यय का हकदार नहीं होगा, जब वह कराधेय व्यक्ति के रूप में रजिस्ट्रीकृत हो गया है और ऐसे स्टॉक पर व्यापारावर्त कर के संदत्त करने का दायी होगा, यदि ऐसी तारीख से तीस दिन की अवधि के भीतर विक्रित किया गया है।

(8) किसी व्यक्ति, जो माल भारत के बाहर निर्यात करता है और धारा 18 के उपधारा (2) के अधीन निवेश कर को वापिस करने का दावा किया है, जो, यदि कोई है, ऐसे माल पर उसके द्वारा लिए गए उस निवेश कर प्रत्यय को उलटना होगा।

(9) कोई व्यक्ति, माल पर उसके द्वारा लिए गए निवेश कर प्रत्यय को उलटेंगा, जिसमें इस धारा की उपधारा (1) में विनिर्दिष्ट या जिसमें कारबार के बन्द करने के समय पर स्टॉक में शेष प्रयोजनों के लिए उपयोग में नहीं कर सकेगा।

(10) जहां कराधेय व्यक्ति विक्रय करने के लिए बीजक बहियों पर विकलन या प्रत्यय नोट जारी करके विक्रय के संबंध में कोई उपांतरण किया हो, तो क्रय करने वाला कराधेय व्यक्ति द्वारा लिए गए निवेश कर प्रत्यय का आवश्यक समायोजन करेगा।

(11) निवेश कर प्रत्यय अंतरणीय होगा, सिवाय जहां किसी व्यक्ति के कारबार का स्वामित्व पूर्ण रूप से अंतरित कर दिया जाता है।

(12) जो अन्यथा उपबंधित के सिवाय इसमें इसके पश्चात् निवेश कर प्रत्यय मूल मूल्य वर्धित कर बीजक क विरुद्ध अनुज्ञात किया जाएगा और उस अवधि के दौरान जिसमें ऐसा बीजक प्राप्त किया गया है, दावा किया जाएगा।

(13) मूल मूल्य वर्धित कर बीजक खोने या विकृत की दशा में, पदाभिहित अधिकारी, विहित रीति में उस प्रत्यय का विनिश्चय करने के पश्चात् निवेश कर प्रत्यय उपलब्ध कराएगा।

(14) यदि संपरीक्षा पर या प्रति सत्यापन या अन्यथा वह प्राप्त किया है कि कोई कराधेय व्यक्ति निवेश कर प्रत्यय का झूठा दावा करता है तो यथास्थिति, आयुक्त या पदाभिहित अधिकारी को इस अधिनियम में उपबंधित कोई कार्रवाई या शास्ति के प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना ऐसे निवेश कर प्रत्यय का संपूर्ण या किसी भाग की वसूली के लिए आदेश करेगा।

(15) साबित करने का भार है कि जिसके आधार पर मूल्य वर्धित कर बीजक, निवेश कर प्रत्यय का दावा किया जाता है, दावेदार पर होगा, सद्भावना और किसी कराधेय व्यक्ति द्वारा जारी किया है।

14. नियत दिन पर स्टॉक धारित के संबंध में निवेश कर प्रत्यय—(1) कोई कराधेय व्यक्ति, जो निरसित अधिनियम के अधीन रजिस्ट्रीकृत था और जिसका धारा 21 के अधीन रजिस्ट्रीकरण किया गया है। निरसित अधिनियम के अधीन माल पर, पूंजी माल भिन्न, नियत दिन पर उसके स्टॉक में रखा है, ऐसी सीमा तक और ऐसी रीति में और ऐसी शर्तों के अधीन, जो विहित की जाए कर संदत्त या संदेय के संबंध में निवेश कर प्रत्यय के हकदार होंगे। तथापि, वह पूंजी माल पर निवेश कर प्रत्यय का पात्र होगा, यदि वह ऐसे माल के पुनः विक्रय के कारबार में है:

परन्तु ऐसा स्टॉक नियत दिन के पूर्व बारह माह के भीतर क्रय से किया गया हो।

(2) कराधेय व्यक्ति, जो उपधारा (1) के अधीन निवेश कर प्रत्यय का दावा करने का आशयित है तो नियत दिन से तीस दिन के भीतर, पदाभिहित अधिकारी को, स्टॉक में धारित कर संदत्त माल का विवरण, विनिर्दिष्ट प्ररूप में प्रस्तुत करेगा।

(3) निवेश कर प्रत्यय, नियत दिन पर स्टॉक में धारित माल पर उपलब्ध नहीं होगा, जिसके संबंध निरसित अधिनियम और नियमों के अधीन ऐसे व्यक्ति द्वारा सकल आवर्त से कटौती से दावा किया गया था।

(4) स्टॉक पर निवेश कर प्रत्यय, नियत दिन पर धारित, कर की दर के आधार पर अनुज्ञात किया जाएगा, जो नियत दिन या ऐसे माल के क्रय के दिन पर, निरसित अधिनियम के अधीन या कर की दर के पूर्ववर्ती दिन पर विद्यमान, जो भी निम्नतर हो, इस अधिनियम के अधीन उद्गृहीत है।

(5) इस धारा के अधीन उपलब्ध निवेश कर प्रत्यय, नियत दिन से तीन मास के पश्चात् एक वर्ष के आरंभ की अवधि पर समान किस्तों में अनुपातिक रूप से समायोजित किया जाएगा।

(6) इस धारा के अधीन कोई निवेश कर प्रत्यय स्टॉक में धारित माल के संबंध में अनुज्ञात किया जाएगा—

(क) जिसमें उपधारा (2) के अधीन विनिर्दिष्ट कराधेय के विवरणों में सम्मिलित नहीं है; और

(ख) जिसमें वह व्यक्ति, अपने कब्जे में विक्रय के बाउचर नहीं रखता है जो निरसित अधिनियम के अधीन रजिस्ट्रीकृत किसी व्यक्ति द्वारा जारी किया गया है, उक्त माल के क्रय के विरुद्ध या जिसका लेखाओं की अपने बहियों में अभिलेख नहीं है।

(7) साबित करने का भार है कि निवेश कर प्रत्यय के दावेदार पर होगा कि, निरसित अधिनियम के अधीन नियत दिन पर स्टॉक के धारित कराधेय माल कर मुक्त हो गया है।

(8) इस धारा में जो अन्यथा उपबंधित के सिवाय धारा 13 के उपबंध, इस धारा के अधीन यथा आवश्यक परिवर्तनों सहित दावाकृत निवेश कर प्रत्यय को लागू होंगे।

(15) किसी कराधेय व्यक्ति द्वारा संदेय शुद्ध कर— (1) इस अधिनियम के उपबंध के अधीन रहते हुए किसी कर अवधि के लिए किसी कराधेय व्यक्ति द्वारा संदेय सकल कर उसको उपलब्ध निवेश कर जमा की रकम, कर अवधि के दौरान उसके द्वारा संदेय उत्पाद कर से (जिसके अंतर्गत पूर्ववर्ती कर अवधि, यदि कोई हो, से अग्रित निवेश कर जमा भी है) घटाकर अवधारित की जाएगी।

(2) यदि निवेश कर प्रत्यय की रकम उत्पादन कर रकम से अधिक है तो उसे केन्द्रीय विक्रय-कर अधिनियम, 1956 के अधीन उक्त अवधि के लिए कर दायित्व, यदि कोई हो, के प्रति कराधेय व्यक्ति विकल्प पर समायोजित किया जाएगा और केन्द्रीय विक्रय कर की शेष रकम ही संदेय होगी।

(3) उपधारा (2) के अधीन समायोजन के पश्चात् निवेश कर प्रत्यय की अतिरिक्त रकम, यदि कोई हो, यथास्थिति, इस अधिनियम के अधीन या केन्द्रीय बिक्री-की अधिनियम, 1956 के अधीन किसी बकाया कर, शास्ति या ब्याज के प्रति समायोजित की जाएगी।

(4) उपधारा (1) और (2) के अधीन समायोजन के पश्चात् निवेश कर प्रत्यय की अतिरिक्त रकम, यदि कोई हो, पश्चात्वर्ती कर अवधि को अग्रित की जा सकेगी और कराधेय व्यक्ति के विकल्प पर, विहित रीति में आवेदन किए जाने पर इस अधिनियम के उपबंधों के अनुसार प्रतिदाय किया जाएगा।

(5) किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा जो कर का संदाय करने का दायी है किन्तु जो इस अधिनियम के अधीन रजिस्ट्रीकृत नहीं है, कर अवधि के लिए संदेय शुद्ध कर इस अधिनियम के उपबंधों के अनुसार, उक्त अवधि के लिए संदेय उत्पादन कर के बराबर होगा और निवेश कर प्रत्यय के लिए ग्राह्य होगा।

16. कर मुक्त माल-अनुसूची 'क' में विनिर्दिष्ट माल के विक्रय, कोई कर संदेय नहीं होगा और कोई व्यक्ति जिसके अंतर्गत कोई कराधेय व्यक्ति या रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति है ऐसे माल के विक्रय पर कर प्रभारित नहीं करेगा जिसे इस धारा के अधीन कर मुक्त माल घोषित किया गया है।

17. शून्य दर विक्रय- जहां कोई कराधेय माल भारत के राज्य क्षेत्र से बाहर निर्यात किए जाते हैं या केन्द्रीय विक्रय कर अधिनियम, 1956 की धारा 5 के परिधि के अंतर्गत आने वाले ऐसे निर्यात के अनुक्रम में प्रदाय किए जाते हैं वहां ऐसे विक्रय शून्य दर पर होंगे। ऐसे विक्रय पर कोई आउटपुट कर किसी व्यक्ति द्वारा संदेय नहीं है। :

परन्तु शून्य दर विक्रय करने वाला कोई कराधेय व्यक्ति ऐसे विक्रयों के संबंध में निवेश कर प्रत्यय के लिए पात्र होगा।

18. कृतिप्रय प्रवर्गों के लिए कर का प्रतिदाय-(1) अनुसूची-छ में सूचीबद्ध व्यक्ति या संगठन ऐसी शर्तों, जो विहित की जाए, के अधीन रहते हुए समुचित आवेदन करने पर कर रकम को अपवर्जित करते हुए 5000 रुपये से अधिक प्रत्येक एकल क्रय पर राज्य में क्रय किए गए माल के लिए संदेय कर प्रतिदाय का दावा करने के हकदार होंगे।

(2) कराधेय व्यक्ति ऐसे शर्तों और रीति के अधीन रहते हुए जो विहित की जाए भारत के राज्य क्षेत्र में से, बाहर निर्यात किए गए माल पर संदेय निवेश कर के संबंध में प्रतिदाय का दावा करने के लिए हकदार होगा।

अध्याय 3

क्रय कर का उद्ग्रहण

19. कतिपय माल पर क्रय कर का उद्ग्रहण— (1) इस अधिनियम में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी अनुसूची 'ज' में विनिर्दिष्ट माल के क्रय का कराधेय आवर्त पर मूल्य वर्धित कर अनुसूचियों के अनुसार ऐसे माल को लागू दर पर उद्ग्रहित किया जाएगा।

(2) राज्य के भीतर ही इन मालों के प्रथम क्रयों पर उद्ग्रहणीय होगा। तथापि दुग्ध की दशा में प्रथम क्रय, जब क्रय कराधेय माल के किसी विनिर्माता द्वारा किया जाता है तो प्रथम होगा।

परन्तु ऐसे माल के पश्चात्तर्वी विक्रयों पर, विक्रय मूल्य वर्धित कर इस अधिनियम के उपबंधों के अनुसार उद्ग्रहणीय होगा।

(3) इस अधिनियम के उपबंधों के अधीन रहते हुए, अनुसूची 'ज' में विनिर्दिष्ट माल के क्रेता को मूल्य वर्धित कर के लिए रजिस्ट्रीकृत होना पड़ेगा।

(4) किसी कराधेय व्यक्ति द्वारा संदत्त क्रय कर निवेश कर प्रत्यय के रूप में तब तक ग्राह्य नहीं होगा, जब तक राज्य के भीतर माल का विक्रय न किया गया हो या विक्रय के लिए राज्य में कराधेय माल के विक्रेता के लिए उपयोग न किया गया हो या अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार या वाणिज्य के अनुक्रम में या निर्यात के अनुक्रम में विक्रीत न किया हो।

(5) उपधारा (1) के अधीन कर के लिए दायी माल पर, जब वह अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार या वाणिज्य के क्रम में विक्रय किया जाता है तब निवेश पर जमा केन्द्रीय विक्रय-कर अधिनियम, 1956 के अधीन प्रभावी केन्द्रीय विक्रय कर की सीमा तक की उपलब्ध होगा।

20. कतिपय परिस्थितियों में माल के विक्रय के आवर्त पर कर का उद्ग्रहण— (1) जहां कोई कराधेय व्यक्ति, किसी कराधेय व्यक्ति या किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति के भिन्न किसी व्यक्ति से कराधेय माल क्रय करता है और—

(क) माल के विनिर्माण में ऐसे माल का उपयोग करता है जिसे धारा 16 के अधीन कर मुक्त घोषित किया गया है; या

(ख) किसी माल के विनिर्माण में अनुसूची 'क' में विनिर्दिष्ट माल से भिन्न ऐसे माल को उपयोग करता है और अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार या वाणिज्य या भारत से निर्यातों के अनुक्रम में विक्रय के रूप से अन्यथा भिन्न राज्य से बाहर इस प्रकार विनिर्मित माल को भेजता है; या

(ग) राज्य में विक्रय के रूप में भिन्न किसी रीति में ऐसे माल का निपटान करता है; या

(घ) अन्तर्राष्ट्रीय विक्रय व्यापार या वाणिज्य या भारत से बाहर निर्यात के अनुक्रम में विक्रय के परिणामस्वरूप से भिन्न अन्यथा राज्य के बाहर किसी स्थान को उन्हें प्रेषित करता है,

वहां अनुसूचियों के अनुसार ऐसे माल को लागू दर पर ऐसे माल के क्रयों की कराधेय आवर्त कर उद्ग्रहित किया जाएगा :

परन्तु इस धारा के अधीन कोई कर उद्ग्रहित नहीं किया जाएगा यदि धारा 19 के अधीन ऐसे माल पर किसी कर का पहले ही संदाय कर दिया गया है।

(2) जहां कोई रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति किसी कराधेय व्यक्ति या किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति से भिन्न किसी व्यक्ति से कराधेय माल क्रय करता है और किसी भी रीति में ऐसे माल का निपटान करता है वहां अनुसूची (अनुसूचियों) में विनिर्दिष्ट दर (दरों) पर ऐसे क्रयों के आवर्त पर कर उद्ग्रहित किया जाएगा।

अध्याय 4

रजिस्ट्रीकरण

21. रजिस्टर के लिए दायी व्यक्ति.— (1) कारण व्यापारी के अलावा कोई व्यक्ति जो इस अधिनियम के अधीन कर अदा करने के लिए दायी है, व्यवसाय जारी रख सकेगा जब तक कि वह इस अधिनियम के अधीन रजिस्ट्रीकृत नहीं हो जाता है।

(2) उपधारा (1) के अधीन प्रत्येक व्यक्ति से रजिस्ट्रीकृत होने के लिए, उस तारीख से तीस दिन के भीतर जब वह व्यक्ति इस अधिनियम के अधीन पदाभिहित अधिकारी को विहित रीति में कर संदत्त करने का दायी हो गया हो, रजिस्ट्रीकरण के लिए आवेदन कर सकेगा।

(3) यदि पदाभिहित अधिकारी का यह समाधान हो जाता है कि रजिस्ट्रीकरण के लिए आवेदन के अनुसार क्रम में है, वह ऐसी रीति और ऐसे फीस के संदाय करने पर जो विहित की जाए आवेदक को रजिस्टर करेगा और उसे विहित प्ररूप में रजिस्ट्रीकरण प्रमाण-पत्र प्रदान करेगा:

परन्तु यदि पदाभिहित अधिकारी को यह समाधान हो जाता है कि आवेदन में अंतर्विष्ट विशिष्टियां सही नहीं हैं या अपूर्ण हैं या आवेदक को रजिस्ट्रीकृत करने के लिए अपेक्षित कोई साक्ष्य या सूचना प्रस्तुत नहीं की जाती है, वह आवश्यक जांच करने के पश्चात् और आवेदक को सुनवाई का अवसर दिए जाने के पश्चात् ऐसे कारणों से जो लेखबद्ध किए जाए आवेदन को नामंजूर कर सकेगा।

तथापि, आवेदक इस अधिनियम के उपबंधों के अनुसार रजिस्ट्रीकरण के लिए नया आवेदन प्रस्तुत कर सकेगा:

परन्तु यह और कि रजिस्ट्रीकरण के लिए किसी आवेदन के लंबित रहने के दौरान वह विहित रीति में विवरणी फाइल करेगा और कर की शोध रकम का संदाय करेगा।

(4) जहां किसी व्यक्ति ने उपधारा (1) के उपबंधों का उल्लंघन किया है वहां पदाभिहित अधिकारी, यथास्थिति, धारा 52 या धारा 60 के अधीन कार्यवाही के अधीन ऐसे व्यक्ति को रजिस्टर करेगा और रजिस्ट्रीकरण प्रदान करेगा और ऐसा रजिस्ट्रीकरण ऐसे प्रभावी होगा मानों वह व्यक्ति द्वारा किए गए आवेदन पर प्रदान किया गया हो।

(5) जब कोई व्यक्ति, जो इस निरसित अधिनियम के अधीन ऐसे नियम दिन से पूर्व रजिस्ट्रीकृत किया गया था, और ऐसे नियत दिन के पूर्व, उस दिन को इस प्रकार रजिस्ट्रीकृत बना रहता है और ऐसे नियत दिन पर इस अधिनियम के अधीन कर संदत्त का दायी है, तब पदाभिहित अधिकारी को विधि प्ररूप में आवेदन की प्राप्ति के तीस दिन के भीतर, यथास्थिति, ऐसे व्यक्ति को विहित रीति में, मूल्य वर्धित कर या व्यापारावर्त कर के लिए इस अधिनियम के अधीन नया रजिस्ट्रीकरण जारी करता है।

(6) कर दाताओं की पहचान के प्रयोजन के लिए आयुक्त या पदाभिहित अधिकारी प्रत्येक कराधेय व्यक्ति को मूल्य वर्धित कर रजिस्ट्रीकरण संख्या (जिसे इसमें इसके पश्चात् लघु रूप में वीआरएन कहा गया है) और प्रत्येक रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति को टीओटी रजिस्ट्रीकरण संख्या (जिसे इसमें इसके पश्चात् टीआरएन कहा गया है) जारी करेगा।

(7) प्रत्येक कराधेय व्यक्ति या कोई रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति जिसे रजिस्ट्रीकरण संख्या आबंटित की गई है, इस अधिनियम के प्रयोजनों के लिए प्रयुक्त होने वाले सभी विवरणियों, प्ररूपों या किन्हीं अन्य दस्तावेजों में अपना वीआरएन या टीआरएन यथास्थिति, उल्लिखित करेगा।

(8) प्रत्येक व्यक्ति जो कर संदाय के दायित्वाधीन है और जो हिन्दू अविभक्त कुटुम्ब या व्यक्तियों का कोई संगम, क्लब या सोसायटी या फर्म या कंपनी है या जो कारबार में संरक्षक या न्यासी है या अन्यथा किसी व्यक्ति की ओर से कार्य करने में लगा हुआ है, पदाभिहित अधिकारी के समक्ष उस व्यक्ति या व्यक्तियों जो इस अधिनियम के प्रयोजनों के लिए ऐसे व्यक्तियों के कारबार के प्रबंधक समझे जाएंगे, के नाम कथित करते हुए घोषणा करेगा।

(9) धारा 77 में अन्यथा उपबंधित के सिवाय, इस अधिनियम के अधीन दिया गया रजिस्ट्रीकरण, उस व्यक्ति के लिए जिसे यह दिया गया है, व्यक्तिगत होगा और अंतरणीय नहीं होगा।

22. मूल्य वर्धित कर के लिए स्वेच्छया रजिस्ट्रीकरण- (1) धारा 6 की उपधारा (3) के उपबंधों के अधीन कोई व्यक्ति सिवाय उसके जो धारा 16 के अधीन कर मुक्त घोषित माल में अनन्य रूप से व्यौहार कर रहा है, इस धारा के अधीन विहित रीति से रजिस्ट्रीकरण के लिए पदाभिहित अधिकारी को आवेदन कर सकेगा।

(2) धारा 21 की उपधारा (2), उपधारा (3) और उपधारा (5) के उपबंध इस धारा के अधीन रजिस्ट्रीकरण के आवेदनों के संबंध में लागू होंगे।

(3) प्रत्येक व्यक्ति, जिसे इस धारा के अधीन आवेदन पर रजिस्ट्रीकृत किया गया है, जब तक उसका रजिस्ट्रीकरण प्रभावी रहता है इस अधिनियम के अधीन कर संदाय के लिए दायित्वाधीन होगा चाहे उसका सकल आवर्त कराधेय मात्रा से अधिक है या नहीं।

23. रजिस्ट्रीकरण का संशोधन - पदाभिहित अधिकारी समय-समय पर लिखित आदेश द्वारा, धारा 76 के अधीन दी गई सूचना पर रजिस्ट्रीकरण का संशोधन कर सकेगा।

24. रजिस्ट्रीकरण का रद्दकरण.—(1) पदाभिहित अधिकारी, उसको दिए गए आवेदन पर या अन्यथा, एक लिखित आदेश, द्वारा रजिस्ट्रीकरण रद्द कर सकेगा—

- (क) कोई सूचना प्राप्त होने पर कि कारबार जिसके संबंध में धारा 21 की उपधारा (3) के अधीन रजिस्ट्रीकरण दिया गया है, को बंद कर दिया है; या
- (ख) कोई सूचना प्राप्त होने पर कि व्यक्ति ने इस अधिनियम के उपबंधों या तद्धीन बनाए गए नियमों का उल्लंघन किया है; या
- (ग) इस अधिनियम के अधीन विवरणी के दाखिल न करने पर या शोध कर के संदाय न करने पर; या
- (घ) कोई अन्य पर्याप्त कारण पर, जिसके अंतर्गत इस अधिनियम के अधीन रजिस्ट्रीकरण का दुरुपयोग या कर संदाय के दायित्व की परिवर्तित सम्मिलित है; या
- (ङ) केन्द्रीय बिक्री-कर अधिनियम, 1956 के अधीन कोई व्यक्ति जो धारा 7 के उपबंधों के आधार पर कर संदाय का दायित्वाधीन है किन्तु जो धारा 6 के अधीन कर संदाय के लिए अन्यथा दायित्वाधीन नहीं है को दिया गया रजिस्ट्रीकरण रद्द कर दिया गया है।

(2) जहां इस धारा के अधीन संबंधित व्यक्ति के आवेदन के बिना रजिस्ट्रीकरण रद्द किया गया है, वहां पदाभिहित अधिकारी द्वारा ऐसे रद्दकरण का कोई आदेश, सुने जाने का अवसर दिए बिना पारित नहीं किया जाएगा।

25. व्यक्तियों के कतिपय वर्गों से प्रतिभूति.—(1) इस अधिनियम के अधीन रजिस्ट्रीकरण के लिए आवेदन करने वाला प्रत्येक व्यक्ति यथोचित और यथासमय कर संदाय के लिए पचास हजार रुपए या इस अधिनियम के अधीन संदेय कोई अन्य रकम विहित रीति में देगा।

परन्तु यह कि निरसित अधिनियम के अधीन रजिस्ट्रीकृत किसी व्यक्ति द्वारा पहले से ही दी गई प्रतिभूति इस अधिनियम के अधीन दी गई समझी जाएगी।

(2) रजिस्ट्रीकरण देने वाला पदाभिहित अधिकारी किसी व्यक्ति द्वारा प्रतिभूति की निर्मुक्ति, उन्मोचन या प्रतिदाय के लिए दिए गए आवेदन पर उसके द्वारा दी गई सम्पूर्ण प्रतिभूति या उसके किसी भाग की निर्मुक्ति, उन्मोचन या प्रतिदाय का आदेश कर सकेगा, यदि उक्त उपेक्षित नहीं है।

स्पष्टीकरण— पदाभिहित अधिकारी के लिए रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति या कराधेय व्यक्ति की ओर से किसी व्यक्ति द्वारा दी गई प्रतिभूति या प्रतिभू का प्रतिधारण अपेक्षित नहीं होगा यदि इस अधिनियम के अधीन ऐसे व्यक्ति का रजिस्ट्रीकरण रद्द कर दिया गया है और ऐसे व्यक्ति के विरुद्ध कुछ भी शोध नहीं है।

(3) जहां रजिस्ट्रीकरण देने के लिए पदाभिहित अधिकारी को इस अधिनियम के अधीन संदेय कर की समुचित वसूली के लिए यह समीचीन प्रतीत होता है तो वह, ऐसे किसी समय पर जब ऐसा प्रमाणपत्र प्रभावी है, एक लिखित आदेश द्वारा उसके कारणों को अभिलिखित करते हुए ऐसे व्यक्ति को जिसे रजिस्ट्रीकरण दिया गया है, से ऐसे समय के भीतर जैसा आदेश में विनिर्दिष्ट किया गया हो और विहित रीति में पूर्वोक्त प्रयोजन के लिए आदेश में यथा विनिर्दिष्ट ऐसी अतिरिक्त प्रतिभूति जो, उपधारा (1) के अधीन दी गई प्रतिभूति के अतिरिक्त है दो लाख रुपए से अधिक न होगी, देने की अपेक्षा कर सकेगा।

परन्तु यह कि किसी व्यक्ति से इस उपधारा के अधीन कोई अतिरिक्त प्रतिभूति देने की अपेक्षा तब तक नहीं की जाएगी, जब तक उसे सुने जाने का अवसर न दिया गया हो।

(4) रजिस्ट्रीकरण देने वाला पदाभिहित अधिकारी अच्छे और पर्याप्त कारण के लिए, लिखित आदेश द्वारा, व्यक्ति द्वारा दी गई सम्पूर्ण या प्रतिभूति के किसी भाग या अतिरिक्त प्रतिभूति को, व्यक्ति द्वारा संदेय या शोध कर या जुर्माने की किसी रकम की वसूली के लिए समहत या वसूल कर सकेगा :

परन्तु यह कि इस उपधारा के अधीन संबंधित व्यक्ति को सुने जाने का अवसर दिए बिना कोई आदेश पारित नहीं होगा।

(5) ऐसी दशा में जब उपधारा (4) के अधीन दिए गए आदेश के कारण प्रतिभूति अपर्याप्त हो गई हो, संबंधित व्यक्ति ऐसी रीति और ऐसे समय के भीतर जो विनिर्दिष्ट किया जाए, कम पड़ गई रकम को पूरा करने के लिए और प्रतिभूति देगा।

अध्याय 5

कर की प्रक्रिया और प्रशासन

26. विवरणियाँ.—(1) प्रत्येक कराधेय व्यक्ति कर का स्वनिर्धारण करेगा और किसी अवधि के लिए ऐसे समय के भीतर और ऐसे प्ररूप में जैसा विहित किया जाए विवरणी दाखिल करेगा।

(2) प्रत्येक कराधेय व्यक्ति कर का स्वनिर्धारण करेगा और किसी अवधि के लिए, ऐसे समय के भीतर और ऐसे प्ररूप में जो विहित किया जाए, विवरणी दाखिल करेगा।

(3) प्रत्येक व्यक्ति, ऐसी रीति में जो विहित की जाए सरकारी खजाने या सरकारी कारबार के संव्यवहार के लिए प्राधिकृत किसी बैंक या जिला उत्पाद शुल्क और कराधान कार्यालय में इस अधिनियम के उपबंधों के अधीन शोध कर की पूरी रकम का संदाय करेगा और विवरणी के साथ यथास्थिति, ऐसे खजाने या बैंक या जिला उत्पाद शुल्क और कराधान कार्यालय को, ऐसी रकम का संदाय दिखाते हुए रसीद देगा:

परन्तु यह कि जिला उत्पाद शुल्क और कराधान कार्यालय, पदाभिहित अधिकारी को बैंक ड्राफ्ट या स्थानीय अधिसूचित बैंक का क्रॉस-चेक के माध्यम के सिवाय किसी रकम का संदाय स्वीकार नहीं करेगा।

(4) यदि उपधारा (1) और उपधारा (2) में निर्दिष्ट किसी व्यक्ति को उसके द्वारा दी गई किसी विवरणी में सद्भावनापूर्ण त्रुटि या लोप का पता चलता है, तो वह ऐसी त्रुटि या लोप का पता चलने के तुरन्त पश्चात् शोध विवरणी में ऐसी त्रुटि या लोप का परिशोधन कर सकेगा।

यदि ऐसे परिशोधन के परिणामस्वरूप मूल विवरणी से अधिक कर की रकम शोध हो तो वह अतिरिक्त कर की रकम के संदाय की रसीद के साथ उपधारा (3) में विहित रीति से देरी की अवधि के लिए इस अधिनियम के अधीन विनिर्दिष्ट ब्याज दर पर ब्याज का संदाय करेगा। तथापि, ऐसा कोई परिशोधन, संबंधित वर्ष या अंकेक्षण के लिए जारी सूचना या निर्धारण, जो भी पहले हो, के तुरन्त पश्चात् आने वाले वित्तीय वर्ष की समाप्ति के पश्चात् अनुज्ञात नहीं किया जाएगा। जहां ऐसे परिशोधन के परिणामस्वरूप शोध कर से अधिक रकम का संदाय कर दिया गया है, वहां ऐसा अधिक कर, इस अधिनियम के उपबंधों और तद्धीन बनाए गए नियमों के अनुसार आवेदन करने पर प्रतिदेय होगा। तथापि, ऐसे अधिक संदाय के लिए कोई समायोजन अनुज्ञात नहीं किया जाएगा।

(5) आयुक्त या पदाभिहित अधिकारी कारधेय व्यक्ति या रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति से उपधारा (1) और (2) के अधीन विवरणी के साथ या किसी अन्य समय पर ऐसी और सूचना जैसा आवश्यक हो, की अपेक्षा कर सकेगा।

(6) इस धारा में किसी बात के अंतर्विष्ट होते हुए भी, यथास्थिति, आयुक्त या पदाभिहित अधिकारी सूचना द्वारा, कारधेय व्यक्ति या रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति से भिन्न किसी व्यक्ति को यथाअपेक्षित ऐसे अन्तराल और ऐसे प्ररूप और ऐसी सूचना अंतर्विष्ट करते हुए विवरणी फाइल करने का निदेश दे सकेगा।

(7) यथास्थिति, प्रत्येक कारधेय व्यक्ति या रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति यथा विहित ऐसे प्ररूप और ऐसी रीति से वार्षिक विवरण दाखिल करेगा।

(8) ऐसा कारधेय व्यक्ति या रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति जिसका रजिस्ट्रीकरण धारा 24 के अधीन रद्द कर दिया गया है, यथास्थिति, आयुक्त या पदाभिहित अधिकारी द्वारा किए गए रद्दकरण की तारीख से तीस दिन के भीतर यथाविहित अंतिम विवरणी दाखिल करेगा।

27. संकर्म ठेकेदार को संदेय रकम से कर की कटौती :—(1) इस अधिनियम के किन्हीं उपबंधों में अंतर्विष्ट होते हुए भी, प्रत्येक कान्ट्रैक्टी जो किसी व्यक्ति (जिसे इस धारा में इसके पश्चात् ठेकेदार कहा गया है) को संकर्म संविदा के अनुसरण में माल के संपत्ति अंतरण (माल या किसी अन्य रूप में) के लिए एकल संविदा संदेय के रूप में पांच लाख से अधिक मूल्यवान प्रतिफल के कारण किसी दायित्व के उन्मोचन के लिए संदाय करने के लिए उत्तरदायी है, ठेकेदार को रोकड़ या किसी अन्य रीति से, ऐसा संदाय करते समय ऐसी संविदा के कारण इस अधिनियम के अधीन संदेय कर के प्रति ऐसी राशि का दो प्रतिशत के बराबर रकम की कटौती करेगा :

परन्तु यह कि कोई व्यक्ति या हिन्दू अविभक्त कुटुम्ब जो इस अधिनियम के अधीन रजिस्ट्रीकृत नहीं है, ऐसे कर की कटौती के लिए दायित्वाधीन नहीं होगा।

(2) प्रत्येक ठेकेदार, जो कोई संदाय करने या किसी उप-ठेकेदार को किसी दायित्व का उन्मोचन करने का उत्तरदायी है या उप-ठेकेदार के साथ माल संपत्ति अंतरण (माल या किसी अन्य रूप में) के निष्पादन के लिए ठेकेदार द्वारा वचनबद्ध कार्य के लिए पूर्णतः या भागतः अंतर्ग्रस्त है, रोकड़ में या चेक या ड्राफ्ट द्वारा या किसी अन्य रीति में संदाय या उन्मोचन करते समय, ऐसे संदाय या उन्मोचन के दो प्रतिशत के बराबर रकम की कटौती करेगा, जो उप-ठेकेदार द्वारा दिए गए बिल या बीजक से, ठेकेदार द्वारा संदेय ऐसे अंतरण इस अधिनियम के अधीन कर के भाग के रूप में तात्पर्यित है।

(3) प्रत्येक व्यक्ति, उपधारा (1) या उपधारा (2) के अधीन यथास्थिति, पदाभिहित अधिकारी को विहित रीति में कर कटौती संख्यांक के आबंटन के लिए आवेदन करेगा, स्रोत पर कर कटौती का दायी होगा।/पदाभिहित अधिकारी, यह समाधान करने के पश्चात् कि आवेदन ठीक क्रम में है, कटौती संख्या आबंटित करेगा।

(4) यथास्थिति, उपधारा (1) या उपधारा (2) के अधीन काटी गई रकम सरकारी खजाने में, विहित रीति में, ऐसी कटौती करने वाले व्यक्ति द्वारा जमा की जाएगी और कर कटौती की विवरणी फाइल करेगा तथा उसका संदाय, ऐसे प्ररूप में और ऐसी रीति में, जैसा विहित किया जाए, करेगा।

(5) इस धारा के उपबंधों के अनुसार की गई और सरकारी खजाने में की गई, किसी कटौती को, उस व्यक्ति की ओर से संदेय कर हेतु संदाय के रूप में माना जाएगा जिसके बिलों और बीजकों से कटौती की गई है और उसको, इस संबंध में, विहित प्ररूप में, प्रमाणपत्र को पेश करने पर, इस प्रकार कटौती की गई रकम मुजरा की जाएगी।

(6) यदि कोई संविदी या संविदाकार, जैसा यथास्थिति, उपधारा (1) या उपधारा (2) में निर्दिष्ट किया गया है, कटौती करने में असफल रहता है या ऐसी रकम की कटौती करने के पश्चात्, उस कटौती की गई रकम को जमा करने में असफल रहता है तो पदाभिहित अधिकारी, सुनवाई का एक अवसर दिए जाने के पश्चात्, लिखित रूप में आदेश द्वारा, उस संविदी या संविदाकार को निदेश दे सकेगा कि वह इस धारा के अधीन उन कटौती योग्य रकम के लिए किंतु जिसकी इस प्रकार कटौती नहीं की गई है और यदि कटौती की गई है तो उसे सरकारी खजाने में जमा नहीं किया गया है, के समान रकम, श्रद्धा के तौर पर, संदाय करेगा।

(7) उपधारा (6) के उपबंध पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना, यथास्थिति, यदि कोई संविदी या संविदाकार, कटौती करने में असफल रहता है या कटौती करने के पश्चात्, उस कटौती की गई रकम को जमा करने में असफल रहता है तो वह, इस धारा के अधीन कटौती योग्य रकम पर डेढ़ प्रतिशत प्रति मास की दर से साधारण ब्याज संदाय करने के लिए दायी होगा किंतु ऐसी कटौती न किए जाने पर और यदि कटौती किए जाने, किंतु इस प्रकार जमा न किए जाने पर, उस तारीख से, जिस पर ऐसी रकम कटौती योग्य थी, उस तारीख तक जिसको ऐसी रकम वास्तव में जमा की गई, दायी होगा।

(8) जहां कटौती के पश्चात् रकम जमा नहीं की गई है, वहां ऐसी रकम, उपधारा (7) में निर्दिष्ट ब्याज सहित, संबद्ध व्यक्ति की सभी आस्तियों पर भार होगा।

(9) उपधारा (1) या उपधारा (2) के अनुसार कटौती के रूप में संदाय, कर की वसूली की किसी अन्य पद्धति पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना, यथास्थिति, संविदाकार या उप-संविदाकार से, इस अधिनियम के अधीन, देय होगा।

(10) जहां किसी संविदाकार या उप-संविदाकार द्वारा किए गए किसी आवेदन पर, आयुक्त या पदाभिहित अधिकारी का समाधान हो जाता है कि कर की किसी कटौती का नहीं किया जाना या कर की कटौती को किसी निम्नतर दर पर किया जाना न्यायोचित है तो वह, यथास्थिति किसी कर

की कटौती न किए जाने को या कर की कटौती को किसी निम्नतर दर पर किए जाने को, अनुज्ञात करते हुए, उसको, ऐसा प्रमाणपत्र अनुदत्त करेगा।
ऐसे प्रमाणपत्र देने पर, कर की कटौती के लिए उत्तरदायी व्यक्ति ऐसे प्रमाणपत्र का अनुपालन करेगा।

28. विवरणियों की संपरीक्षा.—(1) आयुक्त या पदाभिहित अधिकारी, सामान्यतः विवरणियों की और विभिन्न दावों की शुद्धता को अभिनिश्चित करने की दृष्टि से, जिसके अंतर्गत कर प्रत्यय निवेश और प्रतिदाय भी हैं, संपरीक्षा कर सकेगा या किसी व्यक्ति द्वारा फाइल की गई विवरणियों, दस्तावेजों या जानकारी या कानूनी प्ररूपों को ऐसी शर्तों और ऐसी रीति के अधधीन, जैसी विहित की जाएं, संपरीक्षा करवा सकेगा।

(2) उपधारा (1) के अधीन संपरीक्षा के प्रयोजन के लिए, आयुक्त या कोई पदाभिहित अधिकारी, संपरीक्षा किए जाने वाले व्यक्ति को सम्यक् सूचना दिए जाने के पश्चात्, व्यक्ति के अभिलेखों, व्यापार स्टॉक और संबंधित दस्तावेजों की परीक्षा कर सकेगा। दस्तावेजों की ऐसी परीक्षा, राज्य के आबकारी और कराधान विभाग के किसी कार्यालय में या व्यक्ति के कारबार परिसर में की जा सकती है।

(3) उपधारा (1) के अधीन संपरीक्षा, विवरणियों को देने की तारीख से छह वर्ष की अवधि के भीतर कार्यान्वित की जा सकेगी।

29. कर का निर्धारण.—(1) जहां कोई विवरणी, धारा (26) की उपधारा (1) या उपधारा (2) के अधीन या धारा 26 की उपधारा (6) के अधीन सूचना के प्रतिवेदन में फाइल की गई है, यदि कोई कर या ब्याज, स्वतः निर्धारण पर संदेह किसी कर और कर या ब्याज के रूप में अन्यथा संदेह किसी रकम के समायोजन के पश्चात्, ऐसी विवरणी के आधार पर देय पायी जाती है, तो उपधारा (2) के उपबंधों पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना, उस व्यक्ति को, इस प्रकार संदेह रकम विनिर्दिष्ट करते हुए, सूचना भेजी जाएगी और ऐसी सूचना को, उपधारा (11) के अधीन जारी मांग की सूचना होना समझा जाएगा और तदनुसार इस अधिनियम के सभी उपबंध लागू होंगे :

परंतु इस उपधारा में जैसा अन्यथा उपबंधित के सिवाय, यदि उस व्यक्ति द्वारा कोई रकम संदेह नहीं है या उसको कोई प्रतिदाय देय नहीं है तो विवरणी की अभिस्वीकृतियों के अधीन, एक सूचना समझा जाएगा।

परंतु यह और कि इस उपधारा के अधीन कोई सूचना, उस वित्तीय वर्ष से, जिसमें वह विवरणी फाइल की गई है, एक वर्ष के अवसान के पश्चात् नहीं भेजी जाएगी।

(2) उपधारा (1) में किसी बात के अंतर्विष्ट होते हुए भी, यथास्थिति, आयुक्त या पदाभिहित अधिकारी, स्वप्रेरणा से या उसको प्राप्त जानकारी के आधार पर, अपनी पूर्ण विवेक बुद्धि से आदेश कर सकेगा या उस व्यक्ति द्वारा संदेह कर का निर्धारण कर सकेगा और उसके द्वारा संदेह कर का अवधारण कर सकेगा, जहां :—

- (क) कोई व्यक्ति धारा 26 के अधीन कोई विवरणी फाइल करने में असफल रहता है; या
- (ख) यह विश्वास करने के निश्चित कारण हैं कि किसी व्यक्ति द्वारा फाइल की गई विवरणी ठीक और पूर्ण नहीं है; या
- (ग) यह विश्वास करने के युक्तियुक्त आधार हैं कि कोई व्यक्ति, कर संदाय करने का दायी है किंतु वह देय रकम के संदाय में असफल रहता है; या
- (घ) किसी व्यक्ति ने ऐसा कर प्रत्यय निवेश का उपभोग किया है जिसके लिए वह पात्र नहीं है; या
- (ङ) अनंतिम निर्धारण विरचित कर दिया गया है।

(3) आयुक्त, स्वप्रेरणा से या उसको प्राप्त जानकारी के आधार पर, लिखित आदेश द्वारा, पदाभिहित अधिकारी को, किसी व्यक्ति या व्यक्तियों के किसी वर्ग द्वारा संदेह कर की रकम का निर्धारण करने का, ऐसी अवधि के लिए, जो वह अपने आदेश में विनिर्दिष्ट कर सकेगा, निदेश दे सकेगा।

(4) उपधारा (2) या उपधारा (3) के अधीन कोई निर्धारण, उस तारीख के पश्चात्, जब वार्षिक विवरण फाइल किया गया था या फाइल किया जाना नियत था, इनमें से जो भी बाद की हो, तीन वर्ष के भीतर किया जा सकेगा :

परंतु यह कि जहां परिस्थितियों द्वारा ऐसा समुचित हो, वहां आयुक्त, लिखित आदेश द्वारा किसी कराधेय व्यक्ति या किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति का, उस तारीख से जब वार्षिक विवरण फाइल किया गया था या ऐसे व्यक्ति द्वारा फाइल किया जाना नियत था, उनमें से जो भी पश्चात्पूर्ती हो, तीन वर्ष के पश्चात्, किंतु छह वर्ष अपश्चात् निर्धारण अनुज्ञात कर सकेगा।

(5) जहां, इस धारा के अधीन कोई निर्धारण किया जाना है तो पदाभिहित अधिकारी, ऐसे निर्धारण किए जाने वाले व्यक्ति पर सूचना तामील करेगा और ऐसी सूचना में निम्नलिखित विवरण दिया जाएगा—

- (क) प्रस्तावित निर्धारण के लिए आधार; और
- (ख) आक्षेपों को फाइल करने के लिए, यदि कोई हों तो, समय, स्थान और रीति।

(6) पदाभिहित अधिकारी, उन सभी सुसंगत सामग्री पर विचार करने के पश्चात्, जो अधिकारी ने एकत्र की है, उपधारा (5) के अधीन जारी सूचना में विनिर्दिष्ट दिन को या ऐसे साक्ष्य, जिसे निर्धारित प्रस्तुत करे, की सुनवाई के, तत्पश्चात् यथाशीघ्र, लिखित आदेश द्वारा, ऐसे निर्धारण के आधार पर, उसको संदेह रकम या देय किसी रकम के प्रतिदाय का अवधारण करते हुए, निर्धारण करेगा।

(7) पदाभिहित अधिकारी, आयुक्त की पूर्विक अनुज्ञा से, निर्धारण आदेश की तारीख से तीन वर्ष की अवधि के भीतर, उपधारा (2) या उपधारा (3) के अधीन किया हुआ कोई निर्धारण संशोधित कर सकेगा, यदि उसको, किसी व्यक्ति द्वारा संदेय कर के निर्धारण में निम्नलिखित कारण पता चलता है कि :—

(क) ऐसे व्यक्ति ने कपट या जानबूझकर उपेक्षा की है; या

(ख) ऐसे व्यक्ति ने तथ्यों का दुर्व्यपदेशन किया है; या

(ग) आवर्तन का कोई भाग निर्धारण से छूट गया है :

परंतु ऐसे निर्धारण को संशोधित करने वाला कोई आदेश, प्रभावित व्यक्ति को सुनवाई का एक अवसर प्रदान किए बिना, नहीं किया जाएगा।

(8) पदाभिहित अधिकारी, निर्धारण आदेश की तारीख से एक वर्ष की अवधि के भीतर, उपधारा (2) या उपधारा (3) के अधीन किया गया निर्धारण, परिशोधित कर सकेगा यदि उसको पता चलता है कि अभिलेख से प्रकट कोई भूल है :

परंतु ऐसे निर्धारण को परिशोधित करने वाला कोई आदेश, प्रभावित व्यक्ति को सुनवाई का एक अवसर प्रदान किए बिना, नहीं किया जाएगा।

(9) उपधारा (7) और उपधारा (8) के अधीन कर निर्धारण, सभी आशयों और प्रयोजनों के लिए इस अधिनियम के अधीन किया गया कोई निर्धारण होगा।

(10) कोई निर्धारण या इस अधिनियम के अधीन किए जाने या निष्पादित किए जाने के लिए तात्पर्यित अन्य कार्यवाहियां, या इसके अधीन बनाए गए नियम :—

(क) केवल इस आधार पर कि वह विहित प्ररूप में नहीं थे, अभिखंडित या शून्य नहीं समझे जाएंगे; या

(ख) किसी भूल, त्रुटि या उसमें लोप के कारण, प्रभावित नहीं होंगे:

परंतु ऐसा कोई निर्धारण, सारभूत रूप से इस अधिनियम के अनुरूप या इस नियम और इसके अधीन बनाए गए नियमों के आशय और अर्थ के अनुसार हो।

(11) जब, इस अधिनियम के अधीन पारित किसी आदेश को परिणामस्वरूप कोई कर व्याज, शास्ति या कोई अन्य रकम संदेय है तो पदाभिहित अधिकारी, इस व्यक्ति पर ऐसी संदेय रकम को विनिर्दिष्ट करते हुए, विहित प्ररूप, में, मांग की सूचना तामील करेगा।

30. अनंतिम निर्धारण.—(1) धारा 29 में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी, जहां कपट या जानबूझकर उपेक्षा, अपवचन करने या कर के संदाय से बचने की दृष्टि से या देय कर संदत्त नहीं किया है या किसी व्यक्ति द्वारा उसकी ओर से कोई विवरणी फाइल नहीं की गई है, तो पदाभिहित व्यक्ति, इसके कारणों को अभिलिखित करके, ऐसे अपवचन, बचने या असंदत्त कर दायित्व को अवधारित करने को, किसी अवधि के लिए, अनंतिम निर्धारण कर सकेगा :

परंतु ऐसे व्यक्ति का कर दायित्व, अंतिम रूप से, उसके द्वारा विहित रीति में अपनी विवरणी फाइल करने के पश्चात् निर्धारित होगा।

(2) उपधारा (1) के अधीन अनंतिम निर्धारण, पता चलने की तारीख से छह मास की अवधि के भीतर किया जाएगा। तथापि, आयुक्त, कारणों को अभिलिखित करके, पदाभिहित अधिकारी द्वारा, उसको निर्दिष्ट किसी विशिष्ट मामलों में, उक्त अवधि को और छह मास तक बढ़ा सकेगा।

31. नैमित्तिक व्यापारी का कर दायित्व.—(1) यदि कोई नैमित्तिक व्यापारी, किसी राज्य में कराधेय माल के विक्रय या क्रय का कारबार संचालित करता है तो वह पदाभिहित अधिकारी को ऐसा करने की अनुज्ञा के लिए, विहित प्ररूप में, ऐसी फीस सहित जो विहित की जाए, आवेदन करेगा।

(2) पदाभिहित अधिकारी, किसी आवेदन की प्राप्ति पर, विहित प्ररूप में, ऐसी शर्तों के अधधीन, जैसी विहित की जाए, अनुज्ञा अनुदत्त कर सकेगा।

(3) जहां किसी कराधेय व्यक्ति या पंजीकृत व्यक्ति द्वारा कराधेय माल के विक्रय या क्रय का कारबार क्रियाकलाप संचालित की जा रही हों, वहां वह, पदाभिहित अधिकारी को, विहित रीति में, ऐसे क्रियाकलाप संचालित करने से पूर्व, सूचना देगा।

(4) उस कारबार क्रियाकलाप को संचालित करने वाला नैमित्तिक व्यापारी, विहित रीति में, प्रतिभूति की किसी ऐसी रकम देगा जो पदाभिहित अधिकारी द्वारा, उस नैमित्तिक व्यापारी द्वारा किए जाने वाले कारबार के स्वरूप और मात्रा की संभावना को दृष्टि में रखते हुए, अवधारित की जा सकेगी, किंतु यह एक लाख रुपए से अनधिक होगी।

(5) कोई नैमित्तिक व्यापारी, जो राज्य के बाहर से कराधेय माल लाता है, तो वह राज्य में प्रवेश पर निकटतम सूचना संग्रह केन्द्र को या जांच पड़ताल चौकी को, विहित रीति में, ऐसे माल का पूरा ब्यौरा देते हुए, विहित प्ररूप में, रिपोर्ट करेगा।

(6) कोई नैमित्तिक व्यापारी, ऐसी रीति में, जो विहित की जाए, कर का संदाय करेगा और ऐसे कारबार क्रियाकलाप के या उस अवधि के, जिसके लिए पदाभिहित अधिकारी द्वारा अनुज्ञा अनुदत्त की गई थी, पूर्ण होने पर इनमें से जो भी पूर्वतर हो, पदाभिहित अधिकारी को, विक्रय या क्रयों की कुल रकम, उस पर संदेय कर और संदत्त कर के संबंध में, तुरंत रिपोर्ट करेगा और अतिशेष कर की रकम, यदि कोई हो तो, ऐसी अवधि और ऐसी रीति में, जैसी विहित की जाए, सरकारी खजाने में जमा करेगा।

(7) जहां कोई नैमित्तिक व्यापारी, उपधारा (1) के अधीन यथा अपेक्षित अनुज्ञा के लिए आवेदन करने में असफल रहता है या उपधारा (5) और उप-धारा (6) के अधीन यथा अपेक्षित रिपोर्ट करने में असफल रहता है तो पदाभिहित अधिकारी, अपनी पूर्ण विवेक बुद्धि से, देय कर की रकम का निर्धारण करेगा और ऐसे व्यक्ति को, कर की रकम, ऐसे समय के भीतर और ऐसी रीति में जो विहित की जाए संदाय करने का निदेश देगा :

परंतु इस उप-धारा के अधीन कर की कोई रकम, नैमित्तिक व्यापारी को सुनवाई का अवसर दिए बिना, निर्धारित नहीं की जाएगी।

(8) शास्ति, ब्याज और वसूली के संबंध में, इस अधिनियम के उपबंध, इस धारा के अधीन किसी नैमित्तिक व्यापारी द्वारा संदेय कर पर, यथावश्यक परिवर्तन सहित लागू होंगे।

स्पष्टीकरण—इस धारा के प्रयोजन के लिए, "कारबार क्रियाकलाप" के अंतर्गत, प्रदर्शनी-सह-विक्रय, मौसमी निकासी-सह-विक्रय जैसी या ऐसी कोई क्रियाकलाप जहां कारबार के स्वरूप में यदा कदा किए जाने वाला संव्यवहार कार्यान्वित किया गया हो, जैसा क्रियाकलाप भी है।

32. कर के असंदाय या विलंबित संदाय के लिए ब्याज.—(1) यदि कोई व्यक्ति, इस अधिनियम के उपबंधों के अनुसार उस पर देय कर की रकम के संदाय में असफल रहता है तो वह कर की रकम के अतिरिक्त डेढ़ प्रतिशत प्रति मास की दर से उस पर देय कर की रकम पर, कर की रकम संदाय के लिए देय तारीख से उस तारीख तक, जब वह वस्तुतः संदाय करता है, साधारण ब्याज संदाय के लिए दायी होगा।

(2) यदि कोई व्यक्ति जिसने इस अधिनियम के अधीन कोई विवरणी फाइल की हुई है, धारा 26 की उप-धारा (4) के अनुसार किसी गलत या लोप का परिशोधन करता है जिसके परिणामस्वरूप कर की रकम, आरंभिक विवरणी से उच्चतर रकम होती है तो ऐसा व्यक्ति, संदेय कर की उस अतिरिक्त रकम के संबंध में उसके संदाय के लिए देय तारीख से उस तारीख तक, जब वह वस्तुतः कर की अतिरिक्त रकम संदाय करता है, डेढ़ प्रतिशत प्रति मास की दर से ब्याज संदाय के लिए दायी होगा।

(3) यदि कोई व्यक्ति, किसी विवरणी में कर की ऐसी रकम घोषित करने में असफल रहता है जो घोषित की जानी चाहिए थी तो ऐसा व्यक्ति कर की ऐसी रकम पर, संदाय के लिए देय तारीख से उस तारीख तक जब वह वस्तुतः कर की ऐसी रकम संदाय करता है, डेढ़ प्रतिशत प्रति मास की दर से ब्याज संदाय के लिए दायी होगा।

(4) यदि किसी व्यक्ति पर कर या शास्ति की कोई देय रकम, मांग की सूचना में विनिर्दिष्ट अवधि के भीतर या यदि कोई अवधि विनिर्दिष्ट नहीं की गई है तो ऐसी सूचना की तामील के तीस दिन के भीतर, उसने संदत्त नहीं की है तो वह व्यक्ति, कर या शास्ति की रकम के अतिरिक्त, ऐसी रकम पर, उस तारीख के ठीक पश्चात्तर्ती तारीख से, डेढ़ प्रतिशत प्रति मास की दर से, यथास्थिति सूचना में विनिर्दिष्ट अवधि पर या तीस दिन की अवधि पर, जो उस तारीख तक समाप्त होती है, जब यथास्थिति, वह कर या शास्ति की ऐसी रकम का वस्तुतः संदाय करता है :

परंतु जहां किसी कर या शास्ति की कोई वसूली, किसी सक्षम प्राधिकारी या किसी न्यायालय के किसी आदेश द्वारा रोक दी गई है वहां कर या शास्ति की वह रकम, रोक के उस आदेश के निष्प्रभाव किए जाने के पश्चात्, उस रकम पर, जो अंतिम रूप से देय पाई गई हो, पूर्वोक्त दर से ब्याज सहित, वसूल किए जाने योग्य होगी और ऐसा ब्याज, उस तारीख से संदेय होगा जब से कर या शास्ति प्रथमतः देय हुई थी।

(5) इस धारा के अधीन संदेय ब्याज की रकम—

(क) किसी मास के भाग के लिए विचार करने को, एक मास के रूप में संगणित होगी ;

(ख) संग्रहण और वसूली के प्रयोजनों के लिए, इस अधिनियम के अधीन, कर के रूप में समझी जाएगी ; और

(ग) इस अधिनियम के अधीन अधिरोपित की गई शास्ति, यदि कोई हो, के अतिरिक्त होगी।

स्पष्टीकरण—यदि कर किसी किसी रकम का संदाय, किसी व्यक्ति द्वारा बैंक के माध्यम से किया गया है और वह बैंक द्वारा अनादत्त कर दिया गया हो तो यह, कर की रकम संदाय करने वाले व्यक्ति की ओर से असफल होना होगा।

अध्याय 6

कर का संदाय और वसूली

33. संदाय की नियत तारीख.—इस अधिनियम के अधीन देय या संदेय, मूल्य वर्धित कर या आवर्त कर निम्न प्रकार संदेय होगा—

(क) कराधेय व्यक्ति की दशा में, जिसका सकल आवर्त, पूर्व वर्ष में, मासिक तौर पर, ऐसी तारीख तक, जो विहित की जाए, एक करोड़ रुपए से अधिक है ;

(ख) कराधेय व्यक्ति की दशा में जिसका आवर्त पूर्व वर्ष में, उस तारीख तक, जिसको ऐसी अवधि के लिए विवरणी का फाइल किया जाना अपेक्षित है या जैसा विहित किया जाए ;

(ग) इस अधिनियम के अधीन किए निर्धारण के अनुसार देय कर की दशा में, उस तारीख तक, जो मांग की सूचना में विनिर्दिष्ट या आदेश के तीस दिन की अवधि के भीतर, जो भी पूर्वतर हो ;

(घ) इस अधिनियम के अधीन किसी रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति द्वारा संदेय अवार्त कर की दशा में, उस तारीख तक, जिसको उस अवधि के लिए विवरणी का फाइल किया जाना अपेक्षित है ;

(ङ) किसी नैमित्तिक व्यापारी की दशा में, उस तारीख तक जो विहित की जाए ; और

(च) किसी अन्य मामले में, कर, ऐसी तारीख तक संदेय होगा जो किसी पदाभिहित अधिकारी द्वारा विनिर्दिष्ट की जाए।

34. राज्य सरकार को, कर का ऋण के रूप में देय होना.—इस अधिनियम के अधीन किसी व्यक्ति द्वारा देय या संदेय कर या कोई अन्य

रकम, राज्य सरकार को देय ऋण होगी और इस अधिनियम के उपबंधों और उसके अधीन विरचित नियमों के अनुसार संदेय या वसूल होंगे।

35. इस अधिनियम के अधीन दायित्व का प्रथम भार होना.— किसी संविदा या तत्समय प्रवृत्त विधि में अंतर्विष्ट किसी बात के प्रतिकूल होते हुए भी, इस अधिनियम के अधीन किसी कराधेय, रजिस्ट्रीकृत या अन्य व्यक्ति द्वारा संदेय कर, शास्ति, ब्याज की रकम या कोई अन्य रकम, ऐसे व्यक्ति की आस्ति पर, उस तारीख से, जिससे वह रकम देय और संदेय हुई है, प्रथम भार होगी।

36. भू-राजस्व के बकाये के रूप में वसूली या बकाया.— इस अधिनियम के अधीन देय और संदेय किसी कर, शास्ति, ब्याज की कोई रकम या अन्य कोई रकम जो नियत तारीख के पश्चात् असंदत्त हो, भू-राजस्व के बकाये रूप में वसूलीय होगा।

37. किसी संदाय का समायोजन.— किसी व्यक्ति द्वारा, इस अधिनियम के अधीन पारित किसी आदेश के परिणामस्वरूप देय किसी रकम हेतु, किए गए संदाय का समायोजन प्रथम होगा सिवाय इस अधिनियम के अधीन, जहां तक, उक्त रकम या उसके भाग की वसूली, संदाय की तारीख को उसके द्वारा संदेय ब्याज के विरुद्ध और उसके पश्चात् किसी शास्ति के रूप में देय किसी रकम हेतु, रोक दी गई हो। असमायोजित शेष कोई रकम किसी संदेय कर हेतु समायोजित की जाएगी।

38. संपत्ति के अंतरण पर निर्बन्धन.— कोई व्यक्ति, जिसके विरुद्ध इस अधिनियम के उपबंधों के अधीन कोई वसूली कार्यवाही लंबित है, वह देय या देय होने की संभावना वाले ब्याज या किसी अन्य रकम के संदाय से बचने या संदाय का अपवचन करने के आशय से, अपनी किसी शास्ति पर या कब्जा सहित भाग पर, विक्रय, बंधक, उपहार, विनियम या अंतरण के किसी भी ढंग द्वारा, कोई भार सृजित नहीं करेगा। इस धारा के उपबंधों के अतिक्रमण में किए गए किसी भार या अंतरण की दशा में, ऐसा भार या अंतरण, किसी कराधेय व्यक्ति, रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति या किसी अन्य व्यक्ति द्वारा संदेय, किसी कर या किसी अन्य रकम के संबंध में, किसी दावे के विरुद्ध शुन्य होगा :

परंतु ऐसा भार या अंतरण, शून्य नहीं होगा यदि वह पदाभिहित अधिकारी की पूर्वतन अनुज्ञा से किया गया है या ऐसे व्यक्ति से देय कर या किसी अन्य रकम के संदाय को, बैंक गारंटी द्वारा पूर्णतः सुरक्षित किया गया है। परादेय बकाया के मामले में, पदाभिहित अधिकारी, इस अधिनियम के अधीन दायित्वों के संबंध में, समुचित रजिस्ट्रीकरण प्राधिकारी को सूचित करेगा।

स्पष्टीकरण— इस धारा में 'आस्तियों' से भूमि, भवन, मशीनरी, संयंत्र, शेषर, प्रतिभूतियां और स्थिर आस्तियां, बैंको को उस सीमा तक प्रभारित अभिप्रेत है जिनकी आस्तियों में से कोई आस्ति व्यक्ति के कारबार के व्यवसाय के स्टॉक का भाग नहीं है।

अध्याय 7

प्रतिदाय

39. कर का प्रतिदाय—(1) इस अधिनियम के उपबंधों और उसके अधीन बनाए गए नियमों के अध्याधीन रहते हुए आयुक्त या पदाभिहित अधिकारी, उस व्यक्ति को, ऐसी अवधि के भीतर, जैसी विहित की जाए, कर, शास्ति, या ब्याज की कोई रकम, यदि कोई हो, तो जो ऐसे व्यक्ति द्वारा, उससे देय रकम से अधिक मात्रा में संदत्त की गई है, भी प्रतिदाय की जाएगी और इस अधिनियम के अधीन संदेय उत्पाद कर से कर प्रत्यय निवेश की अधिकता भी प्रतिदाय की जाएगी। प्रतिदाय जैसा विनिर्दिष्ट किया जाए या तो प्रतिदाय वाउचर द्वारा या उस व्यक्ति के विकल्प पर प्रतिदाय समायोजन आदेश द्वारा, किया जा सकेगा :

परंतु आयुक्त या पदाभिहित अधिकारी, यथास्थिति, प्रथमतः धारा 29 के अधीन किसी सूचना के संबंध में किसी देय रकम की वसूली हेतु, ऐसी अधिक रकम का या किसी ऐसी रकम जो देय है किंतु संदत्त नहीं की गई है, का उपयोग करेगा और अतिशेष, यदि कोई है तो, प्रतिदाय करेगा।

(2) जहां किसी अवधि के लिए, किसी कराधेय व्यक्ति या रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति द्वारा दी गई किसी विवरणी के अनुसार, कोई प्रतिदाय देय है वहां उसके द्वारा, ऐसा प्रतिदाय, किसी पश्चात्पूर्ती अवधि के लिए धारा 26 के अधीन दी गई विवरणियों के अनुसार देय और संदेय कर के विरुद्ध, अनंतिम रूप से समायोजित हो सकेगा :

परंतु यथास्थिति, किसी कराधेय व्यक्ति या रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति से देय या उसके द्वारा संदेय किसी कर या शास्ति या ब्याज की कोई रकम या ये सभी, ऐसे समायोजन की तारीख को समायोजन करते समय, ऐसे प्रतिदाय से, प्रथमतः काटी जाएगी।

40. विलंबित प्रतिदाय पर ब्याज— जहां आयुक्त या पदाभिहित अधिकारी द्वारा, किसी व्यक्ति को, किसी रकम का प्रतिदाय अपेक्षित है, वहां आवेदन की तारीख से नब्बे दिन की अवधि के भीतर, उसको ऐसा प्रतिदाय नहीं किया जाता है तो उक्त रकम पर प्रतिमाह एक प्रतिशत की तीन चौथाई की दर से साधारण ब्याज ऐसे व्यक्ति को, प्रतिदाय की तारीख से नब्बे दिन की अवधि के अखसान के ठीक पश्चात्पूर्ती तारीख से संदाय किया जाएगा।

स्पष्टीकरण—(1) यदि पूर्वोक्त नब्बे दिन की अवधि के भीतर किसी प्रतिदाय के अनुदान में किसी विलंब का होना, यथास्थिति, किसी कराधेय व्यक्ति या रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति से माना जा सकता है तो उससे हुए विलंब की अवधि, पूर्णतः या भागतः, उस अवधि से, जिसके लिए ब्याज संदेय है, अपवर्जित होगी।

(2) जहां कोई प्रश्न, ब्याज की संगणना के प्रयोजनों के लिए स्पष्टीकरण (1) के निबंधनों के अनुसार किसी अवधि के अपवर्जित किए जाने के बारे में, उद्भूत होता है वहां ऐसा प्रश्न आयुक्त द्वारा अवधारित किया जाएगा, जिसका विनिश्चय अंतिम होगा।

(3) इस धारा के अधीन ब्याज, किसी मास के भाग के लिए, एक मास के रूप में विचार करते हुए संगणित होगी।

41. कतिप्रय मामलों में प्रतिदाय रोकने की शक्ति.— (1) जहां, किसी आदेश से, कोई प्रतिदाय पैदा होता है वह किसी अपील या आगे की कार्यवाही की विषयवस्तु है या जहां इस अधिनियम के अधीन कोई अन्य कार्यवाही लंबित है और ऐसे प्रतिदाय के अनुदान करने में सक्षम अधिकारी की राय है कि प्रतिदाय के अनुदान से राजस्व पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने की संभावना है तो ऐसा अधिकारी, आयुक्त के पूर्व अनुमोदन से, ऐसे समय तक,

जो अवधारित करे, उस प्रतिदाय को रोक सकेगा।

(2) जहां, उपधारा (1) के अधीन कोई प्रतिदाय रोका गया है वहां आयुक्त, धारा 40 के उपबंधों के अनुसार, उपधारा (1) में निर्दिष्ट आदेश की तारीख से नब्बे दिन की अवधि के अवसान के ठीक पश्चात्तर्वा तारीख से प्रतिदाय की तारीख तक उस अवधि के लिए किसी अपील या आगे की कार्यवाही या किसी अन्य कार्यवाही के परिणामस्वरूप किसी व्यक्ति को, प्रतिदाय की उस रकम पर, जिसका देय होना अंततः अवधारित किया गया है, ब्याज संदत्त करेगा।

अध्याय 8

लेखे प्रस्तुत करने का दायित्व

42. लेखे.— (1) प्रत्येक कराधेय व्यक्ति, रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, नैमित्तिक व्यापारी या कोई अन्य व्यक्ति जो किसी आयुक्त या पदाभिहित अधिकारी द्वारा उस पर नोटिस की तामील द्वारा ऐसा करने के लिए अपेक्षित है, वह अपने द्वारा विक्रय या क्रय किए गए माल का सच्चा लेखा रखेगा।

(2) यदि, उपधारा (1) में निर्दिष्ट कोई अधिकारी विचार करता है कि रखे गए लेखे, पर्याप्त रूप से स्पष्ट नहीं हैं या अवधारित करने के लिए बोधगम्य नहीं हैं, चाहे कोई व्यक्ति किसी अवधि के दौरान कर संदाय के लिए दायी है या नहीं, या लेखे इस प्रकार रखे गए हैं जो दी गई किसी विवरणी या किसी विवरण की उचित संवीक्षा को समर्थ नहीं बनाते, तो वह, ऐसे लेखे रखने की, लिखित सूचना द्वारा ऐसे व्यक्ति से अपेक्षा कर सकेगा, जिसके अंतर्गत विक्रय या क्रय के अभिलेख भी हैं जो ऐसे प्ररूप या रीति में, कर के उचित निर्धारण के प्रयोजन के लिए उसकी राय में जैसे आवश्यक हैं।

(3) प्रत्येक कराधेय व्यक्ति और रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, अपनी सभी लेखा पुस्तकें रखेगा जिसके अंतर्गत अपने रजिस्ट्रीकरण प्रमाणपत्र में विनिर्दिष्ट काराबार के स्थान या स्थानों पर या आयुक्त या पदाभिहित अधिकारी के पूर्व अनुमोदन सहित ऐसे अन्य स्थान या स्थानों पर जैसा अनुज्ञात किया जाए, अपने माल के स्टॉक या क्रयों, विक्रयों और अपने द्वारा किए गए माल के परिदान या किए गए संदायों या प्राप्तियों से संबंधित भी हैं।

(4) यदि किसी पदाभिहित अधिकारी द्वारा, अधिप्रमाणीकरण के प्रयोजन के लिए उस रीति में, जैसी विहित की जाए, ऐसा अपेक्षित है तो प्रत्येक व्यक्ति अपने काराबार से संबंधित सभी लेखा पुस्तकें प्रस्तुत करेगा।

43. चार्टर्ड एकाउंटेंट द्वारा लेखाओं की संपरीक्षा.— प्रत्येक व्यक्ति जिसकी सकल आवर्त, एक वर्ष में विहित सीमा से अधिक है, वह अपने लेखे किसी लेखाकार द्वारा संपरीक्षित कराएगा और किसी पदाभिहित अधिकारी को ऐसे लेखाकार द्वारा, विहित प्ररूप में, सम्यक् रूप से हस्ताक्षर की हुई और ऐसी विशिष्टियां और प्रमाणपत्र, जो विहित किए जाएं, उपवर्णित करते हुए, मूल्य वर्धित कर संपरीक्षा रिपोर्ट देगा।

स्पष्टीकरण.— इस धारा में "लेखाकार" से अभिप्रेत, चार्टर्ड एकाउंटेंट अधिनियम, 1949 (केन्द्रीय अधिनियम 1949 का 38) के अर्थ के अंतर्गत कोई चार्टर्ड एकाउंटेंट अभिप्रेत है और जिसके अंतर्गत वह व्यक्ति भी है जो कंपनी अधिनियम, 1956 (केन्द्रीय अधिनियम 1956 का 1) की धारा 226 की उपधारा (2) के उपबंधों के आधार पर कंपनियों के संपरीक्षक के रूप में कार्य करने को नियुक्ति किए जाने के लिए हकदार बनाया गया है।

44. लेखों के प्रतिधारण की अवधि.— इस अधिनियम के अधीन, लेखा पुस्तकों या अन्य अभिलेखों को रखने और अनुरक्षण करने के लिए अपेक्षित प्रत्येक व्यक्ति, उनको उस वर्ष जिससे इनका संबंध है या ऐसी अन्य अवधि, जो अपेक्षित की जाए, की समाप्ति के पश्चात् छह वर्ष के अवसान तक या किसी निर्धारण के अंतिम होने तक, जो पश्चात्तर्वा हो, रखेगा।

45. कराधेय व्यक्ति और रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति का बीजक जारी करना.— (1) प्रत्येक कराधेय या रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति या ऐसे व्यक्ति को कोई अभिकर्ता, एक सौ रुपए से अधिक के मूल्य के लिए, अपने द्वारा या अपनी ओर से विक्रीत माल के संबंध में क्रेता को, ऐसी रीति में, यथास्थिति, मूल्य वर्धक कर बीजक या फुटकर बीजक, ऐसी जानकारीयों से युक्त जैसी विहित की जाएं, जारी करेगा।

(2) एक सौ रुपए से नीचे प्रत्येक विक्रय, जहां मूल्य वर्धित कर बीजक या फुटकर बीजक जारी नहीं हुआ है, वहां दैनिक आधार पर लेखा पुस्तकों में अभिलिखित भी किया जाएगा।

(3) उपधारा (1) और (2) में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी, जहां कोई क्रेता किसी बीजक को मांगता है वहां उस व्यक्ति द्वारा, इस तथ्य का विचार किए बिना कि विक्रीत माल का मूल्य एक सौ रुपए से कम है, बीजक जारी किया जाएगा।

(4) जहां माल, विक्रय के अन्यथा अंतरित किया गया है वहां किसी कराधेय या रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति उसके द्वारा या उसकी ओर से अंतरित या परेयित माल के संबंध में, परेयिती को परिदान चालान, ऐसी रीति में और ऐसी विशिष्टियां उल्लिखित करते हुए, जैसी विहित की जाए, जारी करेगा।

(5) जहां कोई कराधेय व्यक्ति, किसी अन्य कराधेय व्यक्ति से किसी मूल्य वर्धित कर बीजक के विरुद्ध, उसके द्वारा क्रय किए गए किसी माल को वापस करता है वहां, वह विक्रय करने वाले कराधेय व्यक्ति को, उस माल की वापसी के समय, बीजक पुस्तक पर एक परिदान सह नामे नोट जारी करेगा और उन माल के संबंध में उसके द्वारा उपभोग की गई कर प्रत्यय निवेश उलट दी जाएगी।

46. लेखे का प्रस्तुत और निरीक्षण किया जाना, दस्तावेजों का परिबद्ध किया जाना, परिसरों का निरीक्षण और माल का अभिग्रहण किया जाना.— (1) यथास्थिति, आयुक्त या पदाभिहित अधिकारी, ऐसी शर्तों के अध्वधीन रहते हुए जैसी विहित की जाएं, किसी कराधेय व्यक्ति, रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति या किसी अन्य व्यक्ति से उसके समक्ष माल के स्टॉक या विक्रय, क्रय और माल के परिदान या उस व्यक्ति द्वारा किए गए संदायों या प्राप्तियों से संबंधित किसी जानकारी के देने की या उसके काराबार संबंधित किसी अन्य जानकारी, जो आवश्यक हो, के देने की अपेक्षा कर सकेगा।

(2) किसी कराधेय व्यक्ति, रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति या किसी अन्य व्यक्ति के माल के स्टाकों या क्रय, विक्रय और माल के परिदान, उनके द्वारा किए गए संदायों या प्राप्ति से संबंधित सभी लेखे रजिस्ट्रों और दस्तावेजों और किसी व्यक्ति के कारबार के किसी स्थान में रखे गए सभी माल, उपधारा (1) में निर्दिष्ट किसी अधिकारी द्वारा निरीक्षण के लिए युक्तियुक्त समयों पर उपलब्ध करेगा और वह अधिकारी उक्त लेखे, रजिस्ट्रों या दस्तावेजों और माल की ऐसी तालिका की ऐसी प्रतियां या उद्धरण, उसको जैसे आवश्यक प्रतीत हो, प्राप्त करवा सकेगा।

(3) उपधारा (1) में निर्दिष्ट कोई अधिकारी, यदि विश्वास करने का कारण रखता है कि किसी कराधेय व्यक्ति, रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति या किसी अन्य व्यक्ति ने, उस पर देय किसी कर के संदाय में अपवंचना की है या अपवंचन करने का प्रयत्न कर रहा है तो वह, ऐसे कारणों से जो लेखबद्ध किए जाएंगे, ऐसे लेखे, रजिस्ट्रों या दस्तावेजों, जो आवश्यक हों, अभिग्रहण कर सकेगा और उनके लिए एक रसीद जारी करेगा। उक्त अधिकारी, चालू लेखा बहियों की दशा में तीस दिन से और पुराने लेखा बहियों की दशा में साठ दिन से, अधिक अवधि के लिए ऐसे लेखे, रजिस्ट्रों या दस्तावेजों को प्रतिधारित करेगा। तथापि, वह अधिकारी यदि किसी जानकारी को, अतिरिक्त अन्वेषण के लिए आवश्यक पाता है तो उस दस्तावेज की फोटोप्रति को, जो उस व्यक्ति द्वारा अधिप्रमाणीकृत की जाएगी और मूल के रूप में मानी जाएगी, प्रतिधारित कर सकेगा।

(4) उपधारा (2) या उपधारा (3) के प्रयोजन के लिए, उक्त अधिकारी, कारबार के किसी स्थान या किसी अन्य स्थान में, जहां वह विश्वास करने का कारण रखता है कि कोई कराधेय व्यक्ति या रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति, अपने कारबार के किसी लेखे, रजिस्ट्रों या दस्तावेजों या अपने कारबार से संबंधित माल के स्टाक रखता है या तत्समय रखे हुए है, प्रवेश कर सकेगा और तलाशी ले सकेगा :

परंतु कोई अधिकारी, किसी आयुक्त या ऐसे अन्य अधिकारी, जो सहायक उत्पाद शुल्क और कराधान आयुक्त की पंक्ति से नीचे का न हो, जिसे आयुक्त, लिखित रूप में प्राधिकृत करे, की पूर्वीक अनुज्ञा के बिना, किसी परिसर में प्रवेश नहीं करेगा और न ही तलाशी लेगा।

(5) जहां, किसी तलाशी के अनुक्रम में, किसी व्यक्ति के कब्जे या नियंत्रण में, कोई लेखा, बही, दस्तावेज, नकदी या माल पाया जाता है तो यह उपधारित किया जाएगा कि ऐसी लेखा बहियां, दस्तावेज, रोकड़ या माल, ऐसे व्यक्ति का है जिसके कारबार के स्थान का निरीक्षण किया गया है, जब तक प्रतिकूल साबित नहीं कर दिया जाता है।

(6) उपधारा (2) या उपधारा (3) के अधीन कार्य करने को सशक्त कोई अधिकारी, किसी ऐसे माल को, जो कारबार के किसी कार्यालय, दुकान, गोदाम, जलयान, यान में या कारबार के किसी अन्य स्थान में पाया गया है, किंतु उस व्यक्ति द्वारा अपनी बहियों, लेखे, रजिस्ट्रों, अभिलेखों और अन्य दस्तावेजों में लेखा-जोखा नहीं दिया है, अभिग्रहण करने की शक्ति रखेगा :

परंतु इस उपधारा के अधीन अभिगृहीत सभी माल की सूची, ऐसे अधिकारी द्वारा तैयार की जाएगी और उस अधिकारी और दो स्वतंत्र साक्षियों द्वारा हस्ताक्षरित की जाएगी और माल की एक रसीद, उस व्यक्ति को दी जाएगी जिसके कब्जे या नियंत्रण से ये अभिगृहीत किए गए हैं ;

(7) कोई अधिकारी, उस व्यक्ति या उसके कारबार से संबद्ध किसी व्यक्ति, जिसके अंतर्गत कोई उपमिहिती या कोई परिवहक भी है, का कथन अभिलिखित करने की शक्ति रखेगा और ऐसे कथन का, उस प्रभावित व्यक्ति को सुने जाने का युक्तियुक्त अवसर दिए जाने के पश्चात्, उसके कर के दायित्व को अवधारित करने के प्रयोजन के लिए, प्रयोग कर सकेगा।

(8) कोई अधिकारी, किसी माल के अभिग्रहण करने के पश्चात्, उस माल को, माल के स्वामी या ऐसे स्वामी या ऐसे स्वामी द्वारा सम्यक् रूप से प्राधिकृत किसी व्यक्ति को, ऐसे निदेश के साथ कि वह सत्यापन किए जाने तक या उस अधिकारी द्वारा जांच किए जाने तक, उस माल को अलग नहीं करेगा, सुपुर्दगी पर सौंप सकेगा। ऐसा अधिकारी, अभिगृहीत माल के सौंपे जाने की तारीख से पंद्रह दिन की अवधि के भीतर, आवश्यक सत्यापन या जांच करेगा।

(9) कोई अधिकारी, उपधारा (6) के अधीन अभिगृहीत माल को कार्यवाही के दौरान, माल के मूल्य के समान रकम के लिए ऐसे अधिकारी के समाधान करने वाली प्रतिभूति देने पर, उस माल के स्वामी को या ऐसे स्वामी द्वारा सम्यक् रूप से प्राधिकृत व्यक्ति को निर्मुक्त कर सकेगा।

(10) यदि किसी अधिकारी का, जांच या सत्यापन पर यह समाधान हो गया है कि अभिगृहीत माल का लेखाजोखा नहीं दिया गया है या किसी व्यक्ति ने ऐसे माल के संबंध में कर के संदाय से अपवंचन करने का प्रयत्न किया है, तो वह उस व्यक्ति को सुनवाई का एक अवसर दिए जाने के पश्चात्, इस अधिनियम के उपबंधों के अनुसार शास्ति अधिरोपित करेगा।

(11) उपधारा (10) के अधीन निर्दिष्ट को शास्ति, किसी व्यक्ति द्वारा सूचना की तामील से तीस दिन की अवधि के भीतर जमा की जाएगी। यदि वह व्यक्ति शास्ति जमा नहीं करता है तो कोई अधिकारी, उस माल को ऐसी रीति में, जैसी विहित की जाए, विक्रय करवाएगा और धारा 37 के उपबंधों के अधीन रहते हुए, ऐसे माल के स्वामी को या उस स्वामी द्वारा सम्यक् रूप से प्राधिकृत किसी व्यक्ति को, शास्ति और कर अतिशेष के प्रतिदाय हेतु, यदि कोई हो, उसके विक्रय आगम का उपयोग करेगा। उपधारा (9) के अधीन प्रतिभूति के विरुद्ध निर्मुक्त किए गए माल की दशा में, अधिरोपित शास्ति की कोई रकम, ऐसी प्रतिभूति से वसूल की जाएगी।

(12) जहां, यथास्थिति, माल को अभिग्रहण करने वाले अधिकारी या अन्य किसी अधिकारी की यह राय है कि कोई माल शीघ्रतया और प्रकृत्या क्षयशील है या जहां, यथास्थिति, कोई कर या शास्ति इस अधिनियम के उपबंधों के अनुसार जमा नहीं की गई है, तो वह, इस अधिनियम के अन्य उपबंधों के अनुसार की जा सकने वाली किसी अन्य कार्यवाही पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना, किसी माल को विहित रीति में, लोक नीलाम द्वारा विक्रय कराएगा। ऐसे माल का विक्रय आगम, नीलाम के व्ययों हेतु और कर, शास्ति और ब्याज की रकम हेतु, यदि कोई हो, समायोजित होगा। अतिशेष, यदि कोई हो, इस अधिनियम के उपबंधों के अनुसार संबंधित व्यक्ति को प्रतिदाय होगा।

(13) इस अधिनियम में अंतर्विष्ट किसी बात के प्रतिकूल होते हुए भी, इस धारा के सभी उपबंध, किसी अरजिस्ट्रीकृत व्यक्ति को जो मूल्य वर्धित कर या व्यापार आवर्त कर के लिए रजिस्ट्रीकरण, के लिए आवेदन करने में असफल रहा है, यथावश्यक परिवर्तन सहित लागू होंगे, यदि किसी

पदाभिहित अधिकारी का किसी निश्चित सूचना के आधार पर समाधान हो जाता है।

47. संव्यवहारों की क्रास चैकिंग—(1) कर के अपवर्चन को रोकने और इस अधिनियम के उपबंधों का समुचित अनुपालन सुनिश्चित करने की दृष्टि से, कोई आयुक्त या पदाभिहित अधिकारी, समय-समय पर, किसी व्यक्ति, किन्हीं व्यक्तियों के वर्ग या समूह द्वारा किए गए विक्रयों और क्रयों के संबंध में, जानकारी एकत्र कर सकेगा और ऐसे किसी विक्रय और क्रय का क्रास चैक करवा सकेगा।

(2) उपधारा (1) में निर्दिष्ट कोई अधिकारी, समय-समय पर किसी व्यक्ति, किन्हीं व्यक्तियों के वर्ग या समूह से, किसी विशिष्ट अवधि के दौरान, उनके द्वारा किए गए विक्रय और क्रयों के संबंध में, ऐसे प्राधिकार से और ऐसी तारीख तक जैसी अपेक्षा की जाए, ऐसी जानकारी, ब्यौरे और विशिष्टियां, जैसी विहित की जाए, के दिए जाने की अपेक्षा कर सकेगा।

(3) यथास्थिति, कोई आयुक्त या पदाभिहित अधिकारी, ऐसे किन्हीं संव्यवहारों को, क्रय करने वाले और विक्रय करने वाले किन्हीं व्यक्तियों के लेखा बहियों के निर्देश से क्रास चैक करवाएगा। इस प्रयोजन के लिए, पदाभिहित अधिकारी उस व्यक्ति को, जिसकी लेखा बहियां, क्रास चैकिंग के प्रयोजन के लिए अपेक्षित है, नोटिस भेजेगा, उसमें क्रास चैक किए जाने के लिए प्रस्तावित संव्यवहार के ब्यौरे और वह समय और तारीख का कथन करेगा जिसको किसी संव्यवहार क्रास चैक करने के लिए सम्यक् रूप से प्राधिकृत कोई अधिकारी उस स्थान का निरीक्षण करेगा जहां किसी कराधेय व्यक्ति या रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति या किसी अन्य व्यक्ति द्वारा लेखा बहियां रखी जाती हैं।

48. सर्वेक्षण.—(1) उन व्यक्तियों को परिलक्षित करने की दृष्टि से, जो इस अधिनियम के अधीन कर संदाय के लिए दायी हैं किंतु अरजिस्ट्रीकृत रहे हैं, कोई आयुक्त, समय-समय पर ऐसे अरजिस्ट्रीकृत व्यक्तियों का सर्वेक्षण करवाने के लिए आदेश कर सकेगा।

(2) कोई आयुक्त या पदाभिहित अधिकारी, उपधारा (1) के अधीन सर्वेक्षण करवाने के प्रयोजन के लिए

(3) उपधारा (2) में निर्दिष्ट अधिकारी, एक सूचना जारी करके, वित्तीय संस्थाओं, बैंककारी कंपनियों और अन्य संस्थाओं द्वारा उपलब्ध कराई गई सेवाओं के ऐसे ब्यौरे और विशिष्टियां मांग सकेगा, जो सर्वेक्षण के प्रयोजन के लिए सुसंगत और उपयोगी होंगी। वह, समय-समय पर, सर्वेक्षण के परिणामों को ऐसी किसी रीति से प्रकाशित करा सकेगा, जो वह उपयुक्त समझे। तथापि, ऐसे प्रकाशन में सर्वेक्षण के दौरान पता लगाए गए किसी विशिष्ट अरजिस्ट्रीकृत व्यक्ति की पहचान को प्रकट या उपदर्शित नहीं किया जाएगा।

(4) उपधारा (2) में निर्दिष्ट अधिकारी, सर्वेक्षण के प्रयोजन के लिए, ऐसे किसी व्यक्ति के, जो रजिस्ट्रीकृत नहीं है या जिसने इस अधिनियम के अधीन रजिस्ट्रीकरण के लिए आवेदन नहीं किया है, कारबार के स्थान में, इस बात पर ध्यान दिए बिना कि ऐसा स्थान किसी व्यक्ति के कारबार का प्रधान स्थान है या नहीं, प्रवेश कर सकेगा और वह किसी स्वत्वधारी, भागीदार, कर्मचारी या किसी अन्य व्यक्ति से, जो किसी समय किसी भी रीति में कारबार में सम्मिलित रहा हो या उसमें सहायता कर रहा हो,—

(क) ऐसी लेखाबहियों का, जिनकी वह अपेक्षा करे या जो ऐसे स्थान पर उपलब्ध हो सकती हैं, निरीक्षण करने के लिए उसे आवश्यक सुविधा उपलब्ध कराने;

(ख) नकदी, स्टॉक या अन्य मूल्यवान वस्तुओं की, जो वहां पाई जाएं, जांच या सत्यापन करने के लिए उसे आवश्यक सुविधा प्रदान करने; और

(ग) ऐसी सूचना देने की (जिसकी किसी विषय के संबंध में उससे अपेक्षा हो और जो इस अधिनियम के अधीन किन्हीं कार्यवाहियों के लिए उपयोगी या उससे सुसंगत हो),

अपेक्षा कर सकेगा।

स्पष्टीकरण—कारबार के किसी स्थान के अंतर्गत ऐसा कोई अन्य स्थान भी है, जिसमें कारबार में लगा व्यक्ति या कारबार में सम्मिलित या सहायता कर रहा उक्त कर्मचारी या अन्य व्यक्ति यह कथन करता है कि उसमें कारबार संबंधित कोई लेखाबहियां या अन्य दस्तावेज अथवा नकदी का कोई भाग, स्टॉक या अन्य मूल्यवान वस्तुएं या चीजें रखी जाती हैं या रखी हैं।

(5) उपधारा (2) में निर्दिष्ट अधिकारी, सूर्योदय के पश्चात् और सूर्यास्त से पूर्व केवल उसी समय के दौरान ही कारबार के स्थान पर प्रवेश करेगा, या जब ऐसा स्थान कारबार के लिए खुला हो। आयुक्त या अभिहित अधिकारी उसके द्वारा निरीक्षण की गई लेखाबहियों और अन्य दस्तावेजों से उद्धरण या प्रतियां तैयार करेगा या तैयार कराएगा, उसके द्वारा जांच की गई या सत्यापित किसी नकदी, स्टॉक या अन्य मूल्यवान वस्तुओं या चीजों की सूची तैयार करेगा और किसी व्यक्ति का ऐसा कथन अभिलिखित करेगा, जो इस अधिनियम के अधीन किन्हीं कार्यवाहियों के लिए उपयोगी और उससे सुसंगत हो।

(6) उपधारा (2) में निर्दिष्ट अधिकारी, इस धारा के अधीन प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, उस स्थान से, जहां उसने प्रवेश किया है, किन्हीं लेखाबहियों, अन्य दस्तावेजों या किसी नकदी, स्टॉक या अन्य मूल्यवान वस्तुओं या चीजों को किसी भी कारण से नहीं हटाएगा या हटाने नहीं देगा।

49. आंकड़ों के संग्रहण की शक्ति—(1) आयुक्त, इस अधिनियम के बेहतर प्रशासन के लिए, यह निदेश दे सकेगा कि इस अधिनियम के अधीन किसी विषय से संबंधित आंकड़े संगृहीत किए जाएं।

(2) उपधारा (1) के अधीन निदेश दिए जाने पर, आयुक्त या अभिहित अधिकारी, यदि आवश्यक पाया जाए, प्रमुख समाचार-पत्रों में सूचना द्वारा या ऐसी अन्य रीति से, जो आयुक्त या अभिहित अधिकारी ठीक समझे, सभी व्यक्ति या व्यक्तियों के किसी वर्ग या समूह से ऐसी जानकारी

या विवरणियां देने का अनुरोध कर सकेगा, जो आंकड़ों के संग्रहण के प्रयोजन के लिए उसमें वर्णित की जाएं।

(3) पूर्वगामी उपबंधों की व्यापकता पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना, राज्य सरकार यह उपबंध कर सकेगी कि इस अधिनियम के अधीन रजिस्ट्रीकृत प्रत्येक व्यक्ति या व्यक्ति-समूह, ऐसी किंहीं अन्य विवरणियों के, जिनके लिए कहीं और उपबंध किया गया है, अतिरिक्त ऐसे प्ररूप में, उस तारीख तक और उस प्राधिकारी को, जो अधिसूचित किया जाए, एक वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत करेगा और विभिन्न व्यक्तियों के वर्गों या समूह के लिए भिन्न-भिन्न उपबंध किए जा सकेंगे।

50. लोक हित में सूचना का प्रकाशन और प्रकटन—(1) धारा 69 में किसी बात के होते हुए भी, यदि राज्य सरकार की यह राय है कि किसी व्यक्ति या व्यक्तियों के नामों और ऐसे व्यक्ति या व्यक्तियों के संबंध में इस अधिनियम के अधीन किन्हीं कार्यवाहियों से संबंधित किंहीं अन्य विशिष्टियों का प्रकाशित किया जाना या प्रकट किया जाना लोक हित में आवश्यक या समीचीन है तो वह ऐसे नाम और विशिष्टियों को ऐसी रीति से, जो वह लोक समझे, प्रकाशित या प्रकट कर सकेगी अथवा प्रकाशित या प्रकट करवा सकेगी।

(2) इस धारा के अधीन कोई प्रकाशन या प्रकटन इस अधिनियम के अधीन किसी कार्यवाही से संबंधित किसी अपराध के लिए उद्गृहीत किसी कर या अधिरोपित शास्ति या उद्गृहीत ब्याज या अधिरोपित किसी दोषसिद्धि के संबंध में तब तक नहीं किया जाएगा जब तक यदि अपील फाइल नहीं की गई है तो समुचित अपील प्राधिकारी को अपील करने का समय समाप्त हो गया है या यदि अपील फाइल की गई है तो उसका निपटारा कर दिया गया है।

स्पष्टीकरण—किसी फर्म, कंपनी या व्यक्ति-संगम की दशा में, यथास्थिति, फर्म के भागीदारों, कंपनी के निदेशकों, प्रबंध अधिकारताओं, सचिवों, बोधधक्षों या प्रबंधकों अथवा संगम के सदस्यों के नाम भी प्रकाशित या प्रकट किए जा सकेंगे, यदि राज्य सरकार की राय में मामले की परिस्थितियों के अनुसार ऐसा करना न्यायोचित है।

अध्याय 9

सूचना संग्रहण केंद्रों की स्थापना

51. संग्रहण केंद्रों या जाँच चौकियों की स्थापना और अभिवहन में माल का निरीक्षण.—(1) यदि इस अधिनियम के अधीन कर से बचने या उसकी अपवचना, के निवारण या उसे रोकने की दृष्टि से राज्य सरकार ऐसा करना आवश्यक समझती है तो वह अधिसूचना द्वारा, ऐसे स्थान या स्थानों पर, जो अधिसूचना में विनिर्दिष्ट किए जाएं, जाँच चौकी या सूचना संग्रहण केंद्र या दोनों की स्थापना के लिए निदेश दे सकेगी।

(2) माल का स्वामी या भारसाधक व्यक्ति अपने साथ, यथास्थिति, माल वाहन अभिलेख, माल रसीद, यात्रा पत्रक या लॉग बुक और कारबार के प्रयोजन के लिए आशयित ऐसे माल के संबंध में, जो माल वाहन में ले जाए जा रहे हैं, ऐसी विशिष्टियों वाले, जो विहित की जाएं, विक्रय बीजक या बिल या नकद पत्र या परिदान चालान रखेगा और पूर्वोक्त प्रत्येक दस्तावेज की एक प्रति किसी स्थान पर वाहन की जांच करने वाले उत्पाद-शुल्क और करधान अधिकारी की पंक्ति से अनिम्न पंक्ति के किसी अधिकारी या जाँच चौकी या सूचना संग्रहण केंद्र के भारसाधक अधिकारी को पेश करेगा :

परंतु अंतरराष्ट्रिय व्यापार या वाणिज्य के क्रम में राज्य के भीतर या बाहर से माल का विक्रय करने वाला कोई व्यक्ति ऐसी विशिष्टियों सहित, जो विहित की जाएं, एक घोषणा प्रस्तुत करेगा या प्रस्तुत करवाएगा :

परंतु यह और कि कोई कराधेय व्यक्ति, जो राज्य के भीतर से राज्य के बाहर किसी स्थान में किसी माल का विक्रय करता है या प्रेषण करता है या राज्य के बाहर से माल आयात करता है या लाता है या अन्यथा प्राप्त करता है, अभिहित अधिकारी से अभिप्राप्त, सम्यक् रूप से भरे हुए और हस्ताक्षरित, निर्दिष्ट प्रारूप में, माल की विशिष्टियां प्रस्तुत करेगा।

(3) प्रत्येक जाँच चौकी या सूचना संग्रहण केंद्र में या किसी अन्य स्थान में जब उपधारा (2) में निर्दिष्ट किसी अधिकारी द्वारा ऐसा अपेक्षित हो, माल वाहन का ड्राइवर या कोई अन्य भारसाधक व्यक्ति वाहन को रोकेगा और उतने समय तक, जितना युक्तियुक्त रूप से आवश्यक हो, उसे रोके रखेगा तथा जाँच चौकी या सूचना संग्रहण केंद्र के भारसाधक अधिकारी या पूर्वोक्त अधिकारी को पैकेज या पैकेजों को खोलकर, यदि आवश्यक हो, वाहन में की सामग्रियों की जांच करने और ले जाए जाने वाले माल से संबंधित ऐसे सभी अभिलेखों की, जो ड्राइवर या किसी अन्य व्यक्ति के कब्जे में हो, जिनकी पूर्वोक्त अधिकारी द्वारा अपेक्षा की जाए, निरीक्षण करने देगा और यदि आवश्यक समझा जाए, तो ऐसा अधिकारी भी माल वाहन और वाहन या माल के भारसाधक अन्य व्यक्ति या ड्राइवर की तलाशी लेगा।

(4) राज्य की सीमाओं में प्रवेश करने वाले या सीमाओं को छोड़ने वाले किसी माल वाहन का स्वामी या भारसाधक व्यक्ति, यथास्थिति, निकटतम जाँच चौकी या सूचना संग्रहण केंद्र में उसे रोकेगा और जाँच चौकी या सूचना संग्रहण केंद्र के भारसाधक अधिकारी के समक्ष ले जाए जा रहे माल के संबंध में दस्तावेजों सहित उपधारा (2) में उल्लिखित घोषणा तीन प्रतियों में प्रस्तुत करेगा। भारसाधक अधिकारी उसके द्वारा सम्यक् रूप से सत्यापित घोषणा की एक प्रति माल वाहन के स्वामी या भारसाधक व्यक्ति को दस्तावेजी जांच, यदि कोई हो, के समय उसे पेश करने में समर्थ बनाने के लिए वापस करेगा :

परंतु जहां राज्य के बाहर किसी स्थल के लिए जाने वाला माल वाहन राज्य से गुजरता है, वहां ऐसे वाहन का स्वामी या भारसाधक व्यक्ति जाँच चौकी या सूचना संग्रहण केंद्र के भारसाधक अधिकारी को राज्य में अपने प्रवेश के संबंध में विहित प्ररूप में दो प्रतियों में एक सूचना प्रस्तुत करेगा और उसकी सम्यक् रूप से सत्यापित एक प्रति उससे प्राप्त करेगा। माल वाहन का स्वामी या भारसाधक व्यक्ति अड़तालीस घंटे के भीतर पूर्वोक्त प्रति को राज्य से उसकी निकासी के स्थल पर जाँच चौकी या सूचना संग्रहण केंद्र के भारसाधक अधिकारी को परिदत्त करेगा, जिसके न करने पर वह जाँच

चौकी या सूचना संग्रहण केंद्र के भारसाधक अधिकारी द्वारा किए गए आदेश द्वारा अधिरोपित की जाने वाली अंतर्वर्तित माल के मूल्य के पचास प्रतिशत के बराबर शास्ति का संदाय करने के लिए दायी होगा :

परंतु यह और कि जहां ऐसे वाहन द्वारा वहन किया गया माल राज्य में उसके प्रवेश के पश्चात् किसी अन्य वाहन या यान द्वारा राज्य से बाहर अभिवहन किया जाता है, वहां यह साबित करने का भार कि माल वास्तव में राज्य से बाहर ले जाया गया है, वाहन के स्वामी या भारसाधक व्यक्ति पर होगा:

परंतु यह और कि कोई शास्ति तब तक अधिरोपित नहीं की जाएगी जब तक संबंधित व्यक्ति को सुने जाने का अवसर न दे दिया गया हो।

(5) माल के अभिवहन के प्रत्येक केंद्र, बस स्टैंड या माल की लदाई या उताराई के स्थान पर, जब आयुक्त या अभिहित अधिकारी द्वारा ऐसी अपेक्षा की जाए, माल वाहन का ड्राइवर या स्वामी या परिवहन कंपनी या माल बुकिंग अभिकरण का कर्मचारी परिशिष्ट रसीदों और परिवहन के लिए चढ़ाए गए, उतारे गए, परेपित या प्राप्त, वहन किए गए माल से संबंधित सभी अन्य दस्तावेज और लेखा बहियां, जो विहित रीति में उसके पास रखी गई हैं, जांच के लिए प्रस्तुत करेगा। आयुक्त या अभिहित अधिकारी को यह जांच करने के प्रयोजन के लिए कि ऐसी परिवहन रसीदें या अन्य दस्तावेज या लेखा बहियां वहन किए गए, परिवहन किए गए, चढ़ाए गए या उतारे गए या परेपित या अभिवहन के लिए प्राप्त माल के संबंध में हैं, ऐसे माल के किसी पैकेज या पैकेजों को खोलने की शक्ति होगी।

(6) (क) यदि जांच चौकी या सूचना संग्रहण केंद्र के भारसाधक अधिकारी या उपधारा (2) में यथावर्णित किसी अन्य अधिकारी के पास यह संदेह करने के कारण है कि अभिवहनाधीन माल व्यापार के लिए आशयित है और उसके साथ उपधारा (2) या उपधारा (4) में यथा उल्लिखित उचित और सही दस्तावेज नहीं है या माल का अभिवहन करने वाला व्यक्ति कर के संदाय में अपवचना करने का प्रयास कर रहा है तो वह लेखबद्ध किए जाने वाले कारणों से और संबंधित व्यक्ति की सुनवाई करने के पश्चात् बहतर घंटों से अनधिक की अवधि के लिए वाहन सहित माल को निरुद्ध करने का आदेश कर सकेगा। ऐसा माल परेपक या परेपिती द्वारा विहित प्ररूप और रीति में प्रतिभूति देने पर या प्रतिभूतियों सहित एक बंधपत्र निष्पादित करने पर, यदि ड्यूटी अधिकारी के समाधानप्रद रूप में इस अधिनियम के अधीन रजिस्ट्रीकृत है, निर्मुक्त किया जाएगा और यदि परेपक या परेपिती इस अधिनियम के अधीन रजिस्ट्रीकृत नहीं है तो नकद या बैंक प्रतीभूति या क्रास बैंक ड्राफ्ट के रूप में प्रतिभूति देने पर, जो निकटतम सौ रुपए तक संगणित किए गए उद्ग्रहणीय शास्ति की रकम के बराबर होगी, निर्मुक्त किया जाएगा।

(ख) यदि माल के स्वामी या भारसाधक व्यक्ति ने उपधारा (2) या उपधारा (4) में यथा उल्लिखित दस्तावेजों को राज्य में अपने प्रवेश या उससे निकासी से पूर्व राज्य में, यथास्थिति, निकटतम जांच चौकी या सूचना संग्रहण केंद्र में प्रस्तुत नहीं किया है तो ऐसे माल को उपधारा (7) के खंड (ग) के अधीन आदेशों के अधीन रहते हुए बहतर घंटे से अनधिक की अवधि के लिए वाहन के साथ निरुद्ध किया जाएगा।

(7) (क) उपधारा (6) के अधीन माल को निरुद्ध करने वाला अधिकारी माल के परेपक या परेपिती या अपने प्रतिनिधि या माल वाहन के ड्राइवर या भारसाधक अन्य व्यक्ति द्वारा किए गए कथन को, यदि कोई हो, अभिलिखित करेगा और निरुद्धता की बहतर घंटे की अवधि के भीतर अपने कार्यालय में अपने समक्ष संयवहार की शुद्धता को सप्रति करने की उससे अपेक्षा करेगा। तत्पश्चात् उक्त अधिकारी शीघ्रता से संबंधित अभिलेखों सहित कार्यवाहियों को अभिहित अधिकारी को मामले में आवश्यक जांच संचालित करने के लिए प्रस्तुत करेगा।

(ख) अभिहित अधिकारी जांच संचालित करने से पूर्व उपधारा (6) के खंड (क) के अधीन निरुद्ध माल के परेपक या परेपिती पर एक सूचना की तामील करेगा और उसे सुनवाई का अवसर देगा और ऐसी जांच के पश्चात् ऐसा अधिकारी यह पाता है कि इस खंड के अधीन देय या संभवतः देय कर से बचने या उसकी अपवचना करने का प्रयास किया गया है तो वह, आदेश द्वारा, माल के परेपक या परेपिती पर ऐसी शास्ति अधिरोपित करेगा, जो माल के मूल्य के तीस प्रतिशत के बराबर होगी। यदि वह अन्यथा पाता है तो वह कारणों को लेखबद्ध करने के पश्चात् माल और वाहन को, यदि पहले निर्मुक्त नहीं किया गया है, निर्मुक्त करने का आदेश करेगा और जांच कार्यवाहियों के प्रारंभ के चौदह दिन की अवधि के भीतर मामले का अंतिम रूप से विनिश्चय करेगा।

(ग) खंड (ख) में निर्दिष्ट अधिकारी जांच संचालित करने से पूर्व उपधारा (6) के खंड (क) के अधीन निरुद्ध माल के परेपक या परेपिती को एक सूचना की तामील और उसे सुनवाई का अवसर देगा और यदि जांच के पश्चात् ऐसे अधिकारी का यह समाधान हो जाता है कि उपधारा (2) और उपधारा (4) के अधीन यथा अपेक्षित दस्तावेजों को, इस अधिनियम के अधीन देय या संभवतः देय कर से बचने या उसकी अपवचना करने के प्रयास के उद्देश्य से, यथास्थिति, सूचना संग्रहण केंद्र या जांच चौकी पर नहीं दिया गया था, तो वह आदेश द्वारा, लेखबद्ध किए जाने वाले कारणों से माल के परेपक या परेपिती पर अंतर्वर्तित माल के मूल्य के पचास प्रतिशत के बराबर शास्ति अधिरोपित करेगा। यदि वह अन्यथा पाता है तो वह लेखबद्ध किए जाने वाले पर्याप्त कारणों से माल को निर्मुक्त करने के आदेश करेगा। तथापि, वह परेपक या शापिती द्वारा अधिरोपणीय शास्ति की रकम के बराबर रकम के लिए नकद या बैंक प्रतिभूति या क्रास बैंक ड्राफ्ट के रूप में एक प्रतिभूति देने पर माल और वाहन की निर्मुक्ति का आदेश कर सकेगा और जांच करने के आदेश से चौदह दिन की अवधि के भीतर माल का अंतिम रूप से विनिश्चय करेगा।

(घ) जांच चौकी या सूचना संग्रहण केंद्र का भारसाधक अधिकारी या उपधारा (2) में निर्दिष्ट कोई अन्य अधिकारी, उपधारा (6) के खंड (क) और उपधारा (7) के खंड (ग) में निर्दिष्ट नकद प्रतिभूति की रकम तथा उपधारा (4) और उपधारा (7) के खंड (ख) और खंड (ग) के अधीन अधिरोपित शास्ति की रकम विहित रीति में एक उपयुक्त रसीद के बदले प्राप्त कर सकेगा।

स्पष्टीकरण—निरुद्ध माल और वाहन उपधारा (6) और उपधारा (7) में निर्दिष्ट अवधि से परे तब तक इस प्रकार निरुद्ध बना रहेगा जब तक कि वह निरुद्ध करने वाला अधिकारी या जांच अधिकारी द्वारा प्रतिभू या प्रतिभूति के बदले निर्मुक्त न किया गया हो या अधिरोपित शास्ति वसूल न कर दी गई हो या जांच अधिकारी ने जांच के पश्चात् निरुद्ध माल के निर्मोचन का आदेश न कर दिया हो, उनमें से जो भी पूर्वतर हो।

(8) माल के परेपक या परेपिती द्वारा उपधारा (7) के अधीन अधिरोपित शास्ति का, शास्ति अधिरोपित करने वाले आदेश की उसको

संसूचना की तारीख से तीस दिन के भीतर संदाय न किए जाने की दशा में निरुद्ध माल उस अधिकारी द्वारा, जिसने शास्ति अधिरोपित की है, शास्ति की वसूली के लिए विहित रीति में सार्वजनिक नीलामी द्वारा विक्रीत किए जाने के लिए दायी होगा। यदि निरुद्ध माल नाशवान प्रकृति के हैं या शीघ्र या प्राकृतिक ह्रास के अधीन हैं या उन्हें अभिरक्षा में रखने का व्यय उनके मूल्य से अधिक होने की संभावना है तो, यथास्थिति, जाँच चौकी या सूचना संग्रहण केंद्र का भारसाधक अधिकारी या उपधारा (2) में निर्दिष्ट कोई अन्य अधिकारी शीघ्र परेषक या परेषिती को विहित रीति में सूचना देने में पश्चात् ऐसे माल का विक्रय करने या उनका अन्यथा व्ययन करने का आदेश करेगा। विक्रय आगम राज्य सरकार के खजाने में जमा किए जाएंगे और माल के परेषक या परेषिती शास्ति, ब्याज और व्ययों तथा माल को निरुद्ध रखने और उनका व्ययन करने में उपगत अन्य आनुषंगिक प्रभारों की कटौती करने के पश्चात् केवल विक्रय मूल्यों की शेष रकम के लिए हकदार होगा :

परंतु यदि माल का परेषक या परेषिती माल का दावा करने के लिए आगे नहीं आता है तो समस्त विक्रय आगम राज्य सरकार के खजाने में जमा किए जाएंगे और विक्रय आगमों की शेष रकम के लिए किसी व्यक्ति के किसी दावे को ग्रहण नहीं किया जाएगा।

(9) माल को निरुद्ध करने वाला अधिकारी माल के स्वामी या उसके प्रतिनिधि या माल वाहन के ड्राइवर या भारसाधक व्यक्ति को इस प्रकार निरुद्ध किए गए माल का विवरण और मात्रा विनिर्दिष्ट करते हुए एक रसीद जारी करेगा और ऐसे व्यक्ति से अभिस्वीकृति प्राप्त करेगा यदि ऐसा व्यक्ति अभिस्वीकृति देने से इंकार करता है तो साक्षियों की उपस्थिति से इंकार के तथ्य को अभिलिखित करेगा।

(10) यदि उपधारा (6) के अधीन माल को निरुद्ध करने या उपधारा (4) या उपधारा (7) के अधीन शास्ति के अधिरोपण का आदेश या उपधारा (8) के अधीन आदेश इस बीच अपील या अन्य कार्यवाहियों में अपास्त या उपांतरित कर दिया जाता है तो शास्ति अधिरोपित करने वाला अधिकारी, यथास्थिति, ऐसी अपील या अन्य कार्यवाहियों में आदेशों को प्रभावी करेगा।

(11) कोई व्यक्ति या कोई व्यष्टि, जिसके अंतर्गत कोई माल वाहक या किसी परिवहन कंपनी या बुकिंग अभिकरण का अभिकर्ता भी है, जो कराधेय व्यक्ति की ओर से कार्य कर रहा है, या कोई रजिस्ट्रीकृत, व्यक्तिगत सामान या व्यक्तिगत उपभोग के लिए माल से भिन्न ऐसे माल के किसी प्रेषण का परिदान नहीं लेगा या किसी स्टेशन, विमानपत्तन या किसी अन्य स्थान से चाहे समान प्रकृति का हो या अन्यथा, जिसका विक्रय या क्रय इस अधिनियम के अधीन कराधेय है, ऐसी शर्तों के अनुसार करने के सिवाय, जो विहित की जाए, यह सुनिश्चित करने की दृष्टि से उसका परिवहन नहीं करेगा कि इस अधिनियम द्वारा या इसके अधीन अधिरोपित कर से बचा नहीं गया है या उसका अपवर्चन नहीं होती है।

(12) जहां कोई परिवहक उपधारा (2) के अधीन यथा अपेक्षित माल के परेषक या परेषिती के बारे में, ऐसे समय के भीतर, जो विनिर्दिष्ट किया जाए, सूचना देने में असफल रहता है या दस्तावेजों के बिना अथवा गलत दस्तावेजों के साथ माल का परिवहन करता है, वहां वह इस धारा के अधीन उद्ग्रहणीय शास्ति के अतिरिक्त, इस अधिनियम के अधीन लागू मूल्यवर्धित कर की दर से ऐसे माल पर देय कर का संदाय करने के लिए दायी होगा।

(13) इस अधिनियम के उपबंध कर के उद्ग्रहण और संग्रहण, ब्याज के अवधारण और कर तथा ब्याज की वसूली के प्रयोजन के लिए परिवहक को लागू होंगे।

सप्टीकरण—(1) इस धारा के प्रयोजनों के लिए, जहां माल का परिदान परिवहन के लिए किसी वाहक, माल बुकिंग अभिकरण या किसी अन्य उपनिहिती को किया जाता है, वहां माल का संचलन ऐसे परिदान के समय प्रारंभ हुआ और यथास्थिति, ऐसे वाहक, माल बुकिंग अभिकरण या किसी अन्य उपनिहिती से ऐसा परिदान किए जाने के समय समाप्त हुआ समझा जाएगा।

(2) उपधारा (7) के प्रयोजन के लिए, स्वामी के प्रतिनिधि या माल वाहन के ड्राइवर या भारसाधक अन्य व्यक्ति पर सूचना की तामील, माल के परेषक या परेषिती पर विधिमान्य रूप से तामील की गई मानी जाएगी।

अध्याय 10

अपराध और शास्ति

52. रजिस्टर कराने में असफलता के लिए शास्ति.—जो कोई, धारा 21 की उप-धारा (2) के अधीन यथाअपेक्षित रजिस्ट्रीकरण के लिए आवेदन करने में असफल रहता है, वह देय कर के अतिरिक्त, उस तारीख से, जिसको वह व्यक्ति, यथास्थिति, कराधेय व्यक्ति या रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति के रूप में रजिस्ट्रीकरण के लिए दायी हो जाता है, रजिस्ट्रीकरण के लिए आवेदन करने तक, संदेय कर और ब्याज की रकम के बराबर शास्ति के लिए दायी होगा।

53. कर का, देय होने पर संदाय करने में असफलता के लिए शास्ति.—यदि इस अधिनियम के अधीन रजिस्ट्रीकृत कोई व्यक्ति, इस अधिनियम के उपबंधों के अनुसार कर की रकम का संदाय करने में असफल रहता है, तो वह उसके द्वारा संदेय कर और ब्याज के अतिरिक्त, कर पर उस तारीख से, जिसको यह देय हो गया था, उसके संदाय की तारीख तक या निर्धारण के आदेश की तारीख तक, इनमें से जो भी पूर्वतर हो, दो प्रतिशत प्रतिमास की दर से शास्ति का संदाय करने के लिए दायी होगा। इस धारा के अधीन संदेय शास्ति की रकम की संगणना, किसी मास के भाग को एक मास के रूप में मानते हुए की जाएगी।

54. विवरणी या वार्षिक विवरण फाइल करने में असफलता के लिए शास्ति.—यदि इस अधिनियम के अधीन रजिस्ट्रीकृत कोई व्यक्ति या कोई अन्य व्यक्ति, जो विवरणी या वार्षिक विवरण देने के लिए अपेक्षित है, पर्याप्त कारण के बिना,—

(क) विहित तारीख तक कोई विवरणी या वार्षिक विवरण देने में असफल रहता है ; या

(ख) इस अधिनियम के उपबंधों के अनुसार विवरणी या वार्षिक विवरण के साथ कर के संदाय का सबूत देने में असफल रहता है ; या

(ग) इस अधिनियम के उपबंधों के अनुसार किसी विवरणी या वार्षिक विवरण में किसी त्रुटि या लोप का सुधार करने में असफल रहता है; या

(घ) इस अधिनियम के अधीन जारी की गई किसी सूचना की अपेक्षाओं का अनुपालन करने में असफल रहता है,

तो आयुक्त या अभिहित अधिकारी, उसे इस अधिनियम के किसी अन्य उपबंधों के अधीन कर, ब्याज, शास्ति के अतिरिक्त, व्यतिक्रम के प्रत्येक दिन के लिए, अधिकतम दस हजार रुपए के अधीन रहते हुए, एक सौ रुपए की राशि की अतिरिक्त शास्ति का संदाय करने का निदेश दे सकेगा।

55. कर के अप्राधिकृत संदाय के लिए शास्ति.—जहां कोई व्यक्ति इस अधिनियम के उपबंधों के उल्लंघन में कर का संग्रहण करेगा, वह इस प्रकार संगृहीत कर के डेढ़ गुना के बराबर राशि का, शास्ति के रूप में संदाय करने के लिए दायी होगा।

56. कर के अपवंचन के लिए शास्ति.—यदि आयुक्त या अभिहित अधिकारी का यह समाधान हो जाता है कि व्यक्ति ने, कर के संदाय का अपवंचन करने या उससे बचने के लिए,—

(क) उसके द्वारा दी गई किसी विवरणी से किन्हीं विशिष्टियों को छिपाया है; या

(ख) जानबूझकर उसमें गलत विशिष्टियां दी हैं; या

(ग) अपनी खाता-बहियों से विक्रय या क्रय के किन्हीं संव्यवहारों को छिपाया है; या

(घ) बोधगम्य लेखे नहीं रखे हैं, जिससे आयुक्त या अभिहित अधिकारी को उससे शोध्य कर का निर्धारण करने में बाधा पड़ती है; या

(ङ) उसने निवेश कर प्रत्यय का उपभोग किया है, जिसके लिए वह पात्र नहीं है; या

(च) प्रतिदाय का दावा किया है, जो उसे देय नहीं था; या

(छ) ऐसे कर के संबंध में, जो वास्तव में संदत्त नहीं किया गया था; मुजरा के लिए दावा किया है,

तो वह यह निदेश देगा कि वह व्यक्ति, उसके द्वारा संदेय कर और ब्याज के अतिरिक्त, पूर्वोक्त कारणों मद्दे निर्धारित कर की दुगुनी रकम के बराबर राशि का शास्ति के रूप में संदाय करेगा।

57. बीजक जारी करने में असफलता और मिथ्या बीजक के प्रयोग के लिए शास्ति.—(1) ऐसा कोई व्यक्ति, जो धारा 45 के अधीन यथा अपेक्षित किसी विक्रय संव्यवहार के लिए बीजक जारी करने में असफल रहता है वह, दो हजार रुपए या संव्यवहार में अंतर्वर्तित कर की दुगुनी रकम की, इनमें से जो भी अधिक हो, शास्ति का संदाय करने के लिए दायी होगा।

(2) ऐसा कोई व्यक्ति, जो कोई मिथ्या बीजक जारी करता है या किसी बीजक को, यह जानते हुए कि ऐसा बीजक मिथ्या है, प्राप्त या उपयोग करता है, वह पांच हजार रुपए या मिथ्या बीजक में अंतर्वर्तित कर की दुगुनी रकम की, इनमें से जो भी अधिक हो, शास्ति का संदाय करने के लिए दायी होगा।

58. रजिस्ट्रीकरण संख्यांक के दुरुपयोग के लिए शास्ति.—कोई व्यक्ति, जो जानबूझकर मिथ्या मूल्य वर्धित कर संख्यांक या टी.ओ.टी. रजिस्ट्रीकरण संख्यांक का उपयोग करता है या देय कर के संदाय का अपवंचन करने की दृष्टि से किसी दूसरे व्यक्ति के रजिस्ट्रीकरण संख्यांक का उपयोग करता है, वह देय कर के अतिरिक्त, इस संबंध में अपवंचन किए गए कर की रकम के बराबर शास्ति का संदाय करने के लिए दायी होगा।

59. निर्धारित मांग के असंदाय के लिए शास्ति.—जहां कोई व्यक्ति, निर्धारित कर या उद्गृहीत ब्याज या उस पर अधिरोपित शास्ति का या इस अधिनियम के अधीन उससे शोध्य किसी अन्य रकम का, मांग की सूचना की तामील की तारीख से तीस दिन की अवधि के भीतर संदाय करने में असफल रहता है, वहां वह देय ब्याज और रकम के अतिरिक्त, उस अवधि के लिए, जिसके लिए संदाय को, उस तारीख के पश्चात् जिसको ऐसी रकम संदत्त किए जाने के लिए देय थी, देय कर, शास्ति, ब्याज की ऐसी रकम के या किसी अन्य रकम के दो प्रतिशत प्रतिमास के बराबर राशि का शास्ति के रूप में संदाय करने के लिए दायी होगा।

60. कहीं और न आने वाले मामलों में शास्ति.—(1) जो कोई, इस अधिनियम या तद्धीन बनाए गए नियमों के किसी उपबंध या तद्धीन किए गए किसी आदेश या दिए गए निदेश का उल्लंघन करेगा या उसका पालन करने में असफल रहेगा, यदि ऐसे उल्लंघन या असफलता के लिए इस अधिनियम के अधीन किसी अन्य शास्ति का उपबंध नहीं किया गया है तो वह न्यूनतम एक हजार रुपए के अधीन रहते हुए, दस हजार रुपए से अनधिक की शास्ति का संदाय करने के लिए दायी होगा।

(2) जहां ऐसा उल्लंघन या असफलता उसके पश्चात् भी जारी रहती है वहां ऐसा व्यक्ति, उपधारा (1) के अधीन शास्ति के संदाय के लिए विनिर्दिष्ट देय तारीख से एक सौ रुपए प्रति दिन की और शास्ति का संदाय करने के लिए दायी होगा।

61. शास्ति अधिरोपित करने के लिए सक्षम प्राधिकारी.—आयुक्त या अभिहित अधिकारी, इस अधिनियम के अधीन शास्ति अधिरोपित करने के लिए सक्षम प्राधिकारी होगा। तथापि, कोई शास्ति तब तक अधिरोपित नहीं की जाएगी, जब तक कि संबंधित व्यक्ति को सूचना की तामील करके सुनवाई का अवसर न दे दिया गया हो।

अध्याय 11

अपील और पुनरीक्षण

62. प्रथम अपील.—(1) इस अधिनियम या तद्धीन बनाए गए नियमों के अधीन पारित प्रत्येक मूल आदेश के विरुद्ध अपील

निम्नलिखित को होगी,—

(क) यदि आदेश उत्पाद और कराधान अधिकारी या सूचना संग्रहण केंद्र या जांच चौकी या उत्पाद और कराधान उपायुक्त की पंक्ति से नीचे की पंक्ति के किसी अन्य अधिकारी द्वारा किया गया है तो उत्पाद और कराधान आयुक्त को; या

(ख) यदि आदेश उत्पाद और कराधान उपायुक्त द्वारा किया गया है तो आयुक्त को; या

(ग) यदि आदेश आयुक्त या आयुक्त की शक्तियों का प्रयोग करने वाले किसी अधिकारी द्वारा किया गया है तो अधिकरण को।

(2) उत्पाद और कराधान उपायुक्त या आयुक्त या किसी ऐसे अधिकारी द्वारा, जिसे आयुक्त की शक्तियां प्रदत्त की गई हैं, अपील में पारित कोई आदेश अधिकरण में आगे अपीलीय होगा।

(3) अधिकरण का प्रत्येक आदेश और ऐसे आदेश की केवल विषय-वस्तु, आयुक्त या आयुक्त की शक्तियों का प्रयोग करने वाले किसी अधिकारी का आदेश या उत्पाद और कराधान उपायुक्त या अभिहित अधिकारी का आदेश, यदि उसे अपील या पुनरीक्षण में चुनौती नहीं दी गई थी, तो अंतिम होगा।

(4) कोई अपील तब तक ग्रहण नहीं की जाएगी, जब तक कि उसे, उस आदेश की, जिसके विरुद्ध अपील की गई है, संसूचना की तारीख से तीस दिन की अवधि के भीतर फाइल न किया गया हो।

(5) कोई अपील तब तक ग्रहण नहीं की जाएगी, जब तक कि उस अपील के साथ कर, शास्ति और ब्याज, यदि कोई हो, की कुल रकम के पच्चीस प्रतिशत के पूर्व न्यूनतम संदाय का समाधान प्रदत्त न हो।

(6) उपधारा (5) में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी, यदि अपील प्राधिकारी का यह समाधान हो जाता है कि किसी व्यक्ति से शोध कर, शास्ति और ब्याज की संपूर्ण रकम का, किसी अपील को ग्रहण करने से पूर्व जमा किया जाना अपेक्षित है, तो वह अपील को ग्रहण करने के पूर्व शर्त के रूप में कर, शास्ति और ब्याज की शेष रकम का संदाय करने का आदेश कर सकेगा।

(7) अपील का निपटारा करते समय, अपील प्राधिकारी, पक्षकारों को सुने जाने का अवसर देने के पश्चात्—

(क) अपीलाधीन निर्धारण आदेश को अभिपुष्ट करने या उसे संशोधित या रद्द करने का आदेश करेगा; या

(ख) ऐसा आदेश पारित कर सकेगा, जो वह न्यायसंगत और उपयुक्त समझे।

(8) अपील प्राधिकारी, अपील का विनिश्चय करते समय सकारण आदेश पारित करेगा और आदेश की प्रतियां अपीलार्थी और उस अधिकारी का भेजेगा, जिसका आदेश की विषय-वस्तु था।

63. अधिकरण को अपील.—(1) इस अधिनियम के अधीन किए गए अपील प्राधिकारी के आदेश से व्यथित महसूस करने वाला कोई व्यक्ति या प्राधिकृत अधिकारी या राज्य सरकार अधिकरण के समक्ष फाइल कर सकेगा।

(2) ऐसी अपील, प्रथम अपील प्राधिकारी के आदेश की संसूचना की तारीख से तीस दिन की अवधि के भीतर फाइल की जा सकती है।

(3) अधिकरण, अपीलार्थी द्वारा किए गए आवेदन पर, अंतर्बलिप्त रकम की वसूली को, रकम के पच्चीस प्रतिशत के संदाय और ऐसी अन्य शर्तों को, जो आवश्यक समझी जाएं, पूरा करने के अधीन रहते हुए, रोकने का आदेश कर सकेगा।

(4) अपील का विनिश्चय करते समय, अधिकरण पक्षकारों को सुने जाने का अवसर देने के पश्चात्—

(क) उस आदेश को, जिसके विरुद्ध अपील की गई है, अभिपुष्ट करने या उसे संशोधित या रद्द करने का आदेश कर सकेगा; या

(ख) ऐसा आदेश पारित कर सकेगा, जो वह न्यायसंगत और उपयुक्त

(5) अधिकरण, किसी अपील का विनिश्चय करते समय एक सकारण आदेश पारित करेगा और आदेश की प्रतियां अपीलार्थी तथा आयुक्त को भेजेगा।

64. विलंब के लिए माफी.— धारा 62 की उपधारा (4) और धारा 63 की उपधारा (2) में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी, अपील प्राधिकारी, न्याय के हित में, लेखबद्ध किए जाने वाले कारणों से, ऐसे मामलों में, जहां अपील विनिर्दिष्ट अवधि के भीतर फाइल नहीं की गई है, विलंब को माफ कर सकेगा।

65. पुनरीक्षण.—(1) आयुक्त या अभिहित अधिकारी, स्वप्रेरणा से, किन्हीं ऐसी कार्यवाहियों के, जो उसके किसी अधीनस्थ प्राधिकारी के समक्ष लंबित हैं या उसके द्वारा निपटा दी गई हैं, अभिलेख को, ऐसी कार्यवाहियों या उसमें किए गए किसी आदेश की वैधता या औचित्य के बारे में अपना समाधान करने के प्रयोजन के लिए मंगा सकेगा और उसके संबंध में ऐसा आदेश पारित कर सकेगा, जो वह ठीक समझे।

(2) कोई अधिकरण, उपधारा (1) के अधीन आयुक्त के किसी आदेश के विरुद्ध उसे किए गए आवेदन पर, आदेश की संसूचना की तारीख से तीस दिन की अवधि के भीतर किसी ऐसे मामले का अभिलेख मांग सकेगा और उसकी परीक्षा कर सकेगा तथा उसके संबंध में ऐसा आदेश पारित कर सकेगा, जो वह न्यायसंगत और उपयुक्त समझे।

(3) उपधारा (2) के अधीन पुनरीक्षण के लिए कोई आवेदन तब तक ग्रहण नहीं किया जाएगा, जब तक ऐसे आवेदन के साथ कर, शास्ति और ब्याज की, यदि कोई हो, कुल रकम के पच्चीस प्रतिशत के पूर्व न्यूनतम संदाय का समाधान प्रदत्त नहीं हो।

(4) इस धारा के अधीन कोई ऐसा आदेश, जिससे किसी व्यक्ति पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता हो, तब तक पारित नहीं किया जाएगा, जब तक उस व्यक्ति को सुने जाने का अवसर न दे दिया गया हो।

66. भूल का सुधार जाना:— (1) आयुक्त या अभिहित अधिकारी, उसके द्वारा पारित किसी आदेश की, जो धारा 29 की उपधारा (2) या उपधारा (3) के अधीन पारित आदेश नहीं है, तारीख से तीन वर्ष के भीतर किसी भी समय, स्वप्रेरणा से, अभिलेख में स्पष्ट किसी भूल का सुधार कर सकेगा और वैसी ही अवधि के भीतर किसी ऐसी भूल का सुधार कर सकेगा, जो ऐसे आदेश से प्रभावित किसी व्यक्ति द्वारा उसकी जानकारी में लाई गई हो :

परंतु ऐसा कोई सुधार नहीं किया जाएगा, यदि उसका प्रभाव प्रभावित व्यक्ति को सुने जाने का अवसर दिए बिना, कर को बढ़ाना या प्रतिदाय की रकम को कम करना है।

(2) अधिकरण, स्वप्रेरणा से या प्रभावित व्यक्ति या आयुक्त या आयुक्त द्वारा इस प्रकार प्राधिकृत किसी अन्य अधिकारी के निर्देश पर, उसके द्वारा पारित किसी आदेश के सुधार के संबंध में विचार कर सकेगा। उपधारा (1) के उपबंध अधिकरण द्वारा भूल के सुधार को यथावश्यक परिवर्तनों सहित लागू होंगे।

(3) जहां ऐसे किसी सुधार का प्रभाव कर या शास्ति की रकम को कम करना है वहां आयुक्त, विहित रीति में, इस प्रकार देय रकम का ऐसे व्यक्ति को प्रतिदाय करने का आदेश कर सकेगा।

(4) जहां ऐसे किसी सुधार का प्रभाव, यथास्थिति, कर या शास्ति की रकम को बढ़ाना या प्रतिदाय की रकम को कम करना है, वहां आयुक्त, इस अधिनियम के अधीन इस प्रकार देय रकम की वसूली का आदेश करेगा।

67. कतिपय आदेशों के विरुद्ध अपील का वर्जन:— निम्नलिखित के विरुद्ध कोई अपील या पुनरीक्षण नहीं होगा,—

(क) किसी व्यक्ति से लेखा परीक्षा या निर्धारण के लिए या कथन अभिलिखित करने सहित किन्हीं अन्य प्रयोजनों के लिए मांग करने के लिए इस अधिनियम के अधीन जारी की गई कोई सूचना; या

(ख) यह हेतुक दर्शित करने की मांग करने के लिए कि इस अधिनियम के अधीन किसी अपराध के लिए शास्ति क्यों उद्गृहीत नहीं की जानी चाहिए, इस अधिनियम के अधीन जारी की गई कोई सूचना; या

(ग) इस अधिनियम के अधीन यथाअपेक्षित सुनवाई का अवसर देने वाली कोई सूचना; या

(घ) लेखाबहियों के अभिग्रहण या प्रतिधारण से संबंधित कोई आदेश; या

(ङ) धारा 74 के अधीन जारी किया गया कोई आदेश; या

(च) धारा 87 की उपधारा (1) के अधीन जारी किया गया कोई आदेश; या

(छ) कतिपय लेखाओं को रखने या कतिपय सूचना, कथनों, आंकड़ों या विवरणों को देने का कोई निर्देश; या

(ज) इस अधिनियम के किन्हीं प्रयोजनों को कार्यान्वित करने के लिए आयुक्त द्वारा बनाए गए कोई दिशा-निर्देश, जारी किए गए विनिर्देश या दिए गए निर्देश।

68. उच्च न्यायालय को अपील या पुनरीक्षण:— (1) अधिकरण द्वारा अपील या पुनरीक्षण में पारित किए गए प्रत्येक आदेश से उच्च न्यायालय को अपील या पुनरीक्षण होगा, यदि उच्च न्यायालय का यह समाधान हो जाता है कि मामले में विधि का सारवान प्रश्न अंतर्ग्रस्त है।

(2) आयुक्त या अधिकरण द्वारा पारित किसी आदेश से व्यथित कोई व्यक्ति, उच्च न्यायालय को अपील कर सकेगा और ऐसी अपील,—

(क) उस तारीख से, जिसको वह आदेश, जिसके विरुद्ध अपील की गई है, व्यथित व्यक्ति या आयुक्त द्वारा प्राप्त किया जाता है, साठ दिन की अवधि के भीतर फाइल की जाएगी; और

(ख) अपील के ज्ञापन के रूप में उसमें संक्षिप्त रूप से अंतर्बलित विधि के सारवान प्रश्न का कथन करते हुए फाइल की जाएगी।

(3) जहां उच्च न्यायालय का यह समाधान हो जाता है कि किसी मामले में विधि का सारवान प्रश्न अंतर्बलित है, यह उस प्रश्न को विरचित करेगा।

(4) अपील या पुनरीक्षण की सुनवाई केवल इस प्रकार विरचित प्रश्न पर ही की जाएगी और प्रत्यर्थियों को, अपील या पुनरीक्षण की सुनवाई पर, यह तर्क देने के लिए अनुज्ञात किया जाएगा कि मामले में ऐसा प्रश्न अंतर्बलित नहीं है:

परंतु इस धारा की किसी बात के बारे में यह नहीं समझा जाएगा कि वह उच्च न्यायालय की, लेखबद्ध किए जाने वाले कारणों से, विधि के किसी अन्य सारवान प्रश्न के संबंध में, जो उसके द्वारा विरचित नहीं किया गया है, अपील या पुनरीक्षण, यदि उसका यह समाधान हो जाता है कि मामले में ऐसा प्रश्न अंतर्ग्रस्त है, शाक्ति को छीनती है या कम करती है।

(5) उच्च न्यायालय, इस प्रकार विरचित विधि के प्रश्न का विनिश्चय करेगा और उस पर ऐसा निर्णय देगा, जिसमें वह आधार अंतर्विष्ट होंगे, जिन पर ऐसा विनिश्चय आधारित है और ऐसा खर्च प्रदान कर सकेगा, जो वह ठीक समझे।

(6) उच्च न्यायालय, किसी ऐसे विवादक का अवधारण कर सकेगा, जिसे,—

(क) अधिकरण द्वारा अवधारित नहीं किया गया है; या

(ख) उपधारा (1) में यथानिर्दिष्ट विधि के ऐसे प्रश्न पर विनिश्चय के कारण, अधिकरण द्वारा गलत अवधारित किया गया है।

(7) अधिकरण के ऐसे आदेश के, जिसके संबंध में इस धारा के अधीन अपील की गई है, अनुसरण में किसी व्यक्ति द्वारा संदाय किए जाने के लिए देय किसी रकम के संदाय पर, ऐसी अपील के अंतिम निपटारे के लंबित रहने पर उच्च न्यायालय द्वारा रोक नहीं लगाई जाएगी, किंतु यदि ऐसी अपील के परिणामस्वरूप ऐसी रकम में कमी की जाती है तो अधिक कर, शास्ति, ब्याज या समपद्धत राशि इस अधिनियम की धारा 39 के उपबंधों के अनुसार प्रतिदत्त की जाएगी।

8. इस अधिनियम में अन्यथा उपबंधित के सिवाय उच्च न्यायालय में अपील से संबंधित सिविल प्रक्रिया संहिता, 1908 (1908 का 5) के उपबंध जहां तक हो सके इस धारा के अधीन अपील या पुनरीक्षण दशा में लागू होंगे।

अध्याय 12

प्रकीर्ण

69. **विवरणियों का गोपनीय होना:—** (1) धारा 50 के उपबंधों के अधीन रहते हुए, इस अधिनियम के अनुसार किए गए किसी कथन, दी गई विवरणी या पेश किए गए लेखे या दस्तावेजों की या किसी दंड न्यायालय के समक्ष कार्यवाहियों से भिन्न इस अधिनियम के अधीन किन्हीं कार्यवाहियों के अनुक्रम में दिए गए साक्ष्य में अंतर्विष्ट सभी विशिष्टियां, उपधारा (2) में यथाउपबंधित के सिवाय, गोपनीय मानी जाएंगी।

(2) भारतीय साक्ष्य अधिनियम, 1972 में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी कोई न्यायालय, यथापूर्वोक्त के सिवाय, राज्य सरकार के किसी अधिकारी से यह अपेक्षा करने का हकदार नहीं होगा कि वह उसके समक्ष ऐसा कोई कथन, विवरणी, लेखे, दस्तावेज या अभिलेख या उसका कोई भाग पेश करे या उसके संबंध में साक्ष्य दे।

इस धारा की कोई बात ऐसे किसी कथन, विवरणी, लेखे अभिलेख, दस्तावेजों या साक्ष्य के संबंध में या राज्य के उत्पाद शुल्क और कराधान विभाग के उपयोग के लिए या भारत सरकार या किसी राज्य सरकार के पदधारियों के संबंध में या ऐसे किसी अभिकरण के पदधारी द्वारा, जिसके साथ राज्य सरकार ने कोई संविदा की है, आंकड़े तैयार करने के प्रयोजन के लिए, भारतीय दंड संहिता, 1860 (1860 का केन्द्रीय अधिनियम 45) के अधीन अभियोजन के प्रयोजन के लिए उपधारा (1) में निर्दिष्ट किन्हीं विशिष्टियों के प्रकटन पर लागू नहीं होगी।

70. **नियम बनाने की शक्ति:—** (1) राज्य सरकार इस अधिनियम के प्रयोजनों को कार्यान्वित करने के लिए नियम, राजपत्र में अधिसूचना द्वारा बना सकेगी।

(2) इस अधिनियम के अधीन नियम भविष्यलक्षी प्रभाव से या भूतलक्षी प्रभाव से बनाए जा सकेंगे:

परंतु इस अधिनियम के अधीन नियम, यदि उनका लोक हित में बनाया जाना अपेक्षित है तो केवल भूतलक्षी प्रभाव से बनाए जाएंगे।

(3) इस अधिनियम के अधीन बनाया गया प्रत्येक नियम बनाए जाने के पश्चात् यथाशीघ्र राज्य विधान सभा के सदन के समक्ष, जब वह ऐसी कुल दस दिनों की अवधि के लिए सत्र में हो जो एक सत्र में अथवा दो या अधिक आनुक्रमिक सत्रों में पूरी हो सकती है, रखा जाएगा और यदि उस सत्र के, जिसमें यह इस प्रकार पुरस्थापित किया गया है, या पूर्वोक्त आनुक्रमिक सत्र के ठीक बाद के सत्र के अवसान के पूर्व सदन उस नियम में कोई परिवर्तन करने के लिए सहमत हो जाए या सदन इस बात से सहमत हो जाए कि वह नियम नहीं बनाया जाना चाहिए तो ऐसा नियम, यथास्थिति, तत्पश्चात् केवल ऐसे परिवर्तित रूप में ही प्रभावी होगा या उसका कोई प्रभाव नहीं होगा, तथापि, उस नियम के ऐसे परिवर्तित या निष्प्रभाव होने से पहले उसके अधीन की गई किसी बात की विधिमन्यता पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा।

71. **अपील के ज्ञापन और पुनरीक्षण के लिए आवेदन पर न्यायालय फीस:—** धारा 62 और धारा 63 के अधीन फाइल किए गए अपील के ज्ञापन और धारा 65 के अधीन किए गए पुनरीक्षण के आवेदन के साथ ऐसे मूल्य का न्यायालय फीस स्टाम्प, जो विहित किया जाए, देना होगा।

72. **कतिपय मामलों में निर्धारण या संशोधित निर्धारण को पूरा करने के लिए किसी परिसीमा का न होना:—** धारा 29 में या इस अधिनियम के किसी अन्य उपबंध में निर्धारण या संशोधित निर्धारण के लिए परिसीमा की अवधि का उपबंध होते हुए भी किसी न्यायालय या अन्य प्राधिकारी द्वारा तत्समय प्रवृत्त विधि के अधीन उसमें निहित शक्तियों का प्रयोग करते हुए दिए गए किसी आदेश के परिणामस्वरूप या उसे प्रभावी बनाने के लिए किसी भी समय निर्धारण या संशोधित निर्धारण किया जा सकेगा।

(2) जहां किसी न्यायालय या अन्य प्राधिकारी के आदेशाधीन किसी अवधि के लिए किसी व्यक्ति के संबंध में निर्धारण कार्यवाहियां रुकी हुई हैं वहां इस अधिनियम के अधीन उपबंधित निर्धारण या संशोधित निर्धारण के लिए परिसीमा संगणित करने में ऐसी अवधि को अपवर्जित कर दिया जाएगा।

73. **निर्धारित को प्राधिकृत अभिकर्ता के मार्फत हाजिर होने की अनुज्ञा देना:—** (1) कोई व्यक्ति, जो इस अधिनियम के अधीन किसी कार्यवाही के संबंध में किसी प्राधिकारी के समक्ष हाजिर होने का हकदार है या जिससे ऐसी अपेक्षा की जाती है, किसी अभिकर्ता के मार्फत प्रतिनिधित्व कर सकेगा। इस धारा के प्रयोजनों के लिए अभिकर्ता से ऐसा व्यक्ति अभिप्रेत है जिसे मालिक द्वारा लिखित में—

(क) नातेदार; या

(ख) नियमित रूप से नियोजित कोई व्यक्ति; या

(ग) ऐसा विधि व्यवसायी, जो भारत के किसी न्यायालय में अभिवाक करने का हकदार हो; या

(घ) वास्तविक आयकर व्यवसायी; या

(ङ) चार्टर्ड एकाउंटेंट अधिनियम, 1949 (1949 का 38) के अर्थात्तर्गत कोई चार्टर्ड एकाउंटेंट और इसके अंतर्गत ऐसा व्यक्ति भी है जो कंपनी अधिनियम, 1956 (1956 का 1) की धारा 226 की उपधारा (2) के उपबंधों के आधार पर राज्य में रजिस्ट्रीकृत कंपनियों के संपरीक्षक के रूप में कार्यवाही करने के लिए नियुक्त होने का हकदार है; या

(च) पंजाब उत्पाद शुल्क और कराधान विभाग का कोई सेवानिवृत्त राजपत्रित अधिकारी, जिसे इस अधिनियम और/या निरसित अधिनियम के अधीन किसी भी हैसियत में पांच वर्ष का कार्य का अनुभव हो; परंतु अपनी सेवा निवृत्ति की तारीख से दो वर्ष की अवधि व्ययगत हो जाएगी; होने के कारण अभिहित अधिकारी, आयुक्त या अधिकरण अथवा धारा 3 की उपधारा (1) के अधीन आयुक्त की सहायता के लिए राज्य सरकार द्वारा नियुक्त किसी अधिकारी के समक्ष उसकी ओर से हाजिर होने के लिए नियुक्त किया गया है।

(2) ऐसा कोई व्यक्ति जो सरकारी सेवा से पदच्युत किया गया है, उपधारा (1) के अधीन किसी व्यक्ति का प्रतिनिधित्व करने के लिए अर्ह नहीं होगा।

(3) यदि किसी व्यवसायी या किसी व्यक्ति के अधिकारों को आयुक्त द्वारा इस अधिनियम के अधीन किसी प्राधिकरण के समक्ष किन्हीं कार्यवाहियों में अवचार का दोषी पाया जाता है तो आयुक्त यह आदेश दे सकेगा कि वह उपधारा (1) के अधीन प्रतिनिधित्व करने के लिए निरह होगा : परंतु ऐसे व्यक्ति के संबंध में ऐसा कोई आदेश तब तक नहीं किया जाएगा जब तक उसे सुनवाई का अवसर नहीं दे दिया जाता है।

(4) ऐसा व्यक्ति, जिसके विरुद्ध उपधारा (3) के अधीन कोई आदेश किया गया है धारा 63 के उपबंधों के अनुसार ऐसे आदेश के विरुद्ध अधिकरण को अपील कर सकेगा।

74. जानकारी मांगने की शक्ति.—आयुक्त या कोई ऐसा अधिकारी, जिसकी धारा 3 की उपधारा (1) के अधीन उसकी सहायता करने के लिए नियुक्ति की गई है, लिखित रूप में आदेश द्वारा इस अधिनियम के प्रयोजनों को क्रियान्वित करने के लिए किसी व्यक्ति से, जिसके अंतर्गत बैंककारी कंपनी, रेल, डाकघर या उसका कोई अधिकारी भी है, कोई ऐसी जानकारी या विवरण, जो इस अधिनियम, के अधीन किसी कार्यवाही के लिए उपयोगी या सुसंगत है, देने की अपेक्षा कर सकेगा।

75. शक्तियों का प्रत्यायोजन.—आयुक्त, ऐसी शर्तों के अधीन रहते हुए लिखित रूप में आदेश द्वारा इस अधिनियम के अधीन अपनी कोई शक्ति धारा 3 की उपधारा (1) के अधीन उसकी सहायता के लिए नियुक्त किसी अधिकारी को प्रत्यायोजित कर सकेगा।

परंतु राज्य सरकार द्वारा विनिर्दिष्ट रूप से आयुक्त को प्रदत्त की गई शक्तियां प्रत्यायोजित नहीं की जाएंगी।

76. कारबार की तब्दीली के बारे में जानकारी का दिया जाना.—यदि कोई कराधेय व्यक्ति या रजिस्ट्रीकृत व्यक्ति—

(क) अपने कारबार का या कारबार के किसी स्थान का विक्रय या अन्यथा व्ययन करता है; या

(ख) अपना कारबार बंद कर देता है या अंतरित कर देता है अथवा अपने कारबार का स्थान बदल देता है या नए स्थान पर कारबार खोलता है; या

(ग) अपने कारबार का नाम, गठन या प्रकृति में कोई तब्दीली करता है; या

(घ) उसके द्वारा बरते जाने वाले माल के वर्ग या वर्गों में कोई परिवर्तन करना चाहता है;

तो वह विहित रीति में अभिहित अधिकारी को सूचित करेगा और यदि ऐसे व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है तो उसका विधिक प्रतिनिधि उक्त प्राधिकारी को उसी प्रकार सूचित करेगा।

77. कारबार का अंतरण.—यदि किसी व्यक्ति के कारबार का स्वामित्व पूर्ण रूप से अंतरित हो गया है और अंतरिती ऐसा कारबार उसी नाम से या किसी अन्य नाम से चलाता है तो अंतरिती इस अधिनियम के सभी प्रयोजनों के लिए इस प्रकार रजिस्ट्रीकृत समझा जाएगा और सदैव से रजिस्ट्रीकृत समझा जाएगा मानो ऐसे व्यक्ति का रजिस्ट्रीकरण प्रारंभ से ही अंतरिती को प्रदान किया गया था ; और अंतरिती अभिहित अधिकारी को आवेदन करने पर तदनुसार विहित रीति में रजिस्ट्रीकरण का संशोधन करवाने का कहदार होगा।

78. कतिपय दशाओं में स्टाक पर कर का दायित्व.—इस अधिनियम में किसी प्रतिकूल बात के होते हुए भी, कोई व्यक्ति, जिसका रजिस्ट्रीकरण रद्द कर दिया गया है, इस अधिनियम के उपबंधों के अनुसार रद्दकरण की तारीख को रखे हुए अविक्रित माल पर कर संदाय करने का दायी होगा।

79. भागीदारों का दायित्व.—(1) जहां कोई फर्म इस अधिनियम के अधीन कर संदाय करने का दायी है वहां वह फर्म और उस फर्म का प्रत्येक भागीदार भारतीय भागीदारी अधिनियम, 1932 या किसी करार में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी, ऐसे संदाय के लिए संयुक्ततः और पृथकतः दायी होगा और तदनुसार फर्म के विघटन होने या न होने पर भी इस अधिनियम के अधीन किसी सूचना या आदेश को तामील किसी ऐसे व्यक्ति पर की जा सकेगी जो सुसंगत समय के दौरान भागीदार था और तदनुसार इस अधिनियम के सभी उपबंध लागू होंगे।

(2) जहां कोई भागीदार फर्म से निवृत्त हो जाता है वह अपने निवर्तन के समय असंदत्त रह गया कर, शास्ति, समपहत राशि और ब्याज तथा अपने निवर्तन की तारीख तक शोध्य कोई ऐसी रकम यद्यपि उस तारीख को अनिर्धारित हो संदाय करने का दायी होगा।

80. मृत्यु की दशा में कर संदाय करने का दायित्व.—(1) जहां इस अधिनियम के अधीन कर संदाय करने का दायी व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है वहां,

(क) यदि व्यक्ति द्वारा चलाया जाने वाला कारबार उसकी मृत्यु के पश्चात् उसके विधिक प्रतिनिधि द्वारा या किसी अन्य व्यक्ति द्वारा चालू रखा जाता है तो वह इस अधिनियम के अधीन या निरसित अधिनियम के अधीन ऐसे व्यक्ति से शोध्य कर, जिसके अन्तर्गत कोई शास्ति भी है, समपहत राशि और ब्याज उसी रीति में और उस विस्तार तक देने का दायी होगा जिस तक मृतक व्यक्ति दायी था; और

(ख) यदि उस व्यक्ति द्वारा चलाया जाने वाला कारबार उसी मृत्यु के पूर्व या उसके पश्चात् बंद कर दिया जाता है तो उसका विधिक प्रतिनिधि इस अधिनियम के अधीन या निरसित अधिनियम के अधीन ऐसे व्यक्ति से शोध्य कर, जिसके अंतर्गत शास्ति भी है समपहत राशि और ब्याज मृतक की मंषदा में से उस रीति में और उस विस्तार तक जैसे मृतक व्यक्ति यदि उसकी मृत्यु न होती तो संदाय करने का दायी होता, दायी होगा।

चाहे ऐसा कर, जिसके अंतर्गत शास्ति भी है, समपहत राशि और ब्याज उसकी मृत्यु के पूर्व निर्धारित किया गया हो किंतु असंदत्त रह गया हो या उसकी मृत्यु के पश्चात् निर्धारित किया जाए।

(2) यदि इस अधिनियम के अधीन कर संदाय करने का दायी कोई व्यक्ति हिंदू अविभक्त कुटुंब है और संयुक्त कुटुंब की संपत्ति का विभिन्न सदस्यों या सदस्यों के समूह के मध्य प्रभाजन हो जाता है वहां उसका प्रत्येक सदस्य और सदस्यों का समूह; इस अधिनियम के अधीन या निरसित अधिनियम के अधीन इस व्यक्ति से विभाजन के समय तक शोध्य कर, जिसके अंतर्गत शास्ति भी है, समपहत राशि और ब्याज संदाय करने का संयुक्ततः और पृथकतः दायी होगा, चाहे ऐसा कर, जिसके अंतर्गत कोई शास्ति भी है, समपहत राशि और ब्याज का निर्धारण विभाजन के पूर्व किया गया हो किंतु असंदत्त रह गया हो या विभाजन के पश्चात् किया जाए।

(3) जहां इस अधिनियम के अधीन ब्याज संदाय करने का दायी व्यक्ति कोई फर्म है और उस फर्म का विघटन हो गया है वहां ऐसा प्रत्येक व्यक्ति, जो उसका भागीदार है, इस अधिनियम के अधीन या निरसित अधिनियम के अधीन विघटन के समय तक शोध्य कर, जिसके अंतर्गत शास्ति भी है समपहत राशि और ब्याज, संयुक्ततः और पृथकतः उस विस्तार तक संदाय करने का दायी होगा जिस तक इस धारा के अधीन वह दायी है।

(4) जहां इस अधिनियम के अधीन कर का संदाय करने का दायी कोई व्यक्ति अपने कारबार का पूर्णतः या भागतः अंतरण या उसका अन्यथा व्ययन करता है या उसके स्वामित्व में कोई परिवर्तन प्रभावी करता है जिसके परिणामस्वरूप कारबार या उसके किसी भाग पर उसका स्थान कोई अन्य व्यक्ति ले लेता है वहां दोनों व्यक्ति ऐसे अंतरण के समय तक इस अधिनियम के अधीन या निरसित अधिनियम के अधीन उस व्यक्ति से शोध्य कर जिसके अंतर्गत कोई शास्ति भी सम्मिलित है समपहत राशि और ब्याज संयुक्ततः और पृथकतः संदाय करने का दायी होगा, चाहे ऐसा कर, जिसके अंतर्गत कोई शास्ति भी है, समपहत राशि और ब्याज ऐसे अंतरण निपटारे या परिवर्तन के पूर्व निर्धारित किया गया हो किंतु असंदत्त रह गया हो या तत्पश्चात् निर्धारित किया जाए।

(5) जहां इस अधिनियम के अधीन कर संदाय करने का दायी कोई व्यक्ति—

(क) किसी ऐसे प्रतिपाल्य का संरक्षक है जिसकी ओर से कारबार संरक्षक द्वारा चलाया जाता है; या

(ख) न्यासी है, जो हिताधिकारी के लिए किसी न्यास के अधीन कारबार चलाता है,

वहां यदि संरक्षकता या न्यास समाप्त कर दिया जाता है तो, यथास्थिति, प्रतिपाल्य या हिताधिकारी संरक्षकता या न्यास के समापन के समय तक उस व्यक्ति से शोध्य कर, जिसके अंतर्गत शास्ति भी है, समपहत राशि और ब्याज का संदाय करने का दायी होगा चाहे ऐसा कर, जिसके अंतर्गत शास्ति भी है, समपहत राशि और ब्याज संरक्षकता या न्यास के समापन के पूर्व निर्धारित किया गया हो किंतु असंदत्त रह गया हो या तत्पश्चात् निर्धारित किया जाए।

(6) जहां किसी ऐसे व्यक्ति का, जो इस अधिनियम के अधीन कर का संदाय करने के लिए दायी है, कारबार उप-धारा (1) के खंड (क) या उप-धारा (4) में वर्णित रीति में किसी व्यक्ति द्वारा ग्रहण कर लिया जाता है, वहां ऐसा व्यक्ति ऐसे ग्रहण किए जाने की तारीख को और उसके पश्चात् उसके द्वारा किए गए माल के विक्रय या क्रय पर कर का संदाय करने का तब तक दायी होगा जब तक कि उसने जब पहले से कोई रजिस्ट्रीकरण न हो, उसने ऐसे ग्रहण किए जाने की तारीख से साठ दिन की अवधि के भीतर रजिस्ट्रीकरण के लिए आवेदन न कर दिया हो।

81. मालिक की ओर से किए गए विक्रय के लिए कतिपय अभिकर्ताओं का कर का संदाय करने का दायित्व.—(1) जहां कोई व्यक्ति अपने मालिक की ओर से किसी कराधेय माल का विक्रय या क्रय करता है/उसे राज्य के बाहर से भेजा जाता/वह राज्य के बाहर कोई कराधेय माल भेजता है वहां ऐसा व्यक्ति और उसका मालिक दोनों संयुक्ततः और पृथकतः ऐसे विक्रय या क्रय के आवर्तन पर कर संदाय करने के दायी होंगे।

(2) यदि कोई ऐसा मालिक, जिसकी ओर से कमीशन अभिकर्ता ने कोई माल विक्रय या क्रय किया था, आयुक्त के समाधानप्रद रूप में यह दर्शित करता है कि उप-धारा (1) के अधीन ऐसे माल पर ऐसे कमीशन अभिकर्ता द्वारा कर संदत्त कर दिया गया है तो मालिक पुनः उसी संव्यवहार के संबंध में कर संदाय करने का दायी नहीं होगा।

(3) जहां किसी अनिवासी व्यक्ति का प्रबंधक या अभिकर्ता अनिवासी व्यक्ति की ओर से किसी माल का राज्य में विक्रय या क्रय करता है वहां राज्य में निवास करने वाला या कार्य करने वाला अनिवासी व्यक्ति और प्रबंधक या अभिकर्ता संयुक्ततः और पृथकतः ऐसे विक्रय या क्रय के आवर्तन पर कर संदाय करने का दायी होगा :

परंतु यदि अनिवासी व्यक्ति आयुक्त के समाधानप्रद रूप में यह दर्शित करता है कि ऐसे विक्रय या क्रय के संबंध में संदेय कर राज्य में रहने वाले प्रबंधक या अभिकर्ता द्वारा संदत्त कर दिया गया है तो अनिवासी व्यक्ति ऐसे संव्यवहार के संबंध में कर संदाय करने के लिए दायी होगा।

82. कंपनियों का समामेलन.—(1) जब दो या अधिक कंपनियों का किसी न्यायालय के या केन्द्रीय सरकार के आदेश द्वारा समामेलन कर दिया गया है और वह आदेश ऐसे आदेश किए जाने की तारीख से पूर्व की किसी तारीख से प्रभावी होता है और ऐसी कंपनियां एक दूसरे से उस तारीख को, जिसको आदेश प्रवृत्त होता है, प्रारंभ होने वाली और आदेश की तारीख को समाप्त होने वाली अवधि में कोई माल विक्रय या क्रय करती है तो विक्रय या क्रय के ऐसे संव्यवहारों को संबंधित कंपनियों के विक्रय या क्रय के आवर्तन में सम्मिलित किया जाएगा और उन पर तदनुसार कर का निर्धारण किया जाएगा।

(2) उक्त आदेश में किसी बात के होते हुए भी इस अधिनियम के सभी प्रयोजनों के लिए उक्त दो या अधिक कंपनियों को सुभिन्न कंपनियां समझा जाएगा और उक्त आदेश की तारीख तक सभी अवधि के लिए ऐसा ही समझा जाएगा और इस अधिनियम के अधीन उक्त कंपनियों का रजिस्ट्रीकरण उक्त आदेश की तारीख से रद्द कर दिया जाएगा।

(3) इस धारा में प्रयुक्त किंतु परिभाषित न किए गए पदों और अभिव्यक्तियों का क्रमशः वही अर्थ होगा जो उनका कंपनी अधिनियम, 1956 (1956 का 1) में है।

83. समानाधीन कंपनी, फर्म या सोसाइटी की दशा में दायित्व.—(1) प्रत्येक व्यक्ति—

(क) जो किसी ऐसी कंपनी, फर्म या सोसाइटी का समापक है, जिसका परिसमापन, चाहे न्यायालय के आदेशों के अधीन या अन्यथा, किया जा रहा है, या

(ख) जो कंपनी की किन्हीं आस्तियों का रिसीवर नियुक्त किया जा चुका है (जिसे इसमें इसके पश्चात् समापक कहा गया है) ऐसा समापक होने के पश्चात् तीस दिनों के भीतर, उस रूप में अपनी नियुक्ति की सूचना आयुक्त या अभिहित अधिकारी को देगा।

(2) आयुक्त या अभिहित अधिकारी ऐसी जांच करने के या ऐसा जानकारी मांगने के पश्चात् जो वह ठीक समझे, उस तारीख से, जिसको वह समापक की नियुक्ति की सूचना प्राप्त करता है, तीन मास के भीतर समापक को वह रकम अधिसूचित करेगा जो आयुक्त या अभिहित अधिकारी की राय में कोई कर, ब्याज, या शास्ति देने के लिए पर्याप्त होगी जो कंपनी द्वारा उस समय संदेय हो या उसके पश्चात् जिसके संदेय होने की संभावना हो।

(3) कंपनी अधिनियम, 1956 में किसी बात के होते हुए भी जब किसी प्राइवेट कंपनी का परिसमापन हो जाता है और किसी भी कालावधि के लिए चाहे उसके समापन के पूर्व या दौरान या पश्चात् कंपनी पर इस अधिनियम के अधीन निर्धारित किसी कर, ब्याज या शास्ति की वसूली नहीं की जा सकती है तब प्रत्येक व्यक्ति, जो उस कालावधि के दौरान जिसके लिए कर शोध्म है, किसी भी समय प्राइवेट कंपनी का निदेशक या, ऐसे कर, ब्याज या शास्ति के संदाय के लिए संयुक्ततः तथा पृथक्तः तब तक दायी होगा जब ऐसा व्यक्ति आयुक्त या अभिहित अधिकारी के समाधानप्रद रूप में यह साबित नहीं कर देता है कि गैरवसूली कंपनी के कार्यकलापों के संबंध में उसकी ओर से किसी घोर उपेक्षा, अपकरण या कर्तव्य भंग के कारण नहीं हुई थी।

स्पष्टीकरण—इस धारा के प्रयोजनों के लिए प्राइवेट कंपनी पद का अर्थ वही होगा जो उसे कंपनी अधिनियम, 1956 (1956 का 1) की धारा 3 के अधीन समनुदेशित किया गया है।

84. अंतर्राज्यिक व्यापार की दशा में उपबंध.—इस अधिनियम में किसी बात के होते हुए भी इस अधिनियम के अधीन उस दशा में माल के विक्रय या क्रय पर कोई कर अधिरोपित नहीं किया जाएगा, जहां—

(क) ऐसा विक्रय या क्रय राज्य के बाहर हुआ है ; या

(ख) ऐसा विक्रय या क्रय अंतर्राज्यिक व्यापार या वाणिज्य के अनुक्रम में हुआ है ; या

(ग) ऐसा विक्रय या क्रय भारत के राज्य क्षेत्र के बाहर माल के आयात या माल के निर्यात के अनुक्रम में हुआ है :

परंतु किसी माल का अंतिम विक्रय या क्रय भी, जो उस विक्रय या क्रय के पूर्व हुआ है, जिसके कारण ऐसे माल का निर्यात भारत के राज्य क्षेत्र से बाहर हुआ है, ऐसे निर्यात के अनुक्रम में समझा जाएगा जब ऐसा अंतिम विक्रय या क्रय ऐसे निर्यात के लिए करार या आदेश करने के पश्चात् किया गया हो।

85. विवादग्रस्त प्रश्नों का अवधारण.— यदि कोई प्रश्न न्यायालय के समक्ष कार्यवाहियों से भिन्न या धारा 29 के अधीन किसी व्यक्ति के निर्धारण के प्रारंभ से पूर्व इस बारे में उत्पन्न होता है कि क्या इस अधिनियम के प्रयोजनों के लिए—

(क) कोई, सोसाइटी, क्लब या संगम या कोई फर्म या किसी फर्म की कोई शाखा या विभाग कोई व्यक्ति है, या

(ख) किसी माल के प्रति की गई कोई बात, उस पद के अर्थान्तर्गत माल के विनिर्माण की कोटि में आती है या उसका ऐसा परिणाम होता है ; या

(ग) कोई संव्यवहार विक्रय या क्रय है अथवा यदि वह विक्रय या क्रय है तो, यथास्थिति, उसकी विक्रय कीमत या क्रय कीमत क्या है ; या

(घ) किसी विशिष्ट व्यक्ति का रजिस्ट्रीकृत होना अपेक्षित है ; या

(ङ.) कर संदाय करने के लिए दायी किसी व्यक्ति की दशा में किसी विशिष्ट विक्रय या क्रय के संबंध में ऐसे व्यक्ति द्वारा कोई कर संदेय है यदि कर संदेय है तो उसकी दर क्या होगी ; या

(च) किसी विशिष्ट क्रय के संव्यवहार पर निवेश कर प्रतिदाय का दावा किया जा सकता है और यदि इसका दावा किया जा सकता है तो ऐसी शर्तें और निबंधन क्या हैं जिनके अधीन रहते हुए ऐसे प्रत्यय का दावा किया जा सकता है ;

(छ) कोई अन्य प्रश्न, जो इस अधिनियम या इसके अधीन बनाए गए नियमों के अधीन प्रक्रिया और आदेशिका के संबंध में उठाया जा सकेगा,

तो आयुक्त इस अधिनियम या इसके अधीन बनाए गए नियमों के उपबंधों के अध्याधीन ऐसे प्रश्न का अवधारण करते हुए आदेश करेगा।

सप्टीकरण— (1) यदि अभिहित अधिकारी द्वारा व्यक्ति पर किसी सूचना की तामील कर दी जाती है तो इस धारा के प्रयोजनों के लिए धारा 29 के अधीन व्यक्ति का निर्धारण प्रारंभ कर दिया गया है समझा जाएगा।

(2) आयुक्त यह निदेश दे सकेगा कि अवधारण के पूर्व किए गए किसी विक्रय या क्रय के संबंध में किसी व्यक्ति की इस अधिनियम के अधीन दायी पर उस अवधारण का प्रभाव नहीं पड़ेगा।

(3) यदि इस अधिनियम के अधीन या निरसित अधिनियम के अधीन पहले ही पारित किसी आदेश से ऐसा कोई प्रश्न उद्भूत होता है, इस धारा के अधीन अवधारण के लिए ऐसा कोई प्रश्न ग्रहण नहीं किया जाएगा किन्तु ऐसा प्रश्न ऐसे आदेश के विरुद्ध अपील में उद्भूत किया जा सकेगा।

86. पुलिस अधिकारी या अन्य अधिकारी से सहायता मांगने की शक्ति.— इस अधिनियम के अधीन शक्तियों का प्रयोग करने वाला कोई अधिकारी जब कभी भी अपेक्षा करे राज्य सरकार के किसी पुलिस अधिकारी या अन्य अधिकारी की सहायता ले सकेगा और पुलिस अधिकारी या अन्य अधिकारी सहायता के लिए किए गए ऐसे अनुरोध पर विधि अनुसार आवश्यक सहायता देगा।

87. साक्षियों को समन करने और अभिलेख पेश करने की शक्ति.—(1) अधिकरण या आयुक्त अथवा धारा 3 की उपधारा (1) के अधीन आयुक्त की सहायता के लिए नियुक्त किए गए अधिकारियों को निम्नलिखित मामलों के संबंध में इस अधिनियम द्वारा या इसके अधीन उस प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते समय वे सभी शक्तियां प्राप्त होंगी, जो सिविल प्रक्रिया संहिता, 1908 (1908 का केन्द्रीय अधिनियम 5) के उपबंधों के अधीन किसी सिविल न्यायालय को प्रदत्त की गई हैं, अर्थात् :—

(क) किसी व्यक्ति की उपस्थिति

(ख) दस्तावेजों को पेश करने के लिए बाध्य करना और उन्हें परिबद्ध करना;

(ग) शपथपत्रों द्वारा तथ्यों का सबूत; और

(घ) साक्षियों की परीक्षा के लिए कमीशन जारी करना।

(2) शपथपत्र की दशा में धारा 3 की उपधारा (1) के अधीन नियुक्त कोई अधिकारी अभिसाक्षी को शपथ दिला सकेगा।

(3) अधिकरण या आयुक्त अथवा धारा 3 की उपधारा (1) के अधीन आयुक्त की सहायता के लिए नियुक्त किसी व्यक्ति के समक्ष इस अधिनियम के अधीन कोई कार्यवाही भारतीय दंड संहिता, 1860 (1869 का केन्द्रीय अधिनियम 45) की धारा 193 और धारा 228 अर्थात्तर्गत और उक्त संहिता की धारा 199 के प्रयोजनों के लिए न्यायिक कार्यवाहियां समझी जाएंगी।

88. कतिपय कार्यवाहियों का वर्जन.— इस अधिनियम या उसके अधीन बनाए गए नियमों के अधीन किया गया कोई निर्धारण या पारित कोई आदेश किसी सिविल न्यायालय में प्रश्नगत नहीं किया जाएगा।

89. क्षतिपूर्ति.— इस अधिनियम या उसके अधीन बनाए गए नियमों के अधीन सद्भावपूर्वक की गई या की जाने के लिए आशयित किसी बात के लिए कोई भी वाद, अभियोजन या अन्य विधिक कार्यवाही राज्य सरकार के किसी अधिकारी या सेवक के विरुद्ध नहीं होगी।

90. सबूत का भार.— यह साबित करने का भार कि किसी व्यक्ति द्वारा किया गया कोई विक्रय या क्रय इस अधिनियम के अधीन कर के लिए दायी नहीं है या किसी क्रय पर निवेश कर प्रतिदाय की हकदारी को साबित करना ऐसे व्यक्ति पर होगा।

91. कठिनाइयों को दूर करने की शक्ति.— यदि इस अधिनियम के किसी उपबंध को प्रभावी करने में कठिनाई उत्पन्न होती है तो राज्य सरकार राजपत्र में प्रकाशित आदेश द्वारा ऐसे उपबंध जो इस अधिनियम के उपबंधों से असंगत न हों कर सकेगी, जो उस कठिनाइयों को दूर करने के लिए उसे आवश्यक प्रतीत हो

परंतु ऐसा कोई आदेश इस अधिनियम के प्रारंभ से दो वर्ष की अवधि की समाप्ति के पश्चात् नहीं किया जाएगा।

(2) इस धारा के अधीन बनाया गया प्रत्येक आदेश बनाए जाने के पश्चात् यथाशीघ्र विधान सभा के समक्ष रखा जाएगा।

अध्याय 13

निरसन और व्यावृत्ति

92. 1948 का पंजाब अधिनियम 46 का निरसन और व्यावृत्ति.— (1) इस अधिनियम के प्रवर्तन की तारीख से पंजाब जनरल सेल्स टैक्स एक्ट, 1948 (1948 का पंजाब अधिनियम 46) निरसित किया जाता है।

(2) उपधारा (1) के अधीन अधिनियम का निरसन,—

(क) किसी ऐसी बात को, जो निरसन के समय प्रवृत्त या विद्यमान नहीं है, पुनःप्रवर्तित नहीं करेगा; या

(ख) निरसित अधिनियम के पूर्व प्रवर्तन पर या इसके अधीन की गई या सहन की गई किसी बात पर कोई प्रभाव नहीं डालेगा; या

(ग) निरसित अधिनियम के अधीन अर्जित प्रोद्भूत या उपगत किसी बाध्यता या दायित्व पर प्रभाव नहीं डालेगा; या

- (घ) निरसित अधिनियम के उपबंधों के अधीन किए गए किसी अपराध या हिंसा के संबंध में उपगत या दी गई किसी शास्ति, समपहरण या दंड पर प्रभाव नहीं डालेगा; या
- (ङ) निरसित अधिनियम के अधीन संस्थित, चालू की गई या प्रवर्तित किसी अन्वेषण, जांच, निर्धारण, कार्यवाही किसी विधिक कार्यवाही या उपचार पर प्रभाव नहीं डालेगा और निरसित अधिनियम के अधीन ऐसी कोई शास्ति, समपहरण, या दंड या संस्थित की गई, चालू की गई या प्रवर्तित कोई विधिक कार्यवाही या उपचार इस अधिनियम के तत्स्थानी उपबंधों के अधीन संस्थित की गई, चालू की गई या प्रवर्तित की गई समझी जाएगी।
- (3) ऐसे निरसन के होते हुए भी—
- (क) औद्योगिक इकाइयों की रियायत और उसके निर्धारण से संबंधित निरसित अधिनियम की धारा 10क, 10ख, और धारा 30क और उसके अधीन विरचित नियमों के उपबंध ऐसे अपवादों निर्बंधनों और शर्तों के अधीन रहते हुए, जो राज्य सरकार द्वारा समय-समय पर अधिसूचित की जाए, प्रवृत्त रहेंगे;
- (ख) निरसित अधिनियम और/या उसके अधीन बनाए गए नियमों तथा इस अधिनियम के प्रारंभ की तारीख को प्रवृत्त उपबंधों के अधीन बनाए गए सभी नियम और जारी अधिसूचना तब तक प्रवृत्त रहेंगे जब तक ऐसे नियमों और अधिसूचनाएं इस अधिनियम या उसके अधीन बनाए गए नियमों या जारी अधिसूचनाओं के उपबंधों द्वारा व्यक्त निर्बंधनों में या अपेक्षित विवक्षा द्वारा अधिक्रांत न कर दिए जाएं;
- (ग) किसी नियम या अधिसूचना के अंतर्गत निरसित अधिनियम की किसी धारा के प्रति कोई निर्देश तब तक इस अधिनियम की सुसंगत तत्स्थानी धारा के प्रति निर्देश समझा जाएगा जब तक ऐसे नियम या अधिसूचना में उपेक्षित संशोधन नहीं कर दिए जाएं ;
- (घ) इस अधिनियम में उपबंधित परिसीमाएं भविष्यलक्षी रूप से लागू होंगी, और इस अधिनियम के प्रारंभ होने की तारीख से पूर्व चटित सभी घटनाएं और ऐसे सभी विवादक जो इस अधिनियम के प्रारंभ होने की तारीख से पूर्व उद्भूत हुए हैं निरसित अधिनियम में अंतर्विष्ट उपबंधों या उपबंधित परिसीमाओं द्वारा शासित होंगे;
- (ङ) इस प्रकार निरसित अधिनियम के अधीन की गई कोई बात या कोई कार्रवाई (जिसके अंतर्गत जारी की गई कोई अधिसूचना, आदेश जारी सूचना, किया गया आवेदन या दी गई अनुज्ञा भी है) जो इस अधिनियम के उपबंधों से असंगत नहीं है, इस अधिनियम के तत्स्थानी उपबंधों के अधीन वैसे ही की गई समझी जाएगी मानों यह अधिनियम उस समय प्रवृत्त था जब ऐसी बात या कार्रवाई की गई थी तथा वह तब तक प्रवृत्त रहेगी जब तक कि वह इस अधिनियम के अधीन की गई किसी बात या कार्रवाई द्वारा अतिष्ठित नहीं कर दी जाती;
- (च) इस धारा में अंतर्विष्ट उपबंधों को प्रभावी बनाने के प्रयोजनों के लिए इस अधिनियम द्वारा निरसित अधिनियम के किन्हीं उपबंधों में किसी अधिकारी, प्राधिकरण या अधिकरण के प्रति किए गए निर्देश का, इस अधिनियम द्वारा या उसके अधीन नियुक्त तत्समान अधिकारी या गठित प्राधिकरण या अधिकरण के प्रति निर्देश के रूप में अर्थान्वयन किया जाएगा और यदि इस बारे में कोई प्रश्न उद्भूत होता है कि ऐसा तत्समान अधिकारी, प्राधिकरण या अधिकरण कौन होगा तो मामला राज्य सरकार को निर्दिष्ट किया जाएगा और राज्य सरकार का विनिश्चय अंतिम होगा; और
- (छ) यदि इस धारा के उपबंधों को प्रभावी बनाने में कोई कठिनाई उत्पन्न होती है तो राज्य सरकार राजपत्र में प्रकाशित साधारण या विशेष आदेश द्वारा ऐसे उपबंधों के संगत कोई ऐसी बात कर सकेगी जो उसे विषय वस्तु के संदर्भ को ध्यान में रखते हुए आवश्यक या समीचीन प्रतीत हो।

93. **संक्रमणकालीन उपबंध.**—(1) कोई ऐसा व्यक्ति, जो निरसित अधिनियम के अधीन कर संदाय करने का दायी बना रहता, यदि यह अधिनियम प्रवृत्त न होता, इस अधिनियम के अधीन उसे नए सिरे से रजिस्ट्रीकरण प्रदान किए जाने तक या नियत दिन की तारीख के साठ दिनों की अवधि की समाप्ति तक, इनमें से जो भी पूर्वतर हो, इस अधिनियम के अधीन रजिस्ट्रीकृत समझा जाएगा।

(2) इस अधिनियम के किसी बात के होते हुए भी—

- (क) निवेश कर के उद्ग्रहण, निर्धारण, पुनःनिर्धारण, अपील, पुनरीक्षण, पुनर्विलोकन, परिशुद्धिकरण, निर्देश, रजिस्ट्रीकरण, संग्रहण, प्रतिदाय या प्रत्यय या कर की छूट या अस्थगन का फायदा अनुज्ञात करने, किसी ऐसी शास्ति या ब्याज के अधिरोपण या किसी ऐसी राशि के समपहरण के प्रयोजनों के लिए जो नियत दिन के पूर्व समाप्त होने वाली किसी अवधि के संबंध में है या किसी अन्य ऐसे प्रयोजन के लिए है जो कि पूर्वोक्त किन्हीं प्रयोजनों से सम्बद्ध हैं या उनके अनुपंगिक हैं और ऐसी कार्यवाहियों के संबंध में चाहे कर, शास्ति, ब्याज या समपंहत राशि, यदि कोई हो, नियत दिन को या उसके पश्चात् संदत् की गई हो, निरसित अधिनियम और उसके अधीन जारी तथा नियत दिन के ठीक पूर्व प्रवृत्त सभी नियमों, विनियमों, आदेशों, अधिसूचना, प्ररूप, और सूचनाओं का, जहां तक वे लागू होती हैं, कार्यवाहियों की समाप्ति तक प्रभावी रहेंगे;

- (ख) निरसित अधिनियम के अधीन आयुक्त के रूप में नियुक्त कोई व्यक्ति या कोई ऐसा व्यक्ति जिसे आयुक्त की सहायता करने के लिए नियुक्त किया गया है और जो नियत दिन के ठीक पूर्व उसी हैसियत में पद पर बना हुआ है, नियत दिन से ही इस अधिनियम के अधीन नियुक्त किया गया समझा जाएगा और तब तक उसी हैसियत में पद पर बना रहेगा जब तक कि वह व्यक्ति आयुक्त नहीं रह जाता या आयुक्त की सहायता के लिए नियुक्त व्यक्ति नहीं रहता ;
- (ग) निरसित अधिनियम के अधीन नियुक्त और नियत दिन के ठीक पूर्व उसी हैसियत में पद पर बना हुआ विक्रय कर अधिकरण का पीठासीन अधिकारी नियत दिन से ही इस अधिनियम के अधीन अधिकरण के अध्ययन के रूप में नियुक्त किया गया समझा जाएगा और तब तक उसी हैसियत में पद पर बना रहेगा जब तक कि इस अधिनियम के अधीन अधिकरण का गठन नहीं हो जाता या वह निरसित अधिनियम के अधीन वर्णित निर्बंधनों और शर्तों के अनुसार ऐसा पीठासीन अधिकारी (अध्यक्ष) नहीं रह जाता इनमें से जो भी पूर्वतर हो ;
- (घ) ऐसा कोई आदेश या अधिसूचना जिसके द्वारा निरसित अधिनियम की धारा 3 की उपधारा (1) के अधीन राज्य सरकार द्वारा या आयुक्त द्वारा उसकी सहायता के लिए किसी भी पदनाम से नियुक्त किसी व्यक्ति को नियत दिन के पूर्व निरसित अधिनियम या निरसित नियम के अधीन कोई शक्ति प्रत्यायोजित की गई है या कोई अधिकारिता प्रदत्त की गई है और जो नियत दिन के ठीक पूर्व के दिन को प्रवृत्त बना या बनी हुई है, ऐसे नियत दिन से तब तक प्रवृत्त बना रहेगा या बनी रहेगी जब तक कि राज्य सरकार या आयुक्त इस अधिनियम के अधीन ऐसे नियत दिन के पश्चात् ऐसे आदेश में संशोधन, परिवर्तन या उसका विखंडन नहीं कर देता ;
- (ङ) किसी का ऐसे कोई लेखा, रजिस्टर या दस्तावेज जो निरसित अधिनियम के किन्हीं भी उपबंधों के अधीन नियत दिन के पूर्व अभिगृहीत किए गए हैं और जो ऐसे नियत दिन से ठीक पूर्व के दिन तक वापस नहीं किए गए हैं ऐसे अधिनियम के उपबंधों के अनुसार अपने पास बने रहेंगे ;
- (च) ऐसा कोई माल, जो निरसित अधिनियम या निरसित नियम के किन्हीं उपबंधों के अधीन नियत दिन के पूर्व अभिगृहीत या प्रतिधृत किया गया है और ऐसे नियत दिन के पूर्व छोड़ा नहीं गया है, तब तक अभिगृहीत बना रहेगा जब तक कि ऐसा माल अधिनियम के उपबंधों के अनुसार छोड़ नहीं दिया जाता ;
- (छ) निरसित अधिनियम या निरसित नियम के अधीन सभी प्ररूप या घोषणाएं, जो नियत दिन के ठीक पूर्व दिन को प्रवृत्त बने हुए हैं या बनी हुई हैं, ऐसे नियत दिन से प्रवृत्त बने रहेंगे या बनी रहेंगी और उन प्रयोजनों के लिए जिनके लिए वे ऐसे नियत दिन के पूर्व प्रयुक्त किए जा रहे थे या की जा रही थीं, तब तक यथावश्यक परिवर्तन सहित प्रयोग किए जाते रहेंगे या की जाती रहेंगी जब तक कि राज्य सरकार अधिसूचना द्वारा ऐसे प्ररूपों का, उस समय तक, जैसा राज्य सरकार इस निमित्त विनिर्दिष्ट करे प्रयोग बंद करने का निदेश न दे दें ;
- (ज) नियत दिन के पूर्व किए गए विक्रयों या क्रयों के संबंध में या संदेय कर के संबंध में या निरसित अधिनियम के किसी उपबंध के उल्लंघन के संबंध में निरसित अधिनियम के अधीन निरसित, अस्थगित किसी कर, अवधारित ब्याज या अधिरोपित शास्ति निरसित अधिनियम के उपबंधों के अनुसार संदेय या वसूलनीय होगी ;
- (झ) निरसित अधिनियम के अधीन नियत दिन के ठीक पूर्व विवरणी देने के लिए दायी कोई व्यक्ति, इस बात के होते हुए भी कि वह अवधि, जिसकी बाबत वह विवरणी देने के लिए इस प्रकार दायी है, ऐसे नियत दिन के पूर्व के किसी दिन को आरंभ होती है और ऐसे नियत दिन के पश्चात् किसी दिन को समाप्त होती है, ऐसे नियत दिन के ठीक पूर्व तक किए गए ऐसे विक्रयों या क्रयों के लिए संदेय कर के संबंध में ऐसी विवरणी प्रस्तुत करेगा और निरसित अधिनियम के उपबंधों के अनुसार कर का संदाय करेगा तथा उस अवधि के, जो ऐसे नियत दिन को प्रारंभ होती है, शेष भाग की बाबत एक पृथक विवरणी प्रस्तुत करेगा और ऐसे नियत दिन से ही विक्रयों या क्रयों के लिए ऐसी विवरणी पर शोध कर का इस अधिनियम के उपबंधों के अनुसार संदाय करेगा ; और
- (त्र) किसी व्यक्ति द्वारा किसी पदाभिहित अधिकारी से अभिप्राप्त या अभिप्राप्य कोई विहित घोषणा/प्रारूप या निरसित अधिनियम या उसके अधीन बनाए गए किसी नियम के अधीन नियत दिन के पूर्व माल के किसी विक्रय के संबंध में उस व्यक्ति द्वारा या उसको प्रस्तुत की गई या की जाने वाली कोई घोषणा उस दशा में विधिमान्य होगी जहां कि ऐसी घोषणा/प्रारूप ऐसे नियत दिन को या उसके पश्चात् प्रस्तुत कर दिया जाता है ।

94. 2005 के अध्यादेश 5 का निरसन पंजाब मूल्य वर्धित कर अध्यादेश, 2005, (2005 का पंजाब अध्यादेश 5) एतद्वारा निरसित किया

जाता है ।

अनुसूची क
(कृपया धारा 16 देखें)
करमुक्त वस्तुओं की सूची

क्रम सं. वस्तु का नाम

1. नीचे दिए गए विवरण के अनुसार कृषि औजार तथा उनके कलपुर्जे:—

(क) साधारण कृषि औजार

- (1) खुरपा
- (2) हंसिया
- (3) फावड़ा
- (4) बगुड़ी
- (5) हथपहिया फावड़ा
- (6) बागवानी के औजार जैसे बडिंग, कलम बनाने का चाकू, कतरनी, कांट-छांट कैची अथवा कैंटिया, झाड़ी कैची, छिड़काव यंत्र, हेंगी
- (7) स्प्रेयर, डस्टर और स्प्रेयर-सह-डस्टर
- (8) खाद डालने वाला
- (9) जन्दा
- (10) व्हील बारौ
- (11) फटकन पंखा या फटकनी
- (12) खोंसनी
- (13) गंडासा
- (14) गड़ही
- (15) खाद बीज प्रसारक
- (16) मक्का छीलनी
- (17) मूंगफली छीलनी
- (18) खाद या बीज चलनी
- (19) फ्लेम गन
- (20) बीज ग्रेडर
- (21) भूसा काटने का कल
- (22) तसला
- (23) तंगली

(ख) जानवरों द्वारा चालित कृषि औजार

- (1) जुआ
- (2) हल
- (3) हेंगा तथा उसके निम्नलिखित भाग:—
 - (i) हेंगा ढाँचा
 - (ii) हेंगा गड़ारी
 - (iii) हेंगा घुरा
 - (iv) हेंगा खुरचनी
 - (v) हेंगा डंडा
 - (vi) हेंगा डंडा U
 - (vii) हेंगा कोनिया
 - (viii) हेंगा हत्था
 - (ix) हेंगा क्लच
 - (x) हेंगा पथाला
- (4) त्रिफली
- (5) बीज ड्रिल, खाद ड्रिल, बीज सह खाद ड्रिल
- (6) प्लांटर

- (7) तख्ता
- (8) करवा
- (9) मेंड़ बनाने का यंत्र
- (10) खाई खोदने का यंत्र
- (11) बंद बनाने का यंत्र
- (12) श्रेषर
- (13) ड्रसप्लैंटर
- (14) भूसा कटनी
- (15) पर्शियन पहिया तथा ब्केट चेन अथवा वॉशर चेन
- (16) छकड़ा तथा उसके निम्नलिखित भाग:—
 - (i) एडीवी रिम
 - (ii) एडीवी धुरी
 - (iii) ड्रा बार
 - (iv) हुक
- (17) लवनेवाला यंत्र (रीपर)
- (18) घास कटुआ
- (19) कोल्हू
- (20) गन्ना रस उबलन कड़ाही और जाली
- (21) रोलर
- (ग) अंट चालित गाड़ी
- (घ) ट्रैक्टर चालित कृषि औजार
 - (1) हल तथा उसके निम्नलिखित भाग
 - (i) माउलड बोर्ड प्लाउ एसेम्बली
 - (ii) डिस्क प्लाउ कबर
 - (iii) डिस्क प्लाउ हब
 - (iv) डिस्क प्लाउ पहिया
 - (v) डिस्क प्लाउ शूज
 - (vi) डिस्क प्लाउ ब्रैकेट कैप
 - (vii) डिस्क प्लाउ ब्रैकेट
 - (viii) डिस्क प्लाउ एसेम्बली स्क्रेपर
 - (ix) डिस्क प्लाउ ब्रैकेट स्क्रेपर
 - (x) डिस्क प्लाउ ब्रैकेट फयूरो व्हील
 - (xi) डिस्क प्लाउ एसेम्बली एक्सेल
 - (xii) डिस्क प्लाउ स्प्रिंग कैप
 - (xiii) डिस्क प्लाउ एसेम्बली स्पिंडल तथा डस्ट कैप
 - (xiv) डिस्क प्लाउ फयूरो व्हील
 - (2) हेंगा तथा उसके निम्नलिखित भाग:—
 - (i) हेंगा फ्रेम
 - (ii) हेंगा स्पूल
 - (iii) हेंगा बुश
 - (iv) हेंगा सी.आई. तट तथा चंक नट
 - (v) हेंगा हब
 - (vi) हेंगा एक्सेल
 - (vii) हेंगा निम्पल बोल्ट
 - (viii) हेंगा लॉक पट्टी
 - (ix) हेंगा स्क्रेपर
 - (x) हेंगा ड्रा बार

- (xi) हेंगा ड्रा बार U
- (xii) हेंगा क्लैप
- (xiii) हेंगा हैण्डल
- (xiv) हेंगा क्लच
- (xv) हेंगा पंताल
- (3) हेंगी या टिलर तथा उसके निम्नलिखित भाग:—
 - (i) टिलर टाईन एसेम्बली
 - (ii) टिलर टाईन
 - (iii) टिलर स्प्रिंग
 - (iv) टिलर शॉवल/फल्ला
 - (v) टिलर टाईन एसेम्बली
 - (vi) टिलर एकोर पिन
 - (vii) टिलर टाईन एसेम्बली
 - (viii) टिलर लिंक पिन
 - (ix) टिलर टाईन स्टाप
 - (x) टिलर एसेम्बली टूर बार
 - (xi) टिलर 3 प्वाइंट लिंकेज
 - (xii) टिलर टुविस्ट पट्टी
 - (xiii) टिलर ऐंगल ब्रैकेट
 - (xiv) टिलर फ्रेम फ्रंट एण्ड रीयर
- (4) बीज ड्रिल, खाद ड्रिल या बीज सह खाद ड्रिल तथा उसके निम्नलिखित भाग:—
 - (i) बीज ड्रिल टाईन
 - (ii) बीज ड्रिल शॉवल/फल्ला
 - (iii) बीज ड्रिल गरारी
 - (iv) बीज ड्रिल फीडर (पिस्टल)
 - (v) बीज ड्रिल स्पाउट
 - (vi) बीज ड्रिल हॉपर एसेम्बली
 - (vii) बीज ड्रिल ग्राउंड व्हील
- (5) खाद प्रसारक
- (6) प्लांटर
- (7) प्लैंक या फ्लोट
- (8) लेवलर या स्कूप तथा उसके निम्नलिखित भाग :—
 - (i) लेवलर फ्रेम एसेम्बली
 - (ii) लेवलर ब्लेड
 - (iii) लेवलर मेन फ्रेम
- (9) बंद फौरमन
- (10) रिज्जर तथा उसके निम्नलिखित भाग :—
 - (i) रिज्जर टाईन
 - (ii) रिज्जर शूज
 - (iii) रिज्जर शॉवल/फल्ला
- (11) ट्रेलर तथा उसके निम्नलिखित भाग :—
 - (i) एडीवी रिम्स
 - (ii) एडीवी धुरियां
 - (iii) ट्रेलर ड्रा बार
 - (iv) ट्रेलर हुक
- (12) पडलर
- (13) डिचर
- (14) केज व्हील

- (15) स्प्रैयर, डस्टर या स्प्रैयर सह रोटोवेटर
- (16) रॉलर
- (17) हो, रोटरी हो या रोटोवेटर
- (18) रीपर या माडर, हारवेस्टर
- (19) पोटेटो हारवेस्टर या स्पिनर
- (20) ग्राउंडनट डिगर शेकर
- (21) ट्रांसप्लान्टर

(ड) ऊर्जा के औजार

- (1) श्रेसर तथा उसके निम्नलिखित भाग :—
 - (i) श्रेसर
 - (ii) श्रेसर जेल
 - (iii) श्रेसर सीव सेट
 - (iv) श्रेसर U क्लैप तथा बीटर
 - (v) श्रेसर रोटर
 - (vi) श्रेसर ग्राउंड व्हील्स
- (2) भूसा कटनी
- (3) मक्का छीलनी
- (4) मूंगफली छीलनी
- (5) सीड ग्रेडर
- (6) विनोवर
- (7) सीड ट्रीटर
- (8) पॉवर स्प्रैयर या डस्टर
- (9) पाउल्ट्री फीड ग्राइंडर तथा मिक्सर
- (10) ट्रांसप्लान्टर
2. विकलांग व्यक्तियों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली सहायताार्थ औजार
3. बहुमूल्य तत्वों से बनी को छोड़कर सभी प्रकार की चूड़ियाँ
4. जलीय खाद्य, मुर्गीयों तथा जानवर खाद्य, खाद्य परिशिष्ट सहित, घास, चारा तथा भूसा
5. पान के पत्ते
6. किताबें, भावधिक पत्रिकायें तथा पत्रिका तथा नक्शा, चार्ट तथा ग्लोब सहित
7. रोटी
8. लकड़ी का कोयला
9. चरखा, अंबर चरखा, बुनकर तथा बुनकर वस्त्र तथा गांधी टोपी
10. धान, चावल तथा गेहू को छोड़कर मोटे अन्न
11. कंडोम तथा गर्मनिरोधक
12. अधिक घिसाई वाले चमड़े तथा उनके बने देशी पटसन
13. दही, लस्सी, दूध मक्खन
14. मिट्टी के बरतन
15. विद्युत ऊर्जा
16. बायो-खाद्य तथा कार्बनिक खाद्य सहित खाद्य, जिपसम, कीटनाशक, मोथानाशक, कीटनाशक तथा फंगसनाशक
17. कैसुरिना तथा यूक्लेपटस लकड़ी को छोड़कर ईंधन की लकड़ी
18. मछली के जाल, मछली जाल के वस्त्र तथा मछली के बीज
19. ताजा दूध, पाश्चराइज्ड दूध तथा सपरेटा दूध. अनुसूची 'ख' की प्रविष्टि 55 में शामिल वस्तुओं को छोड़कर
20. हरे पौधे, पौध तथा ताजे पुष्प
21. ताजी सब्जियां एवं फल
22. लहसन एवं अदरक
23. हरी चाय
24. विनिर्माण के बाद पुनः निर्यात के लिए सीमा शुल्क बांड के अंतर्गत लिए गए सामान

25. गुड़
26. हवन सामग्री
27. मानक रक्त तथा रक्त प्लाज्मा
28. दालों का छिलका
29. हाथ के बने देशी वाद्य यंत्र
30. खादी वस्त्र, खादी के सामान
31. कृपाण
32. कुमकुम, बिंदी आलता और सिंदूर
33. पंजाब उत्पाद शुल्क अधिनियम, 1914 के अंतर्गत जारी लाइसेंस एल-1क, एल-2, एल-2क, एल-2ख, एल-3, एल-3क, एल-4, एल-4क, एल-5, एल-5क, एल-5ख, एल-5ग, एल-9, एल-12क, एल-12ग, एल-13, एल-13क, एल-14, एल-14क, एल-14कक अथवा और एल-14ख के तहत बेची जाने वाली शराब (लिकर) : बशर्ते कि पंजाब राज्य में मूल्य वर्धित कर का भुगतान कर दिया गया हो।
34. मांस, मछली, प्राउन तथा अन्य जमीनी उत्पाद, अंडे, मवेशी तथा जानवरों के बाल
35. मिस्री, पतासा, फुलेन, मखाना और चिरबारा
36. राष्ट्रीय ध्वज
37. बिना ब्रांड का आटा, मैदा, सूजी और बेसन
38. सरकारी कोषागारों द्वारा बेचे जाने वाला गैर न्यायिक स्टाम्प पेपर : सरकार द्वारा बेचे जाने वाले लिफाफे एवं पोस्टकार्ड जैसी डाक सामग्री, भारतीय रिजर्व बैंक को बेचे जाने के लिए नोट तथा खुले रूप में अथवा बुक रूप में चेक
39. जैव खाद
40. पापड़
41. राखी
42. कच्चा ऊन तथा इसका कचरा
43. सेवारत सैन्य कार्मिकों तथा भूतपूर्व सेनाकार्मिकों को कैंटीन स्टोर विभाग द्वारा सीधे अथवा यूनिट द्वारा चलाई जाने वाली कैंटीनों के माध्यम से बेचे जाने वाली वस्तुएं
44. प्रसंस्कृत तथा ब्रांडेड नाम सहित सभी प्रकार का नमक
45. तिलहन को छोड़कर सभी प्रकार के बीज
46. वीर्य तथा प्रशीतित वीर्य
47. रेशम कीट तथा कच्ची रेशम एवं इसका कचरा
48. स्लेट तथा स्लेट पेंसिलें एवं चॉक
49. चीनी एवं खांडसारी
50. मीठा मांस (हलवाई द्वारा निर्मित वस्तुएं)
51. कच्चा हरा नारियल
52. कपड़ा तथा टेरी टॉवल्स
53. तम्बाकू
54. ताड़ी, नीरा एवं अरक
55. वान
56. गैस विशिष्ट जल, मिनरल, डिस्टील, औषधियां, टॉनिक, बैट्री, डीमिनरलाइज्ड वाटर तथा सीलबंद कंटेनर में बेचे जाने वाले जल में भिन्न जल
57. गेहूं ब्रान

3. औद्योगिक इनपुट की सूची और उसके साथ संलग्न पैकिंग मेटिरियल की सूची सहित उक्त अनुसूची ख के लिए निम्नलिखित अनुसूची और सूची प्रतिस्थापित होगी :

अनुसूची ख

(धारा 8 देखें)

4% की दर से कर योग्य वस्तुओं की सूची

क्रम संख्या	वस्तु का नाम
1.	कृषि उपकरण तथा उनके कलपुर्जे अनुसूची क में उल्लिखित को छोड़कर
2.	नट पाउडर तथा सुपारी
3.	बांस
4.	सभी प्रकार के बियरिंग

5. चादरें, तकिये के गिलाफ तथा अन्य इसी प्रकार के सामान
6. पत्तियां
7. सभी किस्मों और विवरणों की बेल्टें
8. बाइसाइकिल, ट्राई साइकिल, साइकिल रिकशा, टायर और ट्यूब तथा उनके कलपुर्जे
9. बायोमास ब्रिक्कुएट्स
10. बीटूमन
11. बोन मील
12. ब्रांडेड आटा, मैदा, सूजी एवं बेसन
13. फ्लाई ऐश ब्रिक्स, रिफ्रेक्ट्री ब्रिक्स, एसफाल्टिक रूफिंग अर्दन टाइल्स सहित सभी प्रकार के ईंट तथा
14. बहुमूल्य धातुओं को छोड़कर लोहा एवं इस्पात, अल्युमिनियम, प्लास्टिक अथवा अन्य धातुओं से निर्मित बस्तियां
15. मोमबस्तियां
16. पूंजीगत सामान अर्थात् संयंत्र एवं मशीनरी किंतु उस सामान को छोड़कर जिसके लिए कोई कर योग्य व्यक्ति इस अधिनियम की धारा 13 की उपधारा 5 के अंतर्गत इनपुट टैक्स क्रेडिट के लिए पात्र नहीं है।
17. कास्टर आयल
18. सेन्ट्रीफ्यूअल, मोनो ब्लॉक तथा सबमर्सिबल पंप एवं उनके कलपुर्जे
19. फायर क्ले, फाइल चाइना क्ले तथा बाल क्ले सहित क्ले
20. कोलतार
21. कॉफी बीन्स तथा सीड्स, कोको पॉड तथा चिकोरी
22. कॉयर मैट्रेस को छोड़कर कॉयर एवं कॉयर उत्पाद
23. कंचे
24. प्राइवेट ब्रांच एक्सचेंज (पीबीएस) तथा इलेक्ट्रॉनिक प्राइवेट ऑटोमेटिक ब्रांच एक्सचेंज (ईपीएबीएक्स) जैसे संचार उपकरण
25. कम्प्यूटर स्टेशनरी
26. काटेज चीज़ (पनीर)
27. कपास एवं कपास का कचरा
28. चरिया (कृसीबल्स)
29. पेपर तथा प्लास्टिक के कप एवं गिलास
30. अन्य किसी अनुसूची में शामिल की गई वस्तुओं को छोड़कर केन्द्रीय बिक्री कर अधिनियम, 1956 की धारा 14 में यथाविनिर्दिष्ट घोषित वस्तुएं
31. औषधि लाइसेंस के अंतर्गत निर्मित ड्रग्स एवं मेडिसीन तथा वैसीन, सीरिज एवं ड्रेसिंग, चिकित्सा मलहम, आई पी ग्रेड का हल्का तरल पैराफीन, चिकित्सा उपकरण
32. मेवा
33. खाद्य तेल
34. इलेक्ट्रोड्स
35. एम्ब्राइडरी अथवा जरी वस्तुएं अर्थात् इमी, जरी, कसाब, सैमा, डबका, चुमकी, गोटा सितारा, नक्सी, कोरा, ग्लास बीड तथा बडला
36. अभ्यास पुस्तिका, ग्राफ बुक्स तथा प्रयोगशाला नोट बुक्स
37. दूध पिलाने की बोतल तथा नीपल
38. लौह एवं अलौह धातु एवं मिश्रण : गैर धातु अर्थात् अल्युमिनियम ताम्बा, जिंक और इनसे निकले पदार्थ
39. सभी प्रकार के रेशे एवं रेशा कचरा
40. फ्लाई ऐश
41. तले एवं भुने चने एवं मूंगफली के दाने
42. हैंड पंप, उसके कलपुर्जे एवं फिटिंग्स
43. हाथ के औजार
44. दस्तकारी का सामान
45. लोहा एवं इस्पात का हार्डवेयर सामान (गैर एनीमलड अथवा प्लेटेड)
46. औषधिय पौधे, तना, शुष्क पौधे, शुष्क जड़, जिन्हें आमतौर पर जड़ी-बूटी तथा शुष्क पुष्पों के नाम से जाना जाता है।
47. हॉग
48. शहद

49. हौज पाइप तथा उसकी फिटिंग
50. हौजारी का सामान
51. हरीकेन लालटेन
52. आनाजों की भूसी
53. बर्फ
54. बनावटी आभूषण एवं सिंथेटिक जेम्स
55. अगरबत्ती, धूप कत्थी अथवा धूपबत्ती
56. औद्योगिक केबलें (हाई बोल्टेज केबल्स, पीबीसी अथवा ऐक्स एलपीई उष्मा रोधित तार एवं केबल्स, जेलीयुक्त केबल्स, ऑप्टिकल फाइबर)
57. इंसूलेटर्स
58. इंडस्ट्रियल इनपुट्स तथा पैकिंग सामग्री (अनुसूची के साथ संलग्न सूची के अनुसार)
59. कॉपीराइट, पेटेंट तथा रैप लाइसेंस जैसे सभी प्रकार की आमूर्त चीजें
60. कम्प्यूटर, टेलीफोन, सेलफोन, डिजिटल वीडियो डिस्क तथा कम्पैक्ट डिस्क टेलीप्रिंटर तथा वायरलेस उपकरणों सहित आई टी उत्पाद तथा उनके कलपूर्ज
61. कत्था
62. कैरोसिन लैम्प्स/लालटेन, पैक्टोमैक्स तथा ग्लास चिमनी
63. सार्वजनिक वितरण प्रणाली के माध्यम से बेचे जाने वाला मिट्टी का तेल
64. बुनाई की ऊन तथा सलाइयां
65. लाख तथा चपड़ा
66. पत्तलें एवं दोनें
67. लिग्नाइट
68. चूना, चूने का पत्थर, क्लिंकर एवं डोलोमाइट
69. लीनियर अल्काइल बैनजीन, एल.ए.बी. सल्फोनिक एसिड, अल्फा ओलेफोन सल्फोनेट
70. मेटल कार्बिड
71. कर मुक्त वस्तुओं को छोड़कर अन्य किसी वस्तुओं के निर्माण में प्रयोग के लिए खरीदे जाने वाला दूध
72. प्लास्टिक के मोल्डिड पदार्थ, हवाई चप्पल और उनकी बही
73. मुरमुरालू, पेसालू, अदुकुलू, पफ़ चावल और मूरी
74. नापा स्लैब (फर्स के रफ पत्थर) और शाहबाद स्टोन
75. निवार
76. मछुआरों द्वारा मछली पकड़ने में प्रयोग की जाने वाली गैर यंत्रिकृत नावें
77. नट, बोल्ट, स्कू, फास्नर्स और नेल्स
78. तेल की खली, तेल रहित खली और तेल निकाली हुई चावल की भूसी
79. तिलहन
80. धान, चावल, गेहूं और दालें
81. कागज, गत्ता और अखबारी कागज
82. पाइप और जी.आई.पाइप, सी.आई.पाइप, लचीला पाइप और पी.बी.सी. सहित सभी प्रकार की पाइप
83. पिज्जा ब्रेड
84. प्लास्टिक के जूते
85. प्लास्टिक दाना, प्लास्टिक पाउडर और मास्टर बैच्स
86. डायरी और कलेंडर सहित सामग्री
87. टोनर और कार्ट्रिज सहित मुद्रण स्याही
88. फल जैम, जेली, अचार, फ्रूट स्क्वैस, पेस्ट, फल पेय और फल रस सहित संस्कृत फल, सब्जियां (सीलबंद डिब्बों में या अन्यथा)
89. प्रसंस्कृत मांस पाउल्ट्री और मछली
90. बांस, लकड़ी और कागज का गूदा
91. रेलवे के बैगन, इंजन, डिब्बे और उनके पुर्ज
92. सिले सिलाए परिधान
93. रिफ्रेक्टरी मोनोलिथिक

94. पुनः उत्पादन योग्य ऊर्जा के साधन और उनके पुर्जे
95. स्टार्क विनिर्माण के अवशिष्ट और ऐसे ही अन्य अवशिष्ट, बीटपल्प, बगास और चीनी विनिर्माण, ब्यूइंग या निशेचन ड्रग और वेस्ट, शीरा को छोड़कर चाहे वह पैलिट्स के रूप में हों अन्यथा
96. चावल की भूसी
97. नदी का रेत
98. गैर तली या तली हुई मूंगफली और चने
99. माचिस
100. केन्द्रीय बिक्री कर अधिनियम, 1956 में यथाप्रावधानित प्रपत्र घ में घोषणा के अनुरूप राज्य सरकारों या केन्द्रीय सरकार को की गई बिक्रियां
101. सक्षम प्राधिकारी द्वारा विधिवत भरे गए तथा हस्ताक्षर किए गए प्रमाण पत्र पर विद्युत ऊर्जा के उत्पादन, पारेषण और वितरण के लिए पी.एस.ई.बी. को की गई बिक्रियां
102. स्कूल बैग्स
103. धातुओं, गैर धातुओं, शीशा और प्लास्टिक की कतरन, पेरिंग्स और कचरा
104. सिलाई मशीनें और उनके पुर्जे
105. जहाज तथा पानी में चलने वाले अन्य यान
106. हथकरघा रेशम को छोड़कर रेशमी वस्त्र
107. स्किम्ड मिल्क पाउडर और यू.एच.टी. मिल्क
108. सौल्वेन्ट तेल, आर्गेनिक सौल्वेन्ट तेल के अतिरिक्त
109. जीरा, सौंफ, हल्दी और सूखी मिर्च सहित सभी किस्म के मसाले
110. चश्मा, उनके हिस्से और संघटक, कान्टैक्ट लेंस और लेंस क्लीनर्स
111. व्यायाम तथा विविध जिम उपकरणों सहित खेलकूद का सामान, अनुषंगी और उनके पार्ट्स, स्पोर्ट्स ड्रेस फुटबाल सूज और स्पाइक्स
112. इस्पात की चादरें
113. स्टार्च
114. गन्ना
115. सभी प्रकार का सल्फर, सब लिमिटेड सल्फर, अवशिष्ट सल्फर और कोलोइडियल सल्फर को छोड़कर
116. इमली के बीज और चूरा
117. हरी चाय के अलावा चाय
118. इलैक्ट्रानिक के अतिरिक्त अन्य खिलौने
119. ट्रैक्टर और हार्वेस्टर, उनके अटैचमेंट और पुर्जे
120. ट्रांसफार्मर्स
121. ट्रांसमिशन टावरर्स
122. गार्डन अम्ब्रेला के अतिरिक्त अन्य छाते
123. बिना ब्रैंड वाली भुजिया और नमकीन
124. बिना ब्रैंड वाला कपड़ा धाने का साबुन
125. बहुमूल्य धातुओं के बने बर्तनों को छोड़कर प्रेसर कुकर और कड़ाही सहित सभी प्रकार के बर्तन
126. वनस्पति (हाइड्रोजनीकृत वनस्पति तेल)
127. गिंगिली ऑयल और ब्रान ऑयल सहित वेजीटेबिल ऑयल
128. रद्दी कागज
129. नरम खजूर और पोरिज
130. विद्युत उत्पादन और पानी खींचने के लिए बिन्ड मिल
131. लकड़ी की क्रेट्स
132. लिखने की स्पाही
133. लिखने के उपकरण, ज्योमेट्री बॉक्स, कलर बॉक्स, क्रेयान्स और पेन्सिल शार्पनर
134. सिलाई का धागा और यार्न वेस्ट सहित सभी प्रकार का यार्न
135. जिपर्स

औद्योगिक इनपुट्स और पैकिंग सामग्री की सूची
(अनुसूची की प्रविष्टि संख्या 56 देखें)

क्र.सं.	शीर्ष संख्या	विवरण
1	2	3
1.	1515.00.00	पशु (मछली सहित), वसा और तेल (कूड, रिफाईंड या शुद्धिकृत)
2.	1518.00.40	उबला हुआ, आक्सीडाइज्ड, निर्जलीकृत, सल्फराइज्ड, ब्लोन, निर्वात या इनर्ट गैस में आंच द्वारा पोलिमेराइज्ड या अन्यथा रासायनिक रूप से आसोधित पशु या वेजीटेबल वसा, वसा और इसी तरह के अन्य तेलों के अखाद्य मिश्रण या अन्य उत्पाद
3.	1520.00.00	गिलिसरोल, कूड, गिलिसरोल जल और गिलिसरोल लेई
4.	1521.00.00	वेजीटेबल मोम (ट्रिगलीसेराइड्स के अतिरिक्त, मक्खी मोम, कौड़े मकौड़ों से बना मोम तथा स्पर्म सेटी, परिषोधित या रंगा हुआ)
5.	1522.00.00	डोगरा, वसीय पदार्थों या पशु या वेजीटेबल या मोम के उपचार के उपरान्त अवशिष्ट
6.	1702.00.00	तरल ग्लूकोज (गैर औषधीय)
7.	2102.00.00	खमीर (सक्रिय या निष्क्रिय), एकल सेल माइक्रोऑर्गनिज्म, डैड (शीर्ष 3002 में उल्लिखित टीका को शामिल न करते हुए), तैयार बेकिंग पाउडर
8.	2207.20.00	किसी शक्ति का डिनेचर्ड इथाइल अल्कोहल
9.	2601.00.00	लोह अयस्क और संकेन्द्रण, रोस्टिड आयरन पाइराइट्स सहित
10.	2602.00.00	मैग्नीज अयस्क और संकेन्द्रण, शुष्क वजन पर परिकलित 20 प्रतिशत या उससे अधिक मैग्नीज संघटक सहित फेरुजीनस मैग्नीज अयस्क और संकेन्द्रण
11.	2603.00.00	तांबा अयस्क और संकेन्द्रण
12.	2604.00.00	निकिल अयस्क और संकेन्द्रण
13.	2605.00.00	कोबाल्ट अयस्क और संकेन्द्रण
14.	2606.00.00	एल्युमीनियम अयस्क और संकेन्द्रण
15.	2607.00.00	शीशा अयस्क और संकेन्द्रण
16.	2608.00.00	जिंक अयस्क और संकेन्द्रण
17.	2609.00.00	टिन अयस्क और संकेन्द्रण
18.	2610.00.00	क्रोमियम अयस्क और संकेन्द्रण
19.	2611.00.00	टंगस्टन अयस्क और संकेन्द्रण
20.	2612.00.00	यूरेनियम अयस्क और संकेन्द्रण
21.	2613.00.00	मोलिब्डेनियम अयस्क और संकेन्द्रण
22.	2614.00.00	टाइटेनियम अयस्क और संकेन्द्रण
23.	2615.00.00	नियोबियम, टेन्टालुम, वेनाडियम और जिर्कोनियम अयस्क और संकेन्द्रण
24.	2616.00.00	मूल्यवान धातु अयस्क और संकेन्द्रण
25.	2617.10.00	अन्य अयस्क और संकेन्द्रण
26.	2618.00.00	लोहा या इस्पात विनिर्माण से बचा दाने जैसा पदार्थ (स्लैग सैंड)
27.	2714.90.20	विट्रुमेन
28.	2707.00.00	उच्च ताप पर कोलतार के निसेचन से बना ऑयल तथा अन्य उत्पाद जिनमें सुगन्धित पदार्थों का वजन गैर सुगन्धित पदार्थों से अधिक हो
29.	2707.10.00	बेन्जोल
30.	2707.30.00	जीलोल
31.	2700.40.00	नेप्थालीन
32.	2707.60.00	फिनोल
33.	2707.91.00	क्रोसोट ऑयल
34.	2710.11.90	नेप्था (अन्य)

35.	2711.11.00	तरल रूप में प्राकृतिक गैस (एल पी जी, प्रोपेन और बूटेन को छोड़कर)
36.	2711.14.00	बूटाडीन
37.	2711.21.00	कम्प्रेस्ड प्राकृतिक गैस के अतिरिक्त गैस रूप में प्राकृतिक गैस (परिवहन ईंधन के रूप में प्रयुक्त)
38.	2712.20.00	सामान्य पैराफीन और पैराफीन मोम
39.	2707.20.00	टोलुओल
40.	2801.00.00	फ्लोरीन, क्लोरीन, ब्रोमीन और आयोडीन
41.	2802.00.00	सल्फर, सबलिमिड या प्रीसीपिटेडिड, कोलोडल सल्फर
42.	2803.00.00	कार्बन (अन्यत्र कहीं विशेषीकृत या शामिल नहीं किए गए काले कार्बन या कार्बन के अन्य रूपों)
43.	2804.00.00	हाइड्रोजन, रेयर गैस और अन्य गैर धातुएं
44.	2805.00.00	अल्कली या अल्कालाइन भू धातुएं, दुष्कर भू धातुएं, स्कैन्डियम ओर एक्ट्रियम, चाहे वह अन्तः मिश्रित और अन्तः एलाइड हों या न हों, पारा
45.	2807.00.00	सल्फ्यूरिक एसिड और उनके एनहिड्राइड, ओलियम
46.	2808.00.00	निट्रिक एसिड, सल्फोनिट्रिक एसिड
47.	2809.00.00	डी फास्फोरस पेन्टाआक्साइड, फास्फोरिक एसिड, और पोलि फास्फोरिक एसिड
48.	28010.00.00	आक्साइड या बोरान, बोरिक एसिड
49.	28011.00.00	अन्य इनऑर्गेनिक एसिड तथा गैर धातुओं के अन्य इनऑर्गेनिक आक्सीजन कम्पाउंड
50.	28012.00.00	गैर धातु हेलिड्स और हेलिड आक्साइड
51.	28013.00.00	गैर धातुगत सल्फाइड, वाणिज्यिक फास्फोरस ट्रेससल्फाइड
52.	28014.00.00	अमोनिया, एनहाइड्रस या इनक्वस घोल
53.	28015.00.00	सोडियम हाइड्रोआक्साइड (कार्बिक सोडा), पोटेशियम हाइड्रोआक्साइड (कार्बिक पोटाश), सोडियम या पोटेशियम या परआक्साइड
54.	2806.00.00	हाइड्रोजन क्लोराइड (हाइड्रोक्लोरिक एसिड), क्लोरोसल्फ्यूरिक एसिड।
55.	2816.00.00	मैग्नेशियम हाइड्रोआक्साइड और परआक्साइड, इस्ट्रोन्टियम या वेरियम के आक्साइड, हाइड्रोआक्साइड और परआक्साइड
56.	2818.00.00	रसायनिक रूप से परेभाषित या अन्यथा कृत्रिम कोरन्डम, एल्युमीनियम आक्साइड, एल्युमीनियम हाइड्रोआक्साइड
57.	2818.30.00	एल्युमीनियम हाइड्रोआक्साइड
58.	2819.00.00	क्रोमियम आक्साइड और हाइड्रोआक्साइड
59.	2820.00.00	मैंगनीज आक्साइड
60.	2821.00.00	आयरन आक्साइड और हाइड्रोआक्साइड
61.	2822.00.00	कोबाल्ट आक्साइड और हाइड्रोआक्साइड, वाणिज्यिक कोबाल्ट आक्साइड
62.	2823.00.00	टाइटेनियम आक्साइड
63.	2825.00.00	हाइड्राजीन और हाइड्रोजीलेमाइन तथा उनके इनऑर्गेनिक लवण, अन्य इनऑर्गेनिक बेस, अन्य मेटल आक्साइड, हाइड्रोआक्साइड और परआक्साइड
64.	2826.00.00	फ्लोराइड्स, फ्लोरोसिलिकेट, फ्लोरोएलुमिनेट्स और अन्य फ्लोरीन लवण सममिश्रण
65.	2827.00.00	क्लोराइड्स, क्लोराइड ऑक्साइड्स तथा क्लोराइड हाइड्रोक्साइड्स; ब्रोमाइड्स एवं ब्रोमाइड ऑक्साइड्स; आयोडाइड्स एवं आयोडाइड ऑक्साइड्स
66.	2828.00.00	हाइपोक्लोराइड्स; वाणिज्यिक कैल्शियम हापोक्लोराइड; क्लोराइड्स, हाइप्रोब्रोमाइड्स
67.	2829.00.00	क्लोरेट्स एवं परक्लोरेट्स, ब्रोमेट्स एवं परब्रोमेट्स; आयोडेट्स एवं पीरियोडेट्स
68.	2830.00.00	सल्फाइड्स पॉलीसल्फाइड्स
69.	2831.00.00	डिथियोनाइड्स एवं सल्फोजालेट्स
70.	2832.00.00	सल्फाइड्स; थियोसल्फेट्स
71.	2833.00.00	सल्फेट्स; ऐलम्स; पैरोक्जोएल्फेट्स (परसल्फेट्स)
72.	2834.00.00	नाइट्राइड्स, नाइट्रेट्स

73.	2835.00.00	फॉसफिनेट्स (हाइपोफॉसफाइड्स), फॉसफोनेट्स (फॉसफाइड्स), फॉसफेट्स एवं पोलिफॉसफेट्स
74.	2836.00.00	कार्बोनेट्स; पेरोक्सोकार्बोनेट्स (परकार्बोनेट्स); वाणिज्यिक अमोनियम कार्बोनेट्स जिनमें अमोनियम कार्बोनेट हो।
75.	2837.00.00	साइनाइड्स, साइनाइड ऑक्साइड्स एवं कम्पलेक्स साइनाइड्स
76.	2838.00.00	फल्मीनेट्स, साइनेट्स, एवं थियोसाइनेट्स
77.	2840.00.00	बोरेट्स; पेरोक्सोबोरेट्स (परबोरेट्स)
78.	2841.00.00	सोडियम डाइक्रोमेट
79.	2841.50.90	पोटेशियम डाइक्रोमेट
80.	2844.00.00	रेडियोएक्टिव रसायनिक तत्व तथा रेडियोएक्टिव आइसोटोप (विखंडनीय रसायनिक तत्वों तथा आइसोटोपों सहित) तथा उनके यौगिक; मिश्रण एवं अवशिष्ट जिनमें ये पदार्थ हों।
81.	2845.00.00	शीर्ष सं. 2844 से इतर आइसोटोप; ऐसे आइसोटोपों के यौगिक, अकार्बनिक अथवा कार्बनिक, चाहे वे रसायनिक रूप से परिभाषित हों अथवा नहीं।
82.	2846.00.00	दुर्लभ जमीनी धातुओं यट्रियम अथवा स्कैंडियम अथवा इन दोनों धातुओं के मिश्रणों के यौगिक, कार्बनिक अथवा अकार्बनिक
83.	2847.00.00	हाइड्रोजन पेरोक्साइड, चाहे वह यूरिया के साथ ठोस की गई हो अथवा नहीं।
84.	2848.00.00	फॉसफाइड्स, चाहे वे रसायनिक रूप से परिभाषित हों अथवा नहीं, फैंरोफॉसफोरस को छोड़कर
85.	2849.00.00	कैल्शियम कारबाइड
86.	2901.00.00	एक्राइलिक हाइड्रोकार्बन
87.	2901.00.00	प्रोपाइलीन, इथाइलीन
88.	2982.00.00	साइक्लिक हाइड्रोकार्बन
89.	2903.00.00	हाइड्रोकार्बन के हेलोजिनेटिड संजात
90.	2904.00.00	सल्फोनेटिड, हाइड्रोकार्बन के सल्फोनेटिड, नाइट्रेटिड अथवा नाइट्रोसेटिड संजात, चाहे वे हेलोजिनेटिड हों अथवा नहीं।
91.	2905.00.00	असाइक्लिक अल्कोहल तथा उनके हेलोजिनेटिड, सल्फोनेटिड, नाइट्रेटिड अथवा नाइट्रोसेटिड संजात
92.	2905.11.00	मिथानोल
93.	2905.31.00	डाइथाइलीन ग्लाइकोल, मोनो इथाइलीन ग्लाइकोल, ट्राइथाइलीन ग्लाइकोल, इथाइलीन ग्लाइकोल, भारी इथाइलीन ग्लाइकोल
94.	2906.00.00	साइक्लिक अल्कोहल तथा उनके हेलोजिनेटिड, सल्फोनेटिड, नाइट्रेटिड अथवा नाइट्रोसेटिड संजात
95.	2907.00.00	फिनायल तथा इसके साल्ट
96.	2908.00.00	फिनायल अथवा फिनायल - अल्कोहल के हेलोजिनेटिड, सल्फोनेटिड, नाइट्रेटिड अथवा नाइट्रोसेटिड संजात
97.	2909.00.00	इथर्स, इथर-अल्कोहल पेरोक्साइड्स, ईथर पेरोक्साइड्स, कीटोन पेरोक्साइड (चाहे वे रसायनिक रूप से परिभाषित हों अथवा नहीं) तथा उनके हेलोजिनेटिड, सल्फोनेटिड, नाइट्रेटिड अथवा नाइट्रोसेटिड संजात।
98.	2910.00.00	इपोक्साइड्स, इपोक्सोअल्कोहल, इपोक्सीफिनायल तथा इपोजाइथर्स एक त्रि-सदस्यीय रिंग के साथ तथा उनके हेलोजिनेटिड, सल्फोनेटिड, नाइट्रेटिड अथवा नाइट्रोसेटिड संजात
99.	2910.00.00	इथाइलीन ऑक्साइड
100.	2911.00.00	एसीटल तथा हेमीएसीटल, चाहे वे अन्य ऑक्सीजन कार्य के साथ हों अथवा नहीं तथा उनके हेलोजिनेटिड, सल्फोनेटिड, नाइट्रेटिड अथवा नाइट्रोसेटिड संजात।
101.	2912.00.00	एल्डीहाइड फंक्शन यौगिक, एल्डीहाइड्स चाहे वे अन्य आक्सीजन कार्य के साथ हों अथवा नहीं; एल्डीहाइड्स के साइक्लिक पोलिमर्स; पैराफार्मिलडीहाइड
102.	2913.00.00	शीर्ष सं. 2912 के पदार्थों के हेलोजिनेटिड, सल्फोनेटिड, नाइट्रेटिड अथवा नाइट्रोसेटिड संजात
103.	2915.00.00	संतृप्त असाइक्लिक मोनोकार्बोक्सिलिक अमल, तथा उनके एनहाइड्राइड्स, हैलाइड्स, पेरोक्साइड्स तथा पेरोक्सीएसिड्स; उनके हेलोजिनेटिड, एल्फोनेटिड, नाइट्रेटिड अथवा नाइट्रोसेटिड संजात
104.	2916.00.00	असंतृप्त असाइक्लिक मोनोकार्बोक्सिलिक अमल, साइक्लिक मोनोकार्बोक्सिलिक अमल, उनके एनहाइड्राइड्स, पेरोक्सीएसिड्स; उनके हेलोजिनेटिड सल्फोनेटिड, नाइट्रेटिड अथवा नाइट्रोसेटिड संजात

105.	2917.00.00	पोलीकार्बोजिलिक अम्ल, उनके एनहाइड्राइड्स, हैलाइड्स, पेरोक्साइड्स तथा पेरोक्सीएसिड्स; उनके हेलोजिनेटिड सल्फोनेटिड, नाइट्रेटिड अथवा नाइट्रोसेटिड संजात
106.	2917.36.00	टैरेफथैलिक अम्ल तथा इसके सॉल्ट
107.	2917.37.00	डाइमीथाइल टैरेफथैलेट
108.	2918.00.00	कार्बोजिलिक अम्ल अतिरिक्त ऑक्सीजन कार्य के साथ तथा उनके एनहाइड्राइड्स, हैलाइड्स, पेरोक्साइड्स एवं पेरोक्सीएसिड्स; उनके हेलोजिनेटिड, सल्फोनेटिड, नाइट्रेटिड अथवा नाइट्रोसेटिड संजात
109.	2919.00.00	फासफोरिक ईस्टर्स तथा उनके सॉल्ट, लैकटोफोस्फेट्स सहित; उनके हेलोजिनेटिड, सल्फोनेटिड, नाइट्रेटिड अथवा नाइट्रोसेटिड संजात
110.	2920.00.00	अन्य अकार्बनिक अम्लों के ईस्टर (हाइड्रोजन हैलाइड्स के ईस्टरों को छोड़कर) तथा उनके सॉल्ट, उनके हेलोजिनेटिड, सल्फोनेटिड, नाइट्रेटिड अथवा नाइट्रोसेटिड संजात
111.	2921.00.00	एमाइन-फंक्शन यौगिक
112.	2922.00.00	ऑक्सीजन फंक्शन अमीनो संजात
113.	2923.00.00	क्वाटनरी अमोनियम सॉल्ट और हाइड्रोक्साइड्स; लेसिथिन्स तथा अन्य फॉस्फोमिनोलिपिड्स
114.	2924.00.00	कार्बोक्सीमाइड-फंक्शन यौगिक; कार्बोनिक अम्ल के एमाइड-फंक्शन यौगिक
115.	2925.00.00	कार्बोक्सीमाइड-फंक्शन यौगिक (शकरिन एवं इसके लवणों सहित) तथा इमाइन-फंक्शन यौगिक
116.	2926.00.00	नाइट्राइल-फंक्शन यौगिक
117.	2927.00.00	डियाजो, आजो अथवा अजोक्सी-यौगिक
118.	2928.00.00	हाइड्रोजन अथवा हाइड्रोक्सीलैमाइन के कार्बनिक संजात
119.	2929.00.00	अन्य नाइट्रोजन कार्य के साथ यौगिक
120.	2930.00.00	आर्गनो-सल्फर यौगिक
121.	2931.00.00	अन्य ओर्गनो अकार्बनिक यौगिक
122.	2932.00.00	केवल ऑक्सीजल हिड्रोएटम के साथ हिड्रोसाइकलिक यौगिक
123.	2933.00.00	केवल नाइट्रोजन हिड्रोएटम के साथ हिड्रोसाइकलिक यौगिक
124.	2934.00.00	न्यूक्लीक अम्ल तथा उनके लवण; हिड्रोसाइकलिक यौगिक
125.	2935.00.00	सल्फोनैमाइड्स
126.	2938.00.00	ग्लाइकोसाइड्स, प्राकृतिक अथवा संश्लेषण द्वारा पुनः उत्पादित तथा उनके लवण, ईथर्स, ईस्टर्स एवं अन्य संजात
127.	2939.00.00	वेजीटेबल एल्कलॉयड्स, प्राकृतिक अथवा संश्लेषण द्वारा पुनः उत्पादित तथा उनके लवण, ईथर्स, ईस्टर्स एवं अन्य संजात
128.	2942.00.00	अन्य कार्बनिक यौगिक
129.	3201.00.00	वेजीटेबल मूल के टैनिंग अर्क; टैनिन्स एवं उनके लवण, ईथर्स, ईस्टर्स तथा अन्य संजात
130.	3202.00.00	सिंथेटिक कार्बनिक टैनिंग पदार्थ; अकार्बनिक टैनिंग पदार्थ, टैनिंग तैयार करना, चाहे उनमें प्राकृतिक टैनिंग पदार्थ हों अथवा नहीं; पूर्व टैनिंग के लिए एंजाइमेटिक तैयारी
131.	3203.00.00	वनस्पति अथवा पशु मूल का रंगने वाला पदार्थ (रंगने वाले अर्कों सहित किंतु काने पशुजन्य पदार्थ को छोड़कर) चाहे वह रसायनिक रूप से परिभाषित हो अथवा नहीं; वनस्पति अथवा पशु मूल के रंगने वाले पदार्थ के आधार पर तैयार किए गए जैसा कि इस अध्याय के नोट 3 में विनिर्दिष्ट है।
132.	3204.00.00	सिंथेटिक कार्बनिक रंगने वाले पदार्थ, चाहे वे रसायनिक रूप से परिभाषित हो अथवा नहीं, सिंथेटिक कार्बनिक रंगने वाले पदार्थ के आधार पर तैयार की गई वस्तुएं जैसा कि इस अध्याय के नोट 3 में विनिर्दिष्ट है, एक प्रकार के सिंथेटिक कार्बनिक उत्पाद जिनका उपयोग फ्लोरोसेंट ब्राइटनिंग एजेंटों अथवा ल्यूमिनोफोरम के रूप में होता है, चाहे वे रसायनिक रूप से परिभाषित हो अथवा नहीं।
133.	3205.00.00	कलर लेक्स; कलर लेक्स के आधार पर तैयार की गई वस्तुएं जैसा कि इस अध्याय के नोट 3 में विनिर्दिष्ट है।
134.	3206.00.00	अन्य रंगने वाले पदार्थ, वस्तुएं जैसी कि इस अध्याय के नोट 3 में विनिर्दिष्ट है, शीर्ष 3203, 3204 अथवा 3205 में दी गई वस्तुओं से अलग, एक प्रकार के अकार्बनिक उत्पाद जिनका उपयोग ल्यूमिनोफोरम से रूप में होता है, चाहे वे रसायनिक रूप से परिभाषित हों अथवा नहीं।

135. 3207.00.00 शीशे की फ़्रिट तथा अन्य शीशा, पाउडर, ग्रेन्यूल अथवा फ्लेक्स के रूप में।
136. 3211.00.00 तैयार किए गए ड्रायर।
137. 3212.00.00 डाईयां, अम्लीय डाईयां, एलीजैरीन डाईयां, बेकिस डाईयां।
138. 3215.00.00 मुद्रण स्याही चाहे वह गाढ़ी अथवा ठोस हो या नहीं।
139. 3302.00.00 सिंथेटिक फ्लेवरिंग एसेंस।
140. 3402.00.00 कार्बनिक सर्फेस सक्रिय एजेंट (साबुन के अलावा), सर्फेस-सक्रिय वस्तुएं, धुलाई की वस्तुएं (धुलाई की सहायक वस्तुओं सहित) तथा सफाई की वस्तुएं; चाहे उनमें साबुन हो अथवा नहीं, शीर्ष 3401 के अंतर्गत दी गई वस्तुओं से अलग।
141. 3403.00.00 लुब्रिकेटिंग वस्तुएं (कटिंग ऑयल वस्तुओं, बोल्ट अथवा नट रिलीज वस्तुओं, जंग रोधी अथवा संक्षरण रोधी वस्तुओं तथा मोल्ड रिलीज वस्तुओं सहित जो लुब्रिकेंट्स पर आधारित हों) तथा एक प्रकार की वस्तुएं जो वस्त्र सामग्री, चमड़े, फर्सकिन्स अथवा अन्य सामग्री के तेल अथवा ग्रीस उपचार के लिए उपयोग होती हैं किंतु उन वस्तुओं को छोड़कर जिनमें 70 प्रतिशत अथवा अधिक भार के मूल घटक पेट्रोलियम तेल अथवा बिटुमिन्स मिनरलों से प्राप्त तेल हों।
-जिनमें पेट्रोलियम तेल अथवा बिटुमिन्स मिनरलों से प्राप्त तेल हों।
142. 3501.00.00 केसीन, केसीनेट्स और अन्य केसीन डेरीवेटिव्स, केसीन ग्लू।
143. 3503.00.30 हड्डियों, खाल और इसी तरह की चीजों से बनाई गई ग्लू : फिश ग्लू।
144. 3507.00.00 एन्जाइम; तैयार एन्जाइम जो अन्यत्र बताई अथवा शामिल न की गई हो।
145. 3707.00.00 फोटोग्राफिक इस्तेमाल के लिए रासायनिक उत्पाद (वार्निश, ग्लू, एडहेसिव और इसी तरह के उत्पादों के अलावा) : फोटोग्राफिक इस्तेमाल के लिए अमिश्रित उत्पाद, बने हुए अनुपात में बनाई गई अथवा इस्तेमाल के लिए तैयार उत्पाद के रूप में खुदय बिक्री के लिए रखी गई।
146. 3801.00.00 कृत्रिम ग्रेफाइट; कोलोडियल अथवा सेली कोलोडियल ग्रेफाइट; पेस्ट, ब्लाक, पेस्ट अथवा अन्य अर्ध उत्पादकों के रूप में ग्रेफाइट अथवा अन्य कार्बन पर आधारित उत्पाद।
147. 3802.00.00 एक्टीवेटिड कार्बन, एक्टीवेटिड प्राकृतिक खनिज उत्पाद, एनिमल ब्लैक और इस्तेमाल किया जा चुका एनीमल ब्लैक।
148. 3804.00.00 बुड पल्प के उत्पाद से बचा हुआ तरल पदार्थ, चाहे उसे कंसंट्रेट किया गया हो अथवा नहीं, डेसुगेयर्ड अथवा रासायनिक तौर पर किया गया और लिगनिन सल्फोनेट्स, किन्तु इसमें टाल ऑयल शीर्ष सं. 38.03 को शामिल नहीं किया गया है।
149. 3806.00.00 रोसिन और रेसिन एसिड और उसके डेरिवेटिव्स, रोसिन स्पिरिट और रोसिन ऑयल, रन गम्स।
150. 3806.10.90 प्रिंटिंग उद्योग में इस्तेमाल किए गए रिड्यूसर्स और ब्लैकेट वाश/रोलर वाश। (ऑर्गेनिक कंपोजिट सॉल्वेंट्स और थिन्नर बताए अथवा शामिल न किए गए हों।)
151. 3807.00.00 बुड तार, बुड तार ऑयल, बुड क्रेयोसॉट, बुड नाफ्था, वेजिटेबल पिच, ब्रिबर पिच और रोसिन, रेजिन एसिडों अथवा वेजिटेबल पिच के आधार पर तैयार किए गए इसी तरह के उत्पाद।
152. 3809.00.00 फिनिशिंग एजेंट्स, डाई कैरियर्स जिनसे ड्यू-स्टफ और अन्य उत्पादों की डाईंग अथवा फिक्सिंग को बढ़ाया जाता है (उदाहरण के तौर पर ड्रेसिंग और मॉरडेंट्स)। कपड़ा, कागज, चमड़ा अथवा इसी तरह के उद्योगों में इस्तेमाल की गई वस्तुएं जिन्हें अन्यत्र बताया अथवा शामिल न किया गया हो।
153. 3810.00.00 धातु के तलों के लिए पिकलिंग उत्पाद, सोल्जरिंग ब्रेजिंग अथवा वेल्डिंग के लिए फ्लक्स और अन्य ऑक्सीलियरी उत्पाद; सोल्जरिंग ब्रेजिंग अथवा वेल्डिंग पाउडर और धातु और अन्य पदार्थों वाले पेस्ट; इलेक्ट्रोड्स या रॉड्स की वेल्डिंग के लिए कोर अथवा कोटिंग के रूप में इस्तेमाल किए गए उत्पाद।
154. 3812.10.00 तैयार किए गए रबड़ के एक्सीलिरेटर्स, रबड़ अथवा प्लास्टिक के लिए कंपाउंडेड प्लास्टिफाइर्स, जिन्हें अन्यत्र बताया अथवा शामिल न किया गया हो; एंटीआक्सीडाइजिंग उत्पाद और रबड़ अथवा प्लास्टिक के लिए अन्य कंपाउंड स्टेबिलाइजर्स।
155. 3815.00.00 रिएक्शन इनिशिएटर्स, रिएक्शन एसक्सीलिरेटर्स और केटलाइसिक उत्पाद जिन्हें अन्यत्र बताया अथवा शामिल न किया गया हो।

156.	3817.00.00	शीर्ष संख्या 2707 अथवा 2902 की वस्तुओं से अलग मिश्रित अल्काइलबेंजर्स और मिश्रित अल्काइलेनफथलीन्स।
157.	3818.00.00	डिस्क, वेफर्स अथवा इसी प्रकार के रूपों में; इलेक्ट्रानिक्स में इस्तेमाल के लिए मिलाए गए रासायनिक अवयव; इलेक्ट्रानिक्स में इस्तेमाल के लिए मिलाए गए रासायनिक मिश्रण।
158.	3823.00.00	औद्योगिक मोनोकार्बोक्साइलिक चिकनाई वाले एसिड, रिफाइनिंग, औद्योगिक चिकनाई वाले एलकोहल से एसिड तेल।
159.	3824.90.21	इलेक्ट्रोप्लेटिंग साल्ट।
160.	3901.00.00	प्रारंभिक रूपों में एथीलीन के पॉलीमर।
161.	3901.10.10	लाइनर लो डेंसिटी पॉलीथाइलीन (एलएलडीपीई) और लो डेंसिटी पॉलीथाइलीन (एलडीपीई)।
162.	3901.10.90	हाई डेंसिटी पॉलीथाइलीन (एचडीपीई)।
163.	3902.00.00	प्रारंभिक रूपों में प्रोपइलीन के पॉलीमर।
164.	3903.00.00	प्रारंभिक रूपों में स्टाइरीन के पॉलीमर-पॉलीस्टाइरीन।
165.	3904.00.00	प्रारंभिक रूपों में विनाइल क्लोराइड अथवा अन्य हेलोजिनेटेड ओलिफिन्स के पॉलीमर।
166.	3904.00.00	पॉलीविनाइल क्लोराइड (पीवीसी)।
167.	3905.00.00	प्रारंभिक रूपों में एक्रैरिक पॉलीमर।
168.	3907.10.00	प्रारंभिक रूपों में पॉलीएसीटेल्स, अन्य पॉलीएथर्स और एपोक्साइट रेजिन्स, पॉलीकार्बोनेट्स, अल्कारल रेजिन्स, पॉलीएलीलेस्टर्स तथा प्रारंभिक रूपों में अन्य पॉलीएस्टर्स।
169.	3907.00.00	पॉलीएथीलीन टेरिफथलेट चिप्स।
170.	3908.00.00	प्रारंभिक रूपों में पॉलीएमिड्स।
171.	3909.00.00	एमिनो-रेजिन्स, केनोलिक रेजिन्स और प्रारंभिक रूपों में पॉलीयूरिथेन्स।
172.	3910.00.00	प्रारंभिक रूपों में सिलिकोन्स।
173.	3911.00.00	पेट्रोलियम रेजिन्स, क्यूमेरोन-इंडेन रेसिन्स, पोलिटरपिनेस, पोलिसोफाइड्स, पोलिसल्फोन्स और इस अध्याय के नोट 3 में उल्लिखित अन्य उत्पाद, जिन्हें प्रारंभिक रूपों में अन्यत्र बताया अथवा शामिल किया गया हो।
174.	3912.00.00	सेल्यूलोस और इससे रासायनिक डेरिवेटिव तथा अन्य सेल्यूलोज जिन्हें प्रारंभिक रूपों में अन्यत्र बताया अथवा शामिल किया गया हो।
175.	3913.00.00	प्राकृतिक पोलिमर (उदाहरण के लिए, अल्जीनिक एसिड) और संशोधित प्राकृतिक पोलिमर (उदाहरण के लिए, कठोर बनाए गए पोर्टिन, प्राकृतिक रबड़ के रासायनिक डेरिवेटिव जिन्हें प्रारंभिक रूपों में अन्यत्र बताया अथवा शामिल किया गया हो।)
176.	3914.00.00	प्रारंभिक रूपों में, शीर्ष संख्या 3901 से 4913 के पोलिमर्स पर आधारित आयन-एक्सचेंजर्स।
177.	3917.22.00	प्रारंभिक रूपों में, प्रोफिलीन अथवा अन्य ओलफिन के पोलिमर।
178.	3918.10.00	प्रारंभिक रूपों में, विनाइल क्लोराइड अथवा अन्य हेनोजिनेटेड ओलफिन के पोलिमर।
179.	3919.00.00	स्वयं चिपकने वाली प्लेटें, शीटें, फिल्म फॉइलें, स्ट्रिप्स और प्लास्टिक के अन्य सपाट रूप जो रोल्स में हो अथवा न हों।
180.	3920.00.00	लचीली प्लेन फिल्में।
181.	3920.00.00	प्लास्टिक की वस्तुओं की पैकिंग की चीजें अर्थात् डिब्बे, केस, क्रेट, कंटेनर, कार्बॉय, बोतल, जरीकेन और उनके प्लास्टिक के स्टॉपर, लिड, ढक्कन (किन्तु इसमें इन्सुलेटिड वेयर शामिल नहीं हैं)।
182.	3923.00.00	स्टॉपर, कैप, लिड, (क्राउन, कार्क, चूड़ी वाले ढक्कन और उडेलने वाले स्टॉपर) बोतलों के लिए कैप्सूल, धागे वाले बंग, बंग कवर, सील और बेस धातु की, पैकिंग संबंधी अन्य वस्तुएं।
183.	4001.00.00	प्रारंभिक रूपों में अथवा प्लेट, शीट अथवा स्ट्रिप के रूप में प्राकृतिक रबड़, बलाटा, गट्टा, गोयूल, चिक्कल और इसी प्रकार के अन्य प्राकृतिक गोंद।
184.	4002.00.00	प्रारंभिक रूपों अथवा प्लेटों में तेलों से निकाला हुआ सिंथेटिक रबड़ और फैक्ट्रीस, शीट्स या स्टीप और शीर्ष सं. 4001 से प्रारंभिक रूपों अथवा प्लेटों अथवा शीट्स के रूपों में इस शीर्ष के किसी उत्पाद के साथ मिश्रण।

185.	4003.00.00	प्रारंभिक रूपों अथवा प्लेट्स, शीट्स या स्ट्रिप् के रूप में रिकलेम्ड रबड़।
186.	4005.00.00	शीर्ष सं. 4006 में अनवलकेनाइज्ड रबड़ के रूपों और वस्तुओं के अलावा प्रारंभिक रूपों अथवा प्लेट्स अथवा स्ट्रिप् में कम्पाउण्डेड रबड़।
187.	4008.00.00	वेनीर।
188.	47901.00.00	मैकेनिकल लकड़ी की लुगदी।
189.	47902.00.00	रसायनिक लकड़ी की लुगदी, अर्ध रसायनिक लकड़ी की लुगदी तथा अन्य फाइबरस सेल्युलोजिक वस्तुओं की लुगदी।
190.	4819.00.00	कार्टन (फ्लेटेड अथवा फोल्डेड कार्टन सहित) बक्से (फ्लेटेड अथवा फोल्डेड बक्से), बैग तथा कागज से अन्य पैकिंग कंटेनर, पेपरबोर्ड जुड़ी अथवा खुली हुई अवस्था में।
191.	4821.00.00	पेपर प्रिंटेड लेबल तथा पेपरबोर्ड प्रिंटेड लेबल।
192.	4823.12.00	पेपर के लिए प्रयुक्त होने वाली स्वतः चिपकने वाली टेप तथा प्रिंटेड रेपर।
193.	5402.00.00	सिंथेटिक फिलामेंट यार्न (आंशिक रूप से) ओरिएंटेड यार्न, पॉलिएस्टर टेक्सच्युराइज्ड यार्न।
194.	5505.00.00	मानवनिर्मित फाइबर (नोइल्स, यार्नवेस्ट और गार्नेटेड स्टॉक सहित) अपकर्ण।
195.	6305.10.00	शीर्ष सं. 5303 का रेशों पर आधारित सामान की पैकिंग के लिए प्रयुक्त होने वाला जूट या अन्य टैक्सटाइल आधारित एक प्रकार के बोरे और बैग।
196.	7010.90.00	खपच्चियाँ, बोतलें, जार कांच की दवा की शीशियाँ, स्टोयर्स, लीड्स व ग्लास का अन्य क्लोजर।
197.	7601.20.00	अल्युमीनियम, इसका अलौह तथा इसके उत्पाद (बहिष्करण को छोड़कर)।
198.	7604.29.10	अल्युमीनियम कंडक्टर स्टील रीइन्फोर्सड (एसीएसआर)।
199.		तेजाब का घोल।
200.		क्रियाशील कार्बन।
201.		निकल, जस्ता, तांबा, साटिप निकल, क्रोमब्रास, रजत, स्वर्ण, अल्युमीनियम, लीड, टिन, टिन कोबोल्ड आदि जैसी विभिन्न प्रकार की इलेक्ट्रोप्लेटिंग में प्रयुक्त होने वाले योगज, नमक, स्टिप्स, अप्रतिरोधक अंतस्थ तथा अन्य रसायन।
202.		प्लास्टिक कंटेनर, टिन कंटेनर और ग्लास कंटेनर सहित सभी पैकिंग सामग्रियाँ।
203.		एमिनो हार्डनर, एपॉक्सी हार्डनर, एक्सीलेटर, एपॉक्सी रेजिंस, एपॉक्सी हार्डनर, यूएफ रेजिंस।
204.		बेसिक क्रोमियम सल्फेट, सोडियम बाई क्रोमेट, तरल ब्लीच।
205.		बोन साइन्यूज (अस्थि मांसपेशी)।
206.		हड्डियाँ (जली हुई)।
207.		हड्डियाँ (पीसी हुई)।
208.		बोरिक एसिड और ब्रॉमेक्स पाउडर।
209.		ब्रेकेट्स ऑफ बियरिंग्स।
210.		बटन, इलास्टिक, जिप पेपर फोम।
211.		कास्टिक और सोडा भस्म।
212.		सी पी एक्सेसरिज।
213.		डीग्रीसिंग, प्रीपेरेशंस, वेटिंग एजेंट्स पेनिट्रेटसी।
214.		रेगमाल पाउडर, एनिमलग्लू, लैंडर व्हील लस्टर, (पालिशिंग मिश्रण) कॉटन, बप्स, नामदा, फ्लैप व्हीलस और पॉलिश की सभी प्रकार की सामाग्रियाँ और स्टील के तार के ब्रश।
215.		एथाइलीन डायमाइन टेप्रा एसेटिक एसिड, निट्रिलो ट्रियासेट्रिक एसिड और उनका मूल (अन्य आर्गेनिक-इनआर्गेनिक घटक)।
216.		हाथ के औजार।

217.	हॉजरी निटिंग, नीडल्स।
218.	मेजस्टार्च, ग्लूकोज डी मेज ग्लटन, मेज जर्म और तेल।
219.	मोटर स्टेम्पिंग।
220.	निकल सल्फेट, निकल क्लोराइड, निकल कार्बोनेट, क्रोमिक एसिड, क्रोमिसॉल्ट और अन्य तेजाब आदि।
221.	नाइट्रोसेल्युलोज लीकर्स इनएक्यूअस एण्ड नॉन एक्यूअस मीडियम।
222.	नानफेरस मेटल्स, लाइक कॉपर, जिंक, निकल, टिन, मँगनीज सिलिकोन, एल्यूमीनियम, लीड एमोड।
223.	नट और बोल्ट्स, स्क्रू और फास्टनर्स।
224.	ऑर्गनिक कम्पोजिट सॉल्वेंट्स थिनर्स।
225.	पेपरकोन्स एण्ड पेपर पाइप।
226.	पालिएस्टर स्टेपल फाइबर वेस्ट।
227.	पालिएस्टर स्टेपल फाइबर, पालिएस्टर स्टेपल फाइबर फिल एण्ड एक्रिलिक फाइबर।
228.	पॉवर कोटिंग, स्टोविंगइनेमल्स, स्टोविंग प्राइमर्स एण्ड स्टोविंग थिनर्स।
229.	प्रिपेयर्ड लिक्विड पिगमेंट्स एण्ड डाइ सोल्यूशंस।
230.	चरखी।
231.	छपाई उद्योग में प्रयुक्त होने वाले अवरोधक।
232.	सोडियम एसिटेट, सोडियम सल्फेट, हाइड्रोजन पेरोक्साइड।
233.	सोडियम बाई सल्फेट एण्ड सोडियम मेटाबाई सल्फेट।
234.	सोडियम नाइट्रिट, सोडियम नाइट्रेट, पोटेशियम नाइट्रेट।
235.	सोडियम सिलिकेट।
236.	सोडियम सल्फाइड।
237.	तारपीन का तेल।
238.	वूलटॉप्स, एक्रिलिक टॉप्स, विस्कोज टॉप्स, नाइलोन टॉप्स एण्ड ब्लेंडेड टॉप्स।
239.	जिंक ऑक्साइड।

अनुसूची-ग

(खंड 8 देखें)

1 प्रतिशत की दर से कर योग्य वस्तुओं की सूची

क्रम सं.	जिंस का नाम
1.	सोने चांदी की ईंटें (बूलियंस)
2.	स्वर्ण, रजत और प्लेटिनम जेवरात
3.	कुलीन धातुएं और जेवरात
4.	बहुमूल्य पत्थर

अनुसूची-घ

(खंड 8 देखें)

20 प्रतिशत की दर से कर योग्य वस्तुओं की सूची

क्रम सं.	जिंस का नाम	कर की दर
1.	विमानन टरबाइन ईंधन	

अनुसूची-ड.

(खंड 8 देखें)

विशेष दरों पर कर योग्य वस्तुओं की सूची

क्रम सं.	जिंस का नाम	कर की दर
----------	-------------	----------

1. डीजल	8.8 प्रतिशत
2. मदिरा और शीरा	22 प्रतिशत
3. लॉटरियां	30 प्रतिशत
4. पेट्रोल	27.5 प्रतिशत

अनुसूची-च

(खंड 8 देखें)

12.5 प्रतिशत की दर से कर योग्य वस्तुओं की सूची

किसी अन्य अनुसूची में वस्तुओं का उल्लेख नहीं किया गया है।

अनुसूची-छ

(खंड 18 देखें)

1 संयुक्त राष्ट्र तथा इसकी संघटक एजेंसियां जैसे :—

i.	यूएनडीपी
ii.	यूनेस्को
iii.	यूएनएफपीए
iv.	यूएनएचसीआर
v.	सूनीसेफ
vi.	यूनिडो
vii.	यूनिफेम
viii.	डब्ल्यूएफएओ
ix.	डब्ल्यूएचओ
x.	आईएलओ
2.	राजनयिक मिशन

अनुसूची-ज

(खंड 19 देखें)

i.	धान
i.	गेहूँ
ii.	सूत
iii.	गन्ना
iv.	दूध, कर मुक्त वस्तुओं के अलावा किसी वस्तु के उत्पादन में उपयोग के लिए खरीद करते समय।

NOTIFICATION

New Delhi, the 15th December, 2005.

G.S.R. 718(E).—In exercise of the powers conferred by Section 87 of the Punjab Reorganisation Act, 1966 (31 of 1966), the Central Government hereby extends to the Union territory of Chandigarh, the Punjab Value Added Tax Act, 2005 (Punjab Act No. 8 of 2005) as in force in the State of Punjab on the date of this notification, subject to the following modifications, namely:—

MODIFICATION**I. Throughout the Act,—**

(a) for the words “the State of Punjab” and “State” except under:—

(i) Long title;

(ii) Explanation (3) of Section 2(t) (v);

(iii) Explanation (4)(v) of Section 2(t)(v);

(iv) in Section 4(18); and

(v) in the words 'inter-State' appearing in:—

(A) first proviso to 13(1);

(b) sub-clauses (a) & (b) in clause (2) of section 13;

(c) clause (5) of section 19;

(d) sub-clauses (b) and (d) of clause 1 of section 20;

(e) in first proviso to clause (2) of section 51; and

(f) clause (b) of section 84, wherever they occur, the words "Union Territory of Chandigarh" shall be substituted;

(b) for the words "State Government" except under:—

(i) Section 2(t);

(ii) explanation 4(ix) of section 2(t)(v); and

(iii) section 4(3), wherever they occur, the words "Administrator" shall be substituted;

(c) in Section 86 and 89, for the words "State Government", the words "Union territory of Chandigarh Administration" shall be substituted;

(d) after the words "this Act", wherever they occur, the words "as extended to the Union territory of Chandigarh" shall be inserted, and

(e) after the words "the Punjab General Sales Tax Act, 1948" wherever they occur, the words "as extended to the Union territory of Chandigarh" shall be inserted.

2. In section (1), in sub-section (1), after the words and figure, "the Punjab Value Added Tax Act, 2005", the words "as extended to the Union territory of Chandigarh" shall be inserted.

3. In section 2,—

(i) after clause (a), the following new clause shall be inserted, namely:—

"(aa) Administrator" means the Administrator of the Union Territory of Chandigarh appointed by the President under article 239 of the Constitution."

(ii) clause (zk) shall be omitted.

4. In section 4, in sub-section (18), for the words, "the Consolidated Fund of the State", the words "the Consolidated Fund of India" shall be substituted.

5. In section 51, in sub-section (8), for the words, "State Government Treasury", the words "Central Treasury" shall be substituted.

6. In section 69, for sub-section (2), the following sub-section shall be substituted, namely:—

"(2) Notwithstanding anything contained in the Indian Evidence Act, 1872 no court shall, save as aforesaid, be entitled to require any officer of the Chandigarh Administration to produce before it any such statement, return, account, record or document or any part thereof or to give evidence before it in respect thereof.

Nothing in this section shall apply to the disclosure of any of the particulars referred to in sub-section (1) for the purpose of prosecution under the Indian Penal Code, 1860 (Central Act 45 of 1860) in respect of any such statement, return, accounts, records, documents or evidence or for the use of the Excise and Taxation Department of the Union Territory of Chandigarh or for the officials of the Government of India or any State Government or for the purpose of preparing data by the official of an agency with whom the Chandigarh Administration has entered into a contract."

7. In section 70, for sub-section (3), the following sub-section shall be substituted, namely:—

"(3) Every rule made under this Act as extended to the Union Territory of Chandigarh shall be laid, as soon as may be, after it is made, before each House of parliament while it is in session, for a total period of 30 days which may be comprised in one session or in two or more successive sessions, and if, before the expiry of the session, immediately following the session or successive sessions aforesaid, both Houses agree in making any modification in the rule, or both the Houses agree that the rule should not be made, the rules shall thereafter have effect only in such modified form or be of no effect, as the case may be; so, however, that any such modification or annulment shall be without prejudice to the validity of anything previously done or omitted to be done under that rule."

8. In section 91, in sub-section (2), for the words, "The Legislative Assembly", the words "each House of Parliament" shall be substituted.

9. In section 92,—

- (i) sub-section (1) shall be omitted;
 - (ii) in sub-section (3),—
 - (a) clause (a) shall be omitted; and
 - (b) clauses (b) to (g) shall be renumbered as clauses (a) to (f) respectively.
10. Section 94 shall be omitted.

[F. No. U-11015/1/2005-UTL]

K.S. SUGATHAN, Jt. Secy.

ANNEXURE**PART I****DEPARTMENT OF LEGAL AND LEGISLATIVE AFFAIRS PUNJAB****NOTIFICATION**

The 12th April, 2005

No. 13-Leg./2005.—The following Act of the Legislature of the State of Punjab received to assent of the President of India on the 8th April, 2005, and is hereby published for general information :—

THE PUNJAB VALUE ADDED TAX ACT, 2005

(Punjab Act No. 8 to 2005)

AN

ACT

to provide for the levy and collection of value added tax and turnover tax on the sales or purchases of goods and for the matters connected therewith and incidental thereto, and for the repeal of the Punjab General Sales Tax Act, 1948.

BE it enacted by the Legislature of the State of Punjab in the Fifty-sixth Year of the Republic of India as follows :—

CHAPTER-I**PRELIMINARY**

1. **Short title and commencement.**—(1) This Act may be called the Punjab Value Added Tax Act, 2005.
(2) **Definitions** It shall come into force from the 1st day of April, 2005.
2. **Definitions.**—In this Act, unless the context otherwise requires,—
 - (a) “account books” means record of business transaction and included accounts, registers and documents maintained in any manner including electronic medium;
 - (b) “appointed day” means the date on which this Act comes into force;
 - (c) “business” includes—
 - (i) any trade, commerce, manufacture, adventure or concern whether or not such trade, commerce, manufacture, adventure or concern is carried on with a motive to make profit and whether or not any profit accrues there from; and
 - (ii) any transaction in connection with or ancillary or incidental to such trade, commerce, manufacture, adventure or concern;
 - (d) “capital goods” means any plant, machinery or equipment including equipment for pollution control, quality control, laboratory and cold storage, used in manufacturing, processing and packing of taxable goods for sale;
 - (e) “carrier of goods” includes a person or a transport company or a booking agency, who transports, receives or delivers goods;
 - (f) “casual trader” means a person other than a taxable person or registered person, who whether as principal, agent or in any other capacity, undertakes occasional transactions in the nature of business involving purchase, sale, supply or distribution of goods or conducting any exhibition-cum-sale in the State, whether for cash, deferred payment, commission, remuneration or other valuable consideration;
 - (g) “Commissioner” means the “Excise and Taxation Commissioner”, appointed by the State Government under sub-section (1) of section 3;

- (h) "declared goods" means goods declared under section 14 of the Central Sales Tax Act, 1956, to be of special importance in inter-state trade or commerce;
- (i) "designated officer" means an officer appointed under section 3 and conferred with the powers to carry out any of the purposes of this Act by a notification issued by the State Government;
- (j) "document" means title deeds, writing or inscription and includes electronic data, computer programs, computer tapes, computer discs, photographs, video tapes and the like that provides evidence;
- (k) "goods" means all kinds of movable property, whether tangible or intangible, other than newspapers, actionable claims, money stocks, shares and securities and includes livestock, growing crops, grass, trees, plants attached to or forming part of the land, which are agreed to be severed before the sale or under the contract of sale;
- (l) "goods vehicle" includes—
 - (i) any mechanically propelled vehicle adapted for use up on roads whether the power of propulsion is transmitted thereto from an external or internal source and includes a chassis to which a body has not been attached and a trailer constructed or adapted for use for the carriage of goods and any vehicle not so constructed or adapted when used for the carriage of goods solely or in addition to passengers, but does not include a vehicle running upon fixed rails or a vehicle of a special type adapted for use only in of factory or any other enclosed premises; and
 - (ii) any animal-driven or man-driven vehicle used for the carriage of goods solely or with passengers;
- (m) "gross turnover" includes the aggregate of the amounts of sales and/or purchases made by any person during the given period, including any sum, charged on account of freight, storage, demurrage, insurance and for any thing done by the person in respect of the goods at the time of or before the delivery thereof;

Explanation—

- (1) The proceeds of any sale made outside the State by a person, who carries on business both inside and outside the State, shall not be included in the gross turnover.
- (2) The sum receivable or received from any person in respect of transaction of forward contract, in which goods are actually not delivered, shall not be included in the gross turnover.
- (3) In respect of transactions of delivery of goods on hire purchase or any system of payment by instalments, the amount to be included in the gross turnover shall be the total sum payable by the hirer under a hire purchase agreement in order to complete the purchase of or the acquisition of property in the goods to which the agreement relates and includes any sum as payable by the hirer under the hire-purchase agreement by way of deposit or other initial payment or credited or to be credited to him under such agreement on account of any such deposit or payment whether that sum is to be or has been paid to the owner or to any person or is to or has been discharged by payment of money or by transfer or delivery of goods or by any other means, but does not include any sum payable as a penalty or interest or compensation or damages for breach of the agreement.
- (4) The amount to be included in the gross turnover in respect of movable goods, agreed to be sold under a works contract, shall be its sale price;
- (n) "import" means bringing of goods into the State from any place outside the territorial jurisdiction of the State;
- (o) "input tax" in relation to a taxable person means value added tax (VAT), paid or payable under this Act by a person on the purchase of taxable goods for resale or for use by him in the manufacture or processing or packing of taxable goods in the State;
- (p) "input tax credit" means credit of input tax (in short referred to as ITC) available to a taxable person under this act;
- (q) "manufacture" includes any activity that brings out a change in an article or articles as a result of some process, treatment, labour and results in transformation in to a new and different article so understood in commercial parlance having a distinct name, character, use, but does not include such activity of manufacture as may be notified otherwise;
- (r) "offence" means any act or omission made punishable under this Act;
- (s) "output tax" in relation to a taxable person means the tax charged or chargeable or payable in respect of sale and/or purchase of goods, as the case may be, under this Act;

- (1) "person" includes a sole proprietor, a partnership, a Hindu undivided family, a company, a society, a trust, a club, an institution, an association, a local authority, a department of any State Government, Union Territory Government or Central Government, a Government enterprise, a statutory body or other body corporate, who whether or not in the normal course of business, purchases, sells, supplies or distributes any goods in the State, irrespective of the fact that the main place of business of such person is outside the State and where the main place of business of any such person is not in the State, 'person' includes the local manager or agent of such person in the State in respect of such business and also includes a person engaged in the business of —
- (i) transfer, otherwise than in pursuance of a contract of property in any goods for cash, deferred payment or other valuable consideration;
 - (ii) transfer of property in goods (whether as goods or in some other form) involved in the execution of works contract;
 - (iii) delivery of goods on hire-purchase or any system of payment by instalments;
 - (iv) transfer of right to use any goods for any purpose (whether or not for a specified period) for cash, deferred payment or other valuable consideration; and
 - (v) supply by way of or as part of any service or in any other manner whatsoever, of goods, being food or any other article for human consumption or any drink (whether or not intoxicating), where such supply or service is for cash, deferred payment or other valuable consideration;

Provided that an agriculturist or a member of his family, who sells within the State exclusively the agricultural produce, grown on any land inside the State in which he has an interest, whether as owner, mortgage, tenant or otherwise, shall not be deemed to be a person;

Explanations—

- (1) A co-operative society or a club or an association which sells or supplies goods to its members is a person within the meaning of this clause.
- (2) A factor, a broker, a commission agent, a person's agent, an auctioneer or any other mercantile agent by whatever name called and whether of the same description as here-in-before mentioned or not, who carries on the business of selling, supplying or purchasing goods and who has in the customary course of business, authority to sell goods belonging to the principals or to purchase goods on their behalf, is a person within the meaning of this clause.
- (3) For the purpose of this clause, "Government" will include the Government of India or the Government of any State or the Union of India or the Union Territories.
- (4) Each of the following persons or bodies, who dispose of any goods including unclaimed or confiscated or as unserviceable or scrap surplus, old or obsolete goods or discarded material or waste products whether by auction or otherwise directly or through an agent for cash or for deferred payment or for any other valuable consideration, notwithstanding anything contained in this Act, irrespective of the fact whether such disposal was in the course of business or not, shall be deemed to be a person for the purposes of this Act to the extent of such disposal, namely:—
 - (i) Municipal Corporations, Municipal Council and other local authorities constituted under any law for the time being in force;
 - (ii) Railway Administration as defined under the Railways Act, 1989;
 - (iii) Transport and construction companies;
 - (iv) Any person Holding permit for the transport vehicles granted under the Motor Vehicles Act, 1988, which are used or adapted to be used for hire;
 - (v) The State Road Transport Corporations;
 - (vi) Customs Department of the Government of India administering the Customs Act, 1962;
 - (vii) Insurance and Financial Corporations or companies and banks included in the Second Schedule to the Reserve Bank of India Act, 1943;
 - (viii) Advertising Agencies; and
 - (ix) Any other corporation, company, body or authority, owned or set up by, or subject to the administrative control of the Central Government or any State Government.

- (u) "*place of business*" means any place where a person purchases or sells goods and includes the place where such person stores, processes, produces or manufactures goods or keeps books of accounts or documents or any other place where business activity is conducted;
- (v) "*prescribed*" means prescribed by rules made under this Act;
- (w) "*purchase*" with all its grammatical or cognate expressions means the acquisition of goods for cash or deferred payment or other valuable consideration otherwise than under a mortgage, hypothecation, charge or pledge and includes,—
 - (i) transfer, otherwise than in pursuance of a contract, of property in any goods for cash, deferred payment or other valuable consideration;
 - (ii) transfer of property in goods (whether as goods or in some other form) involved in the execution of a works contract;
 - (iii) delivery of goods on hire-purchase or any system of payment by instalments;
 - (iv) transfer of the right to use any goods for any purpose (whether or not for a specified period) for cash, deferred payment or other valuable consideration;
 - (v) supply by way of or as part of any service or in any other manner whatsoever, of goods, being food or any other article for human consumption or any drink (whether or not intoxicating) where such supply or service is for cash, deferred payment or other valuable consideration,
 and such transfer, delivery or supply of any goods shall be deemed to be a purchase of these goods from the person making the transfer, delivery or supply to a person to whom such transfer, delivery or supply is made;
- (x) "*purchase price*" means the amount of valuable consideration paid or payable by a person for any purchase made, including any sum charged on account of freight, storage, demurrage, insurance and any other sum charged for anything done by a person in respect of the goods at the time of or before delivery thereof;

Explanation—

- (1) Purchase price shall not include the tax paid or payable under this Act by a person in respect of such purchase.
- (2) In respect of the goods listed in Schedule H, any tax, duty, cess or fee paid or payable under the Punjab Agricultural Produce Markets Act, 1961 (Punjab Act No. 23 of 1961) or the Punjab Rural Development Act, 1987 (Punjab Act No. 6 of 1987) or the Punjab Infrastructure (Development and Regulation) Act, 2002 (Punjab Act No. 8 of 2002) by or on behalf of the seller or the purchaser, shall also form part of purchase price.
- (y) "*quarter*" means a period consisting of three months, commencing from the first day of April, July, October and January of a calendar year;
- (z) "*registered person*" means a person, who is registered for the purpose of paying turn-over tax under this Act;
- (za) "*repealed Act*" means the Punjab General Sales Tax Act, 1948;
- (zb) "*retail invoice*" means an invoice issued to the purchaser by a taxable or registered person or a casual trader, listing therein the goods, sold, with price, quantity and value;
- (zc) "*return*" means a true and correct account of business pertaining to the return period in the prescribed form;
- (zd) "*return period*" means the period for which returns are to be furnished by a person;
- (ze) "*reverse input tax credit*" means an amount of input tax credit, which is required to be reversed by a taxable person on account of—
 - (i) credit note for output tax received from seller of goods on purchases in respect of which input tax credit is claimed;
 - (ii) goods, returned subsequent to availing the input tax credit;
 - (iii) goods, subsequently not used in accordance with the conditions prescribed for availing input tax credit; and
 - (iv) having availed the credit required to reverse the same in accordance with the provisions of sub-sections (8) and (9) of Section 13;

- (zf) "sale" with all its grammatical or cognate expressions means any transfer of property in goods for cash, deferred payment or other valuable consideration and includes—
- (i) transfer, otherwise than in pursuance of a contract, of property in any goods for cash, deferred payment or other valuable consideration;
 - (ii) transfer of property in goods (whether as goods or in some other form) involved in the execution of a works contract;
 - (iii) delivery of goods on hire purchase or any system of payment by instalments;
 - (iv) transfer of the right to use any goods for any purpose (whether or not for a specified period) for cash, deferred payment or other valuable consideration;
 - (v) supply of goods by any unincorporated association or body of person to a member thereof for cash, deferred payment or other valuable consideration;
 - (vi) supply, by way of or as part of any service or in any other manner whatsoever, of goods, being food or any other article for human consumption or any drink (whether or not intoxicating) where such supply or service is for cash, deferred payment or other valuable consideration; and
 - (vii) every disposal of goods referred to in Explanation(4) to clause (t) of this section;
- and such transfer, delivery or supply of any goods shall be deemed to be a sale of these goods by the person making the transfer, delivery or supply to a person to whom such transfer, delivery or supply is made, but does not include a mortgage, hypothecation, charge or pledge.
- (zg) "sale price" means the amount of valuable consideration received or receivable by a person for any sale made including any sum charged on account of freight, storage, demurrage, insurance and any sum charged for anything done by the person in respect of the goods at the time of or before the delivery thereof;

Explanation—

- (1) In relation to the transfer of property in goods (whether as goods or in some other form) involved in the execution of works contract, 'sale price' means such amount as is arrived at by deducting from the amount of valuable consideration paid or payable to a person for the execution of such works contract, the amount representing labour and other charges incurred and profit accrued other than in connection with transfer of property in goods for such execution. Where such labour and other charges are not quantifiable, the sale price shall be the cost of acquisition of the goods and the margin of profit on them plus the cost of transferring the property in the goods and all other expenses in relation thereto till the property in such goods, whether as such or in any other form, passes to the contractee and where the property passes in a different form, it shall include the cost of conversion.
 - (2) In relation to the delivery of goods on hire purchase or any system of payment by instalments, the amount of valuable consideration payable to a person for such delivery.
 - (3) In relation to the transfer of right to use any goods for any purpose (whether or not for a specified period), the valuable consideration received or receivable for such transfer.
 - (4) The amount of duties levied or leviable on goods under the Central Excise and Salt Act, 1944 (1 of 1944), or the Customs Act, 1962 (52 of 1962), or the Punjab Excise Act, 1914 (1 of 1914), shall be deemed to be part of the sale price of such goods, whether such duties are paid or payable by or on behalf of the seller or the purchaser or any other person.
 - (5) Sale price shall not include tax paid or payable to a person in respect of such sale.
- (zh) "Schedule" means the Schedule appended to this Act;
- (zi) "Section" means a section of this Act;
- (zj) "State" means the State of Punjab;
- (zk) "State Government" means the Government of the State of Punjab;
- (zl) "taxable goods" means the goods, other than the goods declared tax free under section 16 of this Act;
- (zm) "tax period" means a period for which a person is required to pay tax under this Act or the rules made thereunder;
- (zn) "taxable person" means a person, who is registered for the purpose of paying value added tax under this Act;
- (zo) "taxable turnover" means that part of gross turnover of sales or purchases, as may be determined after

making such deductions from the gross turnover of sales or purchases, as are admissible under this Act or as may be prescribed, on which a person shall be liable to pay tax;

- (zp) "*Tribunal*" means the Tribunal constituted under section 4 of this Act;
- (zq) "*Turnover tax*" (in short referred to as TOT) means a tax, leviable on the taxable turnover of a registered person as per the provisions of this Act;
- (zr) "*Value added tax*" (in short referred to as VAT) means a tax leviable on the taxable turnover of a person, other than a registered person, under this Act;
- (zs) "*VAT invoice*" means an invoice issued by a taxable person, other than an exempted unit, to another taxable person listing therein the goods supplied, with the price, quantity, value and VAT charged;
- (zt) "*vessel*" includes any ship, barge boat, raft, timber, bamboos or floating materials propelled in any manner;
- (zu) "*works contract*" includes any agreement for carrying out, for cash, deferred payment or other valuable consideration, building, construction, manufacturing, processing, fabrication, erection, installation, fitting out, improvement, modification, repairs or commissioning of any movable or immovable property; and
- (zv) "*year*" means the financial year beginning from the first day of April, and ending with the 31st day of March.

3. *Commissioner and other officers.*—(1) For carrying out the purposes of this Act, the State Government may appoint an officer to be the Commissioner and such other officers to assist him as it may deem fit.

(2) The Commissioner shall have jurisdiction over the whole of the State and shall have all the powers and perform all the duties conferred or imposed upon him by or under this Act. All other officers appointed, under sub-section (1), shall exercise such powers as may be conferred upon them by the State Government.

(3) Every officer appointed under sub-section (1), to assist the Commissioner, shall exercise his powers, subject to the general superintendence and control of the Commissioner.

(4) The officers appointed under sub-section (1), shall be deemed to be public servants within the meaning of Section 21 of the Indian Penal Code (Central Act 45 of 1860).

4. *Constitution of Tribunal.*—(1) The State Government shall, by notification in the Official Gazette, constitute a Tribunal to exercise the powers and discharge the functions conferred on it under this Act.

(2) The Tribunal shall consist of a Chairman and three ~~other members~~ to be appointed by the State Government.

(3) The Chairman shall either be a retired Judge of the High Court or a retired or serving officer of the rank of Chief Secretary to the State Government or Secretary to Government of India.

(4) The members appointed under sub-section (2), shall have the following qualifications and experience, namely :—

- (a) should be a law graduate and should have at least fifteen years' experience of practising in the High Court or the Supreme Court of India in tax matters; or
- (b) should be a retired or a serving Officer of the Excise and Taxation Department of the State with at least two years' experience of the post of Additional Excise and Taxation Commissioner; or
- (c) should have at least fifteen years' experience of practising as a Chartered Accountant under the Chartered Accountant Act, 1949 (Central Act 38 of 1949); or
- (d) should be eligible for appointment as a member of the Customs, Excise and Service Tax Appellate Tribunal constituted by the Union Government :

Provided that one member of the Tribunal shall be appointed from each of the aforesaid categories.

(5) The State Government may appoint one of the members, to be a Vice-Chairman of the Tribunal.

(6) The Vice-Chairman shall exercise such powers and perform such functions of the Chairman, as may be delegated to him by the Chairman by a general or special order in writing. In the absence of the Chairman, the Vice-Chairman shall act as Chairman.

(7) The Chairman or a member of the Tribunal shall hold office for a term of three years from the date he assumes charge of his office and he shall not be eligible for re-appointment.

(8) No person shall be appointed or continue as Chairman or member of the Tribunal, if he has attained the age of sixty-seven years.

(9) The Chairman, Vice-Chairman and other members of the Tribunal shall be entitled to such salaries and allowances and shall be governed by such conditions of service, as may be specified by the State Government.

(10) The Chairman, the Vice-Chairman or a member of the Tribunal may be removed from the office by the State Government, if—

- (a) he is adjudged an insolvent; or
- (b) he takes up employment outside the duties of his office; or
- (c) he has become incapable of performing his duties on account of unsoundness of mind or any other reason; or
- (d) he is guilty of such misconduct as would render him unfit to continue as Chairman or Vice-Chairman or member of the Tribunal; or
- (e) he is convicted of an offence involving moral turpitude.

(11) The Chairman, the Vice-Chairman or a member, as the case may be, may at any time by writing under his hand addressed to the State Government, resign his office, but his resignation shall take effect from the date on which it is accepted.

(12) The Chairman, the Vice-Chairman and members of the Tribunal shall be deemed to be public servants within the meaning of section 21 of the Indian Penal Code (Act 45 of 1860).

(13) no order made or act done, or proceedings taken under this Act by or before the Tribunal, shall be called in question in any manner on the ground of merely of any defect in the constitution of the Tribunal.

(14) The Tribunal shall have power to award costs. The arrears of such costs shall be recoverable as arrears of land revenue.

(15) Subject to the previous sanction of the State Government, the Tribunal shall for the purpose of regulating its procedure, make regulations in conformity with the provisions of this Act and the rules made thereunder.

(16) Subject to the directions given by the State Government, the Tribunal shall sit at such place or places, as it may deem fit.

(17) The State Government may, appoint such officers or officials, as may be considered necessary to enable the Tribunal to carry out its functions under this Act.

(18) The administrative expenditure of the Tribunal including salaries, allowances and pensions, if any, payable to the Chairman, Vice-Chairman, members, officers and officials of the Tribunal, shall be charged upon the Consolidated Fund of the State.

5. Procedure of the Tribunal.—(1) The powers and functions of the Tribunal may be exercised and discharged by Benches constituted by the Chairman from amongst the members thereof—

- (a) by a Bench consisting of three members;
- (b) by a Bench consisting of two members; and
- (c) by a single member.

(2) The single member referred to in clause (c) of sub-section (1), may either be the Chairman or any other member :

Provided that, if any case which comes up before a single member, who is not the Chairman or a Bench of which the Chairman is not a member, involves a question of law, such single member or Bench, as the case may be, may, in his or its discretion, reserve such case for decision by a Bench of which the Chairman shall be a member.

(3) Where an appeal or application is heard by a Bench consisting of three members, and the members differ in opinion on any point, then that point shall be decided in accordance with the opinion of the majority.

(4) Where an appeal or application is heard by a Bench, consisting of two members, and the members are divided in their opinion on any point, then that point shall be referred for decision to a Bench, consisting of three members, of whom, one shall be the Chairman.

(5) In case there are diverse judgments on an issue from the Tribunal or different Benches of the Tribunal, the Chairman, on a reference from the Commissioner, shall constitute a multi-member bench of the Tribunal, comprising himself and at least two other members, to decide that issue. Such a Bench may recall the earlier decisions and proceed to decide the issue afresh. The order or the rule laid down by such a Bench, shall override all previous orders or rules on the matter, and shall be binding on the parties.

CHAPTER-II

INCIDENCE AND LEVY OF TAX

6. Incidence of tax.—(1) Every person, except a casual trader and one dealing exclusively in goods declared tax free under Section 16, whose gross turnover during the year immediately preceding the commencement of this Act or during any year subsequent thereto, exceeded the taxable quantum, as provided in clause (a) of sub-section (3), shall be liable to pay tax under this Act by way of VAT on the taxable turnover.

(2) Every person, except a casual trader and one dealing exclusively in goods declared tax free under Section 16, whose gross turnover during the year immediately preceding the commencement of this Act or during any year subsequent thereto, exceeded the taxable quantum, as provided in clause (b) of sub-section (3), shall be liable to pay tax under this Act by way of TOT on the taxable turnover.

(3) For the purpose of this Section, the expression 'taxable quantum' means—

(a) for registration as a taxable person for VAT—

- (i) in relation to any person, who imports taxable goods for sale or use in manufacturing or processing any goods in the State, rupee one;
- (ii) in relation to a person, who receives goods on consignment/branch transfer basis from within or outside the State on which no tax has been paid under this Act, rupee one;
- (iii) in relation to a person, liable to pay purchase tax under section 19, rupee one;
- (iv) in relation to a person who is a manufacturer, rupees one lac;
- (v) in relation to voluntary registration, rupees five lac; and
- (vi) in relation to any other person, rupees thirty lac.

(b) for registration as a registered person for TOT—

in relation to a person other than those specified in clause (a), whose turnover during the preceding year is more than rupees five lac, but below rupees thirty lac.

(4) Every person, who has become liable to pay tax under this Act, either by way of VAT or TOT, shall continue to be so liable, until the expiry of three consecutive years during each of which his gross turnover does not exceed the taxable quantum and such further period after the date of such expiry, as may be specified by notification by the State Government and on the expiry of such specified period, his liability to pay tax, shall cease.

(5) Every person whose liability to pay tax has ceased under sub-section (4), shall again be liable to pay tax under this Act from the date on which his gross turnover again exceeds the taxable quantum.

(6) Every casual trader shall be liable to pay tax under this Act by way of VAT on the taxable turnover including sales through agent within the State.

7. Liability of person registered under the Central Sales Tax Act, 1956.—The person registered under the Central Sales Tax Act, 1956 (Central Act, No. 74 of 1956), shall be liable to pay VAT under this Act on any sale made by him within the State, irrespective of the fact that he is not liable to pay tax under Section 6 of this Act. However, the provisions of this Section shall not apply in case of a person, who deals exclusively in goods declared tax free under Section 16.

8. Rate of Value Added Tax.—(1) Subject to the provisions of this Act, there shall be levied on the taxable turnover of a person other than a registered person, VAT at such rate, as specified in Schedules, but not exceeding thirty paise in a rupee.

Provided that the rate of tax applicable on purchase or sale of declared goods, shall not exceed four per cent or such rate, as specified in clause (a) of Section 15 of the Central Sales Tax Act, 1956.

(2) Notwithstanding anything contained in this Section, where any goods are sold in container or are packed in any packing material, the rate of tax applicable to such container or packing material, shall, whether the price of the container or packing material is charged separately or not, be the same as is applicable to the goods, contained or packed therein and the turnover in respect of the container and packing material, shall be included in the turnover of such goods. Where the goods, sold in container or packed in packing material are tax free, the sale of such container or packing material shall also be tax free.

(3) The State Government after giving fifteen days notice by notification, of its intention so to do, may be like notification, alter the rate of tax specified in any of the Schedules, add to or omit from or otherwise amend the Schedules and thereupon, the Schedule shall be deemed to have been amended accordingly.

Provided that if, the State Government is satisfied that circumstances exist, which render it necessary to take immediate action, it may, for reasons to be recorded in writing, dispense with the condition of previous notice.

9. Rate of Turnover Tax.—Subject to the provisions of this Act, there shall be levied on the taxable turnover of sales of a registered person, TOT at a rate, not exceeding two paise in a rupee, as the State Government may specify, by notification, in the Official Gazette.

10. Rounding off of tax.—The amount of VAT or TOT shall be calculated to the nearest rupee by ignoring fifty paise or less and counting more than fifty paise as one rupee.

11. Bar against collection of tax when not payable.—(1) No person, who, is not registered under this Act or if registered, is not liable to pay tax in respect of any sale or purchase, shall collect any amount by way of tax from any person.

(2) No person, who is registered under this Act, shall collect any amount by way of tax in excess of the amount of tax leviable under this Act.

(3) No person, who is registered under this Act, shall collect any amount by way of tax in respect of sale of goods, which are tax free under Section 16.

(4) If a person collects tax in contravention of the foregoing provisions of this Act, he shall be liable to deposit the tax so collected immediately after such collection, in the Government treasury. In the event of failure of such person to deposit the tax, the Commissioner or the designated officer, as the case may be, by order in writing, recover such tax, as per provisions of this Act.

12. Liability of registered persons.—(1) Liability of a registered person shall be calculated at the rate, specified under Section, 9.

(2) Sale of taxable goods held in stock by a registered person on the appointed day, which were purchased without payment of tax under the repealed Act, shall be liable to tax at the rate, specified for those goods under this Act.

(3) A registered person, whose registration has been continued under Section 21, shall furnish in such form and to such authority, as may be notified, a statement of taxable goods under this Act, held in stock on the appointed day, within a period of thirty days from the appointed day.

(4) A registered person shall not be entitled to input tax credit for any purchase.

(5) A registered person shall issue only a retail invoice for sale made by him and shall not be eligible to issue a VAT invoice.

(6) A registered person shall not be eligible to hold registration under the Central Sales Tax Act, 1956.

13. Input tax credit.—(1) A taxable person shall be entitled to the input tax credit, in such manner and subject to such conditions, as may be prescribed, in respect of input tax on taxable goods, including capital goods, purchased by him from a taxable person within the State during the tax period :

Provided that such goods are for sale in the State or in the course of inter-State trade or commerce or in the course of export or for use in the manufacture, processing or packing of taxable goods for sale within the State or in the course of inter-State trade or commerce or in the course of export :

Provided further that a taxable person shall be entitled to partial input tax credit in any other event, as may be provided in this section in such manner and subject to such conditions as may be prescribed :

Provided further that if, purchases are used partially for the purposes specified in this Sub-section and the taxable person is unable to identify the goods used for such purposes, then the input tax credit shall be allowed proportionate to the extent, these are used for such purposes, in the prescribed manner :

Provided further that input tax credit in respect of purchase tax paid or payable by a taxable person under section 19, shall be allowed subject to the conditions laid therein.

(2) Input tax credit shall be allowed only to the extent by which the amount of tax paid in the State exceeds four per cent on purchase of goods—

(a) sent outside the State other than by way of sale in the course of inter-State trade or commerce or in the course of export out of territory of India; and

(b) used in manufacturing or in packing of taxable goods sent outside the State other than by way of sale in the course of inter-State trade or commerce or in the course of export out of the territory of India.

(3) Where a taxable person sends any goods as such or after being partially processed for further processing on job work basis, he shall debit the ITC by four per cent of the value of such goods. If such goods after processing are received back by such person, the ITC debited at the time of despatch, shall be restored. Such person shall, however, be required to produce proper evidence in the shape of records, challans or memos or any other document evidencing receipt of such goods, whenever asked for.

(4) Input tax credit on furnace oil, transformer oil, mineral turpentine oil, water-methanol mixture, naphtha and lubricants, shall be allowed only to the extent by which the amount of tax paid in the State exceeds four per cent :

Provided that these goods are used in production of taxable goods or captive generation of power of.

(5) A taxable person under this section, shall not qualify for input tax credit in respect of the tax paid on purchase of:—

- (a) automobiles including commercial vehicles, two wheelers, three wheelers and spare parts for the repair and maintenance thereof, unless the taxable person is in the business of dealing in such automobiles or spare parts;
- (b) petrol, diesel, aviation turbine fuel, liquefied petroleum gas and condensed natural gas, unless the taxable person is in the business of selling such products;
- (c) civil structure and immovable goods or properties;
- (d) office equipment and building material, unless the taxable person is in the business of dealing in such goods;
- (e) furniture fixtures including electrical fixtures and fittings, unless the taxable person is in the business of such goods;
- (f) air-conditioning units, air circulators and refrigeration units, unless the taxable person is in the business of dealing in such goods or where air-conditioning, air circulating or refrigeration is essential for sale or storage of taxable goods or in the manufacturing process of taxable goods;
- (g) weigh bridge, except when installed inside the manufacturing premises for use in the manufacturing process of taxable goods;
- (h) goods used in manufacture, processing or packing of goods specified in Schedule 'A';
- (i) goods used in generation, distribution and transmission of electrical energy unless such generation, distribution and transmission of electrical energy is for captive consumption, in which case it would be allowed subject to the provisions of sub-section (4) of this section;
- (j) the provisions of food, beverage and tobacco products, unless the taxable person is in the business of selling food, beverage and tobacco products; and
- (k) goods used for personal consumption or gifts.

(6) A person, who was earlier registered for VAT and has subsequently got himself registered for TOT, shall reverse the input tax credit availed by him before such change of option, on the stock of goods held by him on the day, when he is registered as a registered person.

(7) A person, who was earlier registered for TOT and has subsequently got himself registered for VAT, shall not be entitled for input tax credit on the stock of goods, held by him on the day, when he got registered as a taxable person and shall be liable to pay TOT on such stock, if sold within thirty days from such date.

(8) A person, who exports goods out of India and has claimed refund of input tax under sub-section (2) of Section 18, shall reverse the input tax credit, if any, availed by him on such goods.

(9) A person shall reverse input tax credit availed by him on goods which could not be used for the purposes specified in Sub-section (1) of this Section or which remained in stock at the time of closure of the business.

(10) Where the selling taxable person has made any modification in respect of a sale by issuance of debit or credit note on the invoice book, the purchasing taxable person shall make necessary adjustment of input tax credit availed.

(11) Input tax credit shall be non-transferable, except where the ownership of the business of a person is entirely transferred.

(12) Save as otherwise provided hereinafter, input tax credit shall be allowed only against the original VAT invoice and will be claimed during the period in which such invoice is received.

(13) In case the original VAT invoice is lost or mutilated, the input tax credit will be available only after the designated officer has determined the credit in the prescribed manner.

(14) In upon audit or cross verification or otherwise, it is found that a taxable person has made a false input tax credit claim, the Commissioner or the designated officer, as the case may be, shall order for recovery of the whole or any part of such input tax credit, as the case may be, without prejudice to any action or penalty provided for in this Act.

(15) The onus to prove that the VAT invoice on the basis of which, input tax credit is claimed, is *bona fide* and is issued by a taxable person, shall lie on the claimant.

14. Input tax credit in respect of stock held on the appointed day.—(1) A taxable person, who was registered under the repealed Act and whose registration has been continued under Section 21, shall be entitled to input tax credit in respect of the tax paid or payable under the repealed Act on the goods, other than capital goods, lying in stock with him on the appointed day, to such extent and in such manner and subject to such conditions, as may be prescribed. He shall, however, be eligible for input tax credit on capital goods, if he is in the business of resale of such goods :

Provided that such stock is out of the purchases made within twelve months prior to the appointed day.

(2) The taxable person, who intends to claim input tax credit under Sub-section (1), shall within thirty days from the appointed day, furnish in the specified form to the designated officer, a statement of tax-paid goods held in stock.

(3) Input tax credit shall not be available on goods held in stock on the appointed day in respect of which, deduction from gross turnover was claimed by such person under the repealed Act or rules.

(4) Input tax credit on the stock, held on the appointed day, shall be allowed on the basis of the rate of tax, prevailing on the day preceding the appointed day or on the day of purchase of such goods under the repealed Act or the rate of tax, leviable under this Act, whichever is the lowest.

(5) Input tax credit available under this Section, shall be proportionately adjusted in equal installments over a period of one year beginning after three months from the appointed day in such manner, as may be prescribed.

(6) No input tax credit under this Section shall be allowed in respect of goods held in stock—

- (a) which are not included in the statement of taxable goods specified under Sub-section (2); and
- (b) for which the person does not have in his possession sales vouchers, issued by a person, registered under the repealed Act, against the purchases of the said goods, or which are not recorded in his books of accounts.

(7) Onus to prove that the taxable goods held in the stock on the appointed day, has suffered tax under the repealed Act, shall be on the claimant of input tax credit.

(8) Save as otherwise provided in this Section, the provisions of Section 13, shall apply *mutatis mutandis* to the input tax credit claimed under this section.

15. Net tax payable by a taxable person.—(1) Subject to the provisions of this Act, the net tax payable by a taxable person for a tax period, shall be determined by deducting the amount of input tax credit available to him (including input tax credit carried forward from the preceding tax periods, if any) from the output tax, payable by him during the tax period.

(2) If the amount of input tax credit, is more than the amount of output tax, the same may be adjusted, at the option of the taxable person, against the tax liability for the said tax period, if any, under the Central Sales Tax Act, 1956 and only the remaining amount of the Central Sales Tax shall be payable.

(3) Excess amount of input tax credit, if any, after adjustment under Sub-section (2) shall be adjusted against any outstanding tax, penalty or interest under this Act or under the Central Sales Tax Act, 1956, as the case may be.

(4) Excess amount of input tax credit, if any, after adjustment under Sub-section (2) and (3), may be carried over to subsequent tax period or at the option of taxable person, on application being made in the prescribed manner, be refunded in accordance with the provisions of this Act.

(5) The net tax payable for a tax period by a person, liable to pay tax, but not registered under this Act, shall be equal to the output tax, payable for the said tax period as per the provisions of this Act and no input tax credit shall be admissible to him.

16. Tax free Goods.—No tax shall be payable on the sale of goods specified in Schedule A and no person including a taxable person or a registered person shall charge tax on the sale of goods which are declared tax free goods under this section.

17. Zero-rated sales.—Where any taxable goods are exported outside the territory of India or are supplied in the course of such export falling within the scope of Section 5 of the Central Sales Tax Act, 1956, such sales shall be zero-rated. On such sale, no output tax is payable by any person :

Provided that a taxable person making zero-rated sale shall be eligible for input tax credit in relation to such sales.

18. Refund of tax to certain categories.—(1) The persons or organizations listed in Schedule-G, shall be entitled to claim refund of tax, paid for goods, purchased in the State, on every single purchase, exceeding rupees five thousand, excluding tax amount, on proper application, subject to such conditions, as may be prescribed.

(2) A taxable person shall be entitled to claim refund in respect of input tax paid on goods exported out of the territory of India, subject to such conditions and the manner, as may be prescribed.

CHAPTER III

LEVY OF PURCHASE TAX

19. Levy of purchase tax on certain goods.—(1) Notwithstanding anything contained in this Act, there shall be levied VAT on the taxable turnover of purchase of the goods specified in Schedule-H at the rate applicable to such goods as per the Schedules.

(2) The tax shall be leviable on the first purchase of these goods from within the State. In case of Milk, however, first purchase shall be, when purchase is made by a manufacturer of taxable goods :

Provided that on subsequent sales of such goods, VAT on sale price shall be leviable as per the provisions of this Act.

(3) Subject to the provisions of this Act, the purchaser of the goods, specified in Schedule-H, shall have to be registered for VAT.

(4) The purchase tax paid by a taxable person, shall not be admissible as input tax credit, unless the goods are sold within the State or are used for manufacture of taxable goods in the State for sale or are sold in the course of inter-State trade or commerce or in the course of export.

(5) Input tax credit, on goods liable to tax under Sub-section (1), when sold in the course of inter-State trade or commerce, shall be available only to the extent of Central Sales Tax chargeable under the Central Sales Tax Act, 1956.

20. **Levy of tax on turnover of purchase of goods in certain circumstances.**—(1) Where a taxable person purchases taxable goods from a person other than a taxable person or a registered person, and—

- (a) uses such goods in the manufacture of goods, declared tax-free under Section 16; or
- (b) uses such goods in the manufacture of any goods other than those specified in Schedule-A, and sends the goods so manufactured outside the State otherwise than by way of sale in the course of inter-State trade or commerce or export out of India; or
- (c) disposes of such goods in any manner other than by way of sale in the State; or
- (d) despatches them to a place outside the State otherwise than as a result of sale in the course of inter-State sale, trade or commerce or export out of India,

there shall be levied a tax on the taxable turnover of purchases of such goods at the rate applicable to such goods as per the Schedules:

Provided that no tax shall be levied under this section, if a tax has already been paid on such goods under Section 19.

(2) Where a registered person purchases taxable goods from a person, other than a taxable person or a registered person, and disposes of such goods in any manner, there shall be levied a tax on the turnover of such purchases at the rate(s) specified in the Schedule(s).

CHAPTER IV REGISTRATION

21. **Persons liable to register.**—(1) No person other than a casual trader, who is liable to pay tax under this Act, shall carry on business, unless he is registered under this Act.

(2) Every person required to be registered under Sub-section (1), shall make an application for registration, within a period of thirty days from the date when such person becomes liable to pay tax under this Act, in the prescribed manner to the designated officer.

(3) If the designated officer is satisfied that the application for registration is in order, he shall, in accordance with such manner and on payment of such fee, as may be prescribed, register the applicant and grant him a registration certificate in the prescribed form:

Provided that if the designated officer is satisfied that the particulars contained in the application are not correct, or are incomplete or that any evidence or information required for registering the applicant, is not furnished, he may, after necessary inquiry and after giving the applicant an opportunity of being heard, reject the application for reasons to be recorded in writing. However, the applicant may submit a fresh application for registration in accordance with the provisions of this Act:

Provided further that during the pendency of an application for registration, he shall file return and pay the due amount of tax, in the prescribed manner.

(4) Where a person has contravened the provisions of Sub-section (1), the designated officer shall, subject to action under Section 52 or Section 60, as the case may be, register such person and grant him a registration and such registration shall take effect as if it had been granted under Sub-section (3) on the application made by the person.

(5) When any person who was registered before the appointed day under the repealed Act, and continues to be so registered on the day, immediately before such appointed day, and is liable to pay tax under this Act on such appointed day, the designated officer shall, within thirty days of receipt of application in the prescribed form, issue to such person, in the prescribed manner, a fresh registration under this Act for VAT or TOT, as the case may be.

(6) For the purpose of identification of taxpayers, the Commissioner or the designated officer shall issue a VAT Registration Number (hereinafter in short referred to as VRN) to every taxable person and TOT Registration Number (hereinafter in short referred to as TRN) to every registered person.

(7) Every taxable person or a registered person, who is allocated a registration number, shall mention his VRN or

TRN as the case may be, in all returns, forms or any other documents, used for the purposes of this Act.

(8) Every person, who is liable to pay tax, and who is a Hindu undivided family or an association of persons, club or society or firm or company or, who is engaged in business as the guardian or trustee or otherwise on behalf of another person, shall make a declaration to the designated officer, stating the name of the person or persons, who shall be deemed to be the manager or managers of such person's business for the purposes of this Act.

(9) Save as otherwise provided in Section 77, a registration, granted under this Act, shall be personal to the person to whom it is granted and shall not be transferable.

22. Voluntary registration for VAT— 1 Subject to the provisions of sub-section (3) of Section 6, any person except one dealing exclusively in goods declared tax-free under Section 16, may apply in the prescribed manner to the designated officer for registration under this Act.

(2) The provisions of sub-sections (2), (3) and (5) of Section 21, shall apply in respect of applications for registration under this section.

(3) Every person, who has been registered upon application made under this section shall, for so long as his registration remains in force, be liable to pay tax under this Act whether his gross turnover exceeds the taxable quantum or not.

23. Amendment of registration— The designated officer may from time to time, by order in writing, amend registration on information furnished under section 76.

24. Cancellation of registration— (1) The designated officer may, on an application made to him, or otherwise, by an order in writing, cancel registration, on—

(a) an information received that a business, in respect of which a registration was granted under sub-section (3) of Section 21, has been discontinued ; or

(b) an information received that the person has violated any of the provisions of this Act or the rules made thereunder ; or

(c) non-filing of return or non-payment of due tax under this Act; or

(d) any other sufficient cause including misuse of the registration or cessation of liability to payment of tax under this Act; or

(e) the registration granted under the Central Sales Tax Act, 1956, to a person liable to pay tax by virtue of the provisions of Section 7, but who is not otherwise liable to pay tax under Section 6, has been cancelled.

(2) Where registration is cancelled under this section without making an application by the person concerned, no order for such cancellation shall be passed by the designated officer, without affording an opportunity of being heard.

25. Security from certain classes of persons— (1) Every person applying for registration under this Act, shall furnish a security of rupees fifty thousand in the manner, prescribed for securing proper and timely payments of tax or any other, sum payable by him under this Act :

Provided that the security already furnished by a person registered under the repealed Act, shall be deemed to have been furnished under this Act.

(2) The designated officer granting registration, may, on application made by a person for release, discharge or refund of the security, order the release, discharge or refund of the whole security or any part thereof, furnished by him, if the same is not required.

Explanation.— The designated officer shall not be required to retain security or surety furnished by a person on behalf of a taxable person or registered person, if the registration of such a person has been cancelled under this Act and nothing remains due against such a person.

(3) Where it appears expedient to the designated officer, granting registration, so to do, for the proper realisation of, tax payable under this Act, he may, at any time while such certificate is in force, by an order in writing and for reasons to be recorded therein, require the person, to whom the registration has been granted, to furnish within such time, as may be specified in the order and in the prescribed manner, such additional security not exceeding rupees two lac in addition to the security, furnished under sub-section (1), as may be specified in the order, for the aforesaid purpose :

Provided that no person shall be required to furnish any additional security under this sub-section, unless he has been given an opportunity of being heard.

(4) The designated officer, granting the registration, may, by an order in writing, for good and sufficient cause, forfeit or realise the whole or any part of the security or additional security furnished by a person for recovery of any amount of tax or penalty due or payable by a person :

Provided that no order shall be passed under this sub-section without giving the person concerned, an opportunity of being heard.

(5) In case the security is rendered insufficient because of the order made under sub-section (4), the person concerned shall furnish further security to make up for the amount, which has fallen short, in such manner and within such time, as may be prescribed.

CHAPTER-V

PROCEDURE AND ADMINISTRATION OF TAX

26. Returns. (1) Every taxable person shall make self assessment of tax and shall file return for a period, within such time and in such form as may be prescribed.

(2) Every registered person shall make self assessment of tax and shall file return for a period, within such time and in such form as may be prescribed.

(3) Every person shall, in such manner, as may be prescribed, pay into a Government Treasury or any bank authorized to transact Government business or at the District Excise and Taxation Office, the full amount of tax due from him as per provisions of this Act and shall furnish alongwith the returns, receipt from such Treasury or Bank or District Excise and Taxation Office, as the case may be, showing the payment of such amount :

Provided that no payment of such amount shall be accepted at the District Excise and Taxation Office, except through a bank draft or crossed cheque drawn on a local Scheduled Bank in favour of the designated officer.

(4) If any person referred to in sub-sections (1) and (2), discovers any bonafide error or omission in any return furnished by him, he may rectify such error or omission in the return, due to be filed immediately following the detection of such error or omission. If such rectification results in a higher amount of tax to be due than the original return, it shall be accompanied by a receipt for payment of the additional amount of tax, payable along-with the interest at the rate specified under this Act for the period of delay, in the manner prescribed in sub-section (3). No such rectification shall, however be allowed after the end of the financial year immediately following the year to which the rectification relates or issue of a notice for audit or assessment, whichever is earlier. Where such rectification results in excess amount of tax having been paid than due, such excess tax shall be refundable on application as per provisions of this act and the rules framed thereunder. No adjustment shall, however, be allowed for such excess payment.

(5) In addition to any return under sub-sections (1) and (2), the Commissioner or the designated officer may, require a taxable person or a registered person to furnish such further information along with the returns or at any other time, as may be deemed necessary.

(6) Notwithstanding anything contained in this section, the Commissioner or the designated officer, as the case may be, may by notice, direct a person other than a taxable person or a registered person, to file returns at such intervals and in such form and containing such information, as may be required.

(7) Every taxable person or registered person, as the case may be, shall file an annual statement in such form and in such manner, as may be prescribed.

(8) A taxable person or a registered person, whose registration is cancelled under section 24, shall file such final return, as may be prescribed, within thirty days from the date of cancellation by the Commissioner or the designated officer, as the case may be.

27. (1) Tax deduction from the amount payable to works contractor Notwithstanding anything contained in any of the provisions of this Act, every contractee responsible for making payment to any person (hereinafter in this section referred to as the contractor) for discharge of any liability on account of valuable consideration, exceeding rupees five lac in a single contract payable for the transfer of property in goods (whether as goods or in some other form) in pursuance of a works contract, shall, at the time of making such payment to the contractor either in cash or in any other manner, deduct an amount equal to two per cent of such sum towards the tax payable under this Act on account of such contract :

Provided that any individual or Hindu undivided family not registered under this Act, shall not be liable for deduction of such tax.

(2) Any contractor responsible for making any payment or discharge of any liability to any sub-contractor or in pursuance of a contract with the sub-contractor, for the transfer of property in goods (whether as goods or in some other form) involved in the execution whether wholly or in part, of the work undertaken by the contractor, shall, at the time of such payment or discharge, in cash or by cheque or draft or by any other mode, deduct an amount equal to two per cent of such payment or discharge, purporting to be a part of the tax, payable under this Act on such transfer, from the bills or invoices raised by the sub-contractor, as payable by the contractor.

(3) Every person liable to deduct tax at source under sub-section (1) or sub-section (2), as the case may be, shall make an application in the prescribed manner to the designated officer for allotment of Tax Deduction Number. The designated officer, after satisfying that the application is in order, shall allot Tax Deduction Number.

(4) The amount deducted under sub-section (1) or sub-section (2), as the case may be, shall be deposited into the government Treasury by the person making such deduction in the prescribed manner and shall also file a return of tax deduction and payment there of in such form and in such manner, as may be prescribed.

(5) Any deduction made in accordance with the provisions of this section and credited into the Government Treasury, shall be treated as payment towards the tax payable on behalf of the person from whose bills and invoices, the

deduction has been made and credit shall be given to him for the amount so deducted on the production of the certificate, in the prescribed form in this regard.

(6) If any contractee or the contractor, as is referred to in sub-section (1) or sub-section (2), as the case may be, fails to make the deduction, or after deducting such amount fails to deposit the amount so deducted, the designated officer may, after giving an opportunity of being heard, by order in writing, direct that the contractee or the contractor shall pay, by way of penalty, a sum, equal to the amount deductible under this section, but not so deducted, and if deducted, not so deposited in to the Government Treasury.

(7) Without prejudice to the provision of sub-section (6), if any contractee or the contractor, as the case may be, fails to make the deduction or after deducting, fails to deposit the amount so deducted, he shall be liable to pay simple interest at the rate of one and half per cent per month on the amount deductible under this section, but not so deducted and, if deducted, but not so deposited, from the date on which such amount was deductible to the date, on which such amount is actually deposited.

(8) Where the amount has not been deposited after deduction such amount together with interest referred to in sub-section (7), shall be a charge upon all the assets of the person concerned.

(9) Payment by way of deduction in accordance with sub-section (1) or sub-section (2), shall be without prejudice to any other mode of recovery of tax, due under this Act from the contractor or the sub-contractor, as the case may be.

(10) Where on an application being made by any contractor or sub-contractor, the Commissioner or designated officer is satisfied that no deduction of tax or deduction of tax at a lower rate is justified, he shall grant him such certificate permitting no deduction of tax or deduction of tax at a lower rate, as the case may be. On furnishing of such certificate, the person responsible for deduction of tax, shall comply with such certificate.

28. Audit of Returns.—(1) The Commissioner or the designated officer with a view to ascertain the correctness of the returns in general and admissibility of various claims, including input tax credit and refund, may audit or cause to be audited, any of the returns filed, documents or information or statutory forms submitted by a person, subject to such conditions and in such manner, as may be prescribed.

(2) For the purpose of audit under sub-section (1), the Commissioner or any designated officer, may, after due notice to the person to be audited, proceed to examine the records, stock in trade and the related documents of the person. Such examination of records can be undertaken in any office of the Excise and Taxation Department of the State or at the business premises of the person.

(3) The audit under sub-section (1), may be carried out within a period of six years from the date of furnishing of returns.

29. Assessment of tax.—(1) Where a return has been filed under sub-section (1) or sub-section (2) of section 26 or in response to a notice under sub-section (6) of section 26, if any tax or interest is found due on the basis of such return, after adjustment of any tax paid on self-assessment and any amount paid otherwise by way of tax or interest, then, without prejudice to the provisions of sub-section (2), an intimation shall be sent to the person specifying the sum so payable, and such intimation shall be deemed to be a notice of demand issued under sub-section (11) and all the provisions of this Act shall apply accordingly :

Provided that except as otherwise provided in this sub-section, the acknowledgment of the return shall be deemed to be an intimation under this sub-section, in case, either no sum is payable by the person or no refund is due to him :

Provided further that no intimation under this sub-section shall be sent after the expiry of one year from the end of financial year in which the return is filed.

(2) Notwithstanding any thing contained in sub-section (1), the Commissioner or the designated officer, as the case may be, may, on his own motion or on the basis of information received by him, order or make an assessment of the tax, payable by a person to the best of his judgement and determine the tax payable by him, where,—

- (a) a person fails to file a return under section 26 ; or
- (b) there are definite reasons to believe that a return filed by a person is not correct and complete; or
- (c) there are reasonable grounds to believe that a person is liable to pay tax, but has failed to pay the amount due; or
- (d) a person has availed input tax credit for which he is not eligible; or
- (e) provisional assessment is framed.

(3) The Commissioner on his own motion or on the basis of information received by him may, by an order in writing, direct the designated officer to make an assessment of the amount of tax payable by any person or any class of persons for such period, as he may specify in his order.

(4) An assessment under sub-section (2) or sub-section (3), may be made within three years after the date when the annual statement was filed or due to be filed, whichever is later :

Provided that where circumstances so warrant, the Commissioner may, by an order in writing, allow assessment of a taxable person or of a registered person after three years, but not later than six years from the date, when annual statement was filed or due to be filed by such person, whichever is later.

(5) Where an assessment is to be made under this section, the designated officer shall, serve a notice to the person to be assessed and such notice shall state—

- (a) the grounds for the proposed assessment; and
- (b) the time, place and manner for filing objections, if any.

(6) The designated officer, after taking into account all relevant material, which the officer has gathered, shall on the day specified in the notice issued under sub-section (5) or as soon afterwards as may be, after hearing such evidence, as the assessee may produce, by an order in writing, make an assessment determining the sum payable or refund of any sum due to him on the basis of such assessment.

(7) The designated officer may, with the prior permission of the Commissioner, within a period of three years from the date of the assessment order, amend assessment, made under sub-section (2) or sub-section (3), if he discovers under-assessment of tax, payable by a person for the reason that,—

- (a) such a person has committed fraud or wilful neglect ; or
- (b) such a person has misrepresented facts; or
- (c) a part of the turnover has escaped assessment :

Provided that no order amending such assessment, shall be made without affording an opportunity of being heard to the affected person.

(8) The designated officer may, within a period of one year from the date of the assessment order, rectify an assessment, made under sub-section (2), or sub-section (3), if he discovers that there is a mistake apparent from record :

Provided that no order rectifying such assessment shall be made without affording an opportunity of being heard to the affected person.

(9) An assessment under sub-section (7) and (8) shall be an assessment made under this Act for all intents and purposes.

(10) No assessment or other proceedings purported, to be made, or executed under this Act or the rules made thereunder, shall be,—

- (a) quashed or deemed to be void only for the reason that the same were not in the prescribed form; or
- (b) affected by reason of a mistake, defect or omission therein :

Provided that such an assessment is substantially in conformity with this Act or according to the intent and meaning of this Act and the rules made thereunder.

(11) When any tax, interest, penalty or any other sum is payable in consequence of any order passed under this Act, the designated officer shall serve upon the person a notice of demand in the prescribed form specifying the sum so payable.

30. Provisional assessment.—(1) Notwithstanding anything contained in section 29, where fraud or wilful neglect has been committed with a view to evade or avoid the payment of tax or due tax has been paid or a return has not been filed by or on behalf of a person, the designated officer may, for the reasons to be recorded in writing, make provisional assessment for any period to determine the tax liability so evaded, avoided or unpaid :

Provided that tax liability of such a person shall be assessed finally after he files his return in the prescribed manner.

(2) The provisional assessment under sub-section (1) shall be made within a period of six months from the date of detection. The Commissioner may, however, for reasons to be recorded in writing, extend the said period by another six months in a particular case referred to him by the designated officer.

31. Tax liability of a casual trader.—(1) If a casual trader organizes a business event for sale or purchase of taxable goods in the State, he shall apply for permission to do so to the designated officer in the prescribed form, along with such fee, as may be prescribed.

(2) The designated officer on receipt of the application may grant permission in the prescribed, form subject to such conditions as may be prescribed.

(3) Where a business event for sale or purchase of taxable goods is organized by a taxable person or a registered person, he shall before organizing such event in form the designated officer in the prescribed manner.

(4) A casual trader organizing the business event shall furnish, such amount of security, in the prescribed manner, as may be determined by the designated officer, keeping in view the nature and quantum of business, likely to be undertaken by the casual trader, but not exceeding rupees one lac.

(5) A casual trader, who brings taxable goods from outside the State, shall report to the nearest Information Collection Centre or check post on entry in the State, in the prescribed form by giving full detail of such goods, in the prescribed manner.

(6) A casual trader, shall make the payment of tax in such manner, as may be prescribed, and shall immediately on completion of such business event or the period for which the permission was granted by the designated officer, whichever is earlier, report to the designated officer, about the total amount of sales or purchases, the tax payable thereon and the tax paid and shall deposit the amount of balance tax, if any, in the Government treasury within such time and in such manner, as may be prescribed.

(7) Where a casual trader fails to apply for permission as required under sub-section (1) or fails to make a report as required under sub-sections (5) and (6), the designated officer shall assess to the best of his judgment the amount of tax due and direct such person to pay the amount of tax within such time and in such manner as may be prescribed :

Provided that no amount of tax under this sub-section shall be assessed without affording an opportunity of being heard to the casual trader.

(8) The provisions relating to penalty, interest and recovery of this Act shall mutatis mutandis apply to the tax payable by a casual trade under this section.

Explanation.—For the purpose of this section, "business event" shall include an event like exhibition-cum-sale, seasonal clearance-cum-sale or any such like activity where occasional transaction in the nature of business, is carried out.

32. Interest for non-payment or delayed payment of tax.—(1) If any person fails to pay the amount of tax due from him as per provisions of this Act, he shall, in addition to the amount of tax, be liable to pay simple interest on the amount of tax due from him at the rate of one and half per cent per month from the due date for payment till the date, he actually pays the amount of tax.

(2) If a person having furnished a return under this Act, rectifies any error or omission as per sub-section (4) of section 26, which results in higher amount of tax to be due than the original return, such a person shall be liable to pay interest at the rate of one and half per cent per month, in respect of the additional amount of tax payable from the due date for payment till the date, he actually pays the additional amount of tax.

(3) If a person fails to declare the amount of tax in a return, which should have been declared, such a person shall be liable to pay simple interest at the rate of one and half per cent month on such amount of tax from the due date for payment till the date, he actually pays such amount of tax.

(4) If the amount of tax or penalty due from a person is not paid by him within the period specified in the notice of demand, or if no period is specified, within thirty days from the service of such notice, the person shall in addition to the amount of tax or penalty, be liable to pay simple interest on such amount at the rate of one and half per cent per month from the date immediately following the date, on which the period specified in the notice or the period of thirty days, as the case may be, expires till the date, he actually pays such amount of tax or penalty, as the case may be :

Provided that where the recovery of any tax or penalty is stayed by an order of any competent authority or any Court, the amount of tax or penalty shall, after the order of stay is vacated, be recoverable alongwith interest at the aforesaid rate on the amount ultimately found to be due and such interest shall be payable from the date, the tax or penalty had first become due.

(5) The amount of interest payable under this section shall,

(a) be calculated by considering part of a month as one month;

(b) for the purposes of collection and recovery, be deemed to be tax under this Act and ;

(c) be in addition to the penalty, if any, imposed under this Act.

Explanation.—If payment of the amount of tax is made by any person through cheque and the same is dishonoured by the bank, it will amount to failure on the part of the person to pay the amount of tax.

CHAPTER - VI

PAYMENT AND RECOVERY OF TAX

33. Due date of payment.—Value Added Tax or Turnover Tax due or payable under this Act, shall be paid,—

- (a) in the case of a taxable person whose gross turnover exceeds rupees one crore in the previous year, on monthly basis by such date, as may be prescribed;
- (b) in the case of a taxable person whose turnover is less than one crore in the previous year, by the date, the return for such a period is required to be filed or as may be prescribed;
- (c) in case of tax due as per assessment made under this Act, by the date, specified in the notice of demand or within a period of thirty days of the order, whichever is earlier;
- (d) in the case of turnover tax payable by a registered person under this Act, by the date, the return for the period is required to be filed;
- (e) in the case of a casual trader, by such date as may be prescribed; and
- (f) in any other case, the tax shall be payable by such date, as may be specified by the designated officer.

34. Tax as a debt due to the State Government.—Tax or any other amount due or payable by a person under this Act, shall be a debt, due to the State Government and shall be payable or recovered as per the provisions of this Act, and the rules framed thereunder.

35. Liability under this Act to be the first charge.—Notwithstanding anything to the contrary contained in any contract or law for the time being in force, any amount of tax, penalty, interest and any other sum, payable by a taxable, registered or any other person under this Act, shall be the first charge on the property of such person from the date on which the amount becomes due to payable.

36. Arrear recoverable as arrears of land revenue.—The amount of any tax, penalty, interest or any other sum due and payable under this Act, which remains unpaid after the due date, shall be recoverable as arrears of land revenue.

37. Adjustment of any payment.—Payment made by a person towards the amount, due as a result of any order passed under this Act, shall first be adjusted, except in so far as the recovery of the said amount or part thereof is stayed under the provisions of this Act, against the interest payable by him on the date of payment and thereafter towards the amounts due as a penalty. Any amount remaining unadjusted, shall be adjusted towards the tax payable.

38. Restrictions on transfer of property.—No person against whom any recovery proceedings under the provisions of this Act are pending, shall create a charge on or a part with the possession by way of sale, mortgage, gift, exchange or any other mode of transfer whatsoever, of any of his assets, with the intention to avoid or evade payment of any tax, penalty, interest or any other sum due or likely to become due. In case, any charge or transfer is made in violation of the provisions of this section, such charge or transfer shall be void as against any claim in respect of any tax or any other sum payable by the taxable person, registered person or any other person, till the completion of the said proceedings :

Provided that such charge or transfer shall not be void, if it is made with the previous permission of the designated officer or the tax or any other amount due from such a person, has been fully secured for payment by furnishing a bank guarantee. In case of outstanding arrears, the designated officer shall inform the appropriate Registering Authority about the liabilities under this Act.

Explanation.—In this section 'assets' means land, building, machinery, plant, shares, securities and fixed assets, charged to the banks to the extent, to which any of the assets, do not form part of the stock in trade of the business of the person.

CHAPTER VII

REFUND

39. Refund of Tax.—(1) Subject to the provisions of this Act and the rules made thereunder, the Commissioner or the designated officer shall, in such manner and within such period, as may be prescribed, refund to a person, the amount of tax, penalty or interest, if any, paid by such person in excess of the amount due from him and also the excess of input tax credit over output tax payable under this Act. The refund may either be by refund voucher or at the option of the person, by refund adjustment order as may be specified:

Provided that, the Commissioner or the designated officer shall first apply such excess amount towards the recovery of any amount due in respect of which a notice under section 29 has been issued or any amount, which is due, but not paid, as the case may be, and shall refund the balance, if any.

(2) Where any refund is due to any taxable person or registered person according to the return furnished by him for any period, such refund may provisionally be adjusted by him against the tax due and payable as per the returns furnished under section 26 for any subsequent period:

Provided that the amount of tax or penalty or interest or all of these, due from, and payable by, the taxable person or the registered person, as the case may be, on the date of such adjustment, shall first be deducted from such refund while making adjustment.

40. Interest on delayed refund.—Where an amount required to be refunded by the Commissioner or the designated officer, to any person is not so refunded to him within a period of ninety days from the date of the application, a simple interest at the rate of three fourth of one per cent per month on the said amount shall be paid to such person from the date, immediately following the expiry of the period of ninety days to the date of the refund.

Explanation.—(1) If the delay in granting the refund within the aforesaid period of ninety days is attributable to the taxable person or the registered person, as the case may be, whether wholly or in part, the period of the delay attributable to him, shall be excluded from the period for which interest is payable.

(2) Where any question arises as to the period to be excluded in terms of Explanation (1), for the purposes of calculation of interest, such question shall be determined by the Commissioner, whose decision shall be final.

(3) Interest under this section, shall be calculated by considering part of the month as one month.

41. Power to withhold refund in certain cases.—(1) Where an order giving rise to a refund is the subject matter of an appeal or further proceeding or where any other proceeding under this Act is pending, and the officer competent to grant such refund is of the opinion that the grant of the refund is likely to adversely affect the revenue, such officer may, with the previous approval of the Commissioner, withhold the refund till such time, as may be determined.

(2) Where a refund is withheld under sub-section (1), the Commissioner shall pay interest in accordance with the provisions of section 40 on the amount of refund ultimately determined to be due to the person as a result of appeal or further proceeding or any other proceeding for the period, from the date, immediately following the expiry of the period of ninety days from the date of the order referred to in sub-section (1), to the date of refund.

CHAPTER-VIII

LIABILITY TO PRODUCE ACCOUNTS

42. Accounts.—(1) Every taxable person, registered person, casual trader or any other person, who is required so to do by the Commissioner or the designated officer by notice served on him, shall keep a true account of the goods sold and purchased by him.

(2) If the officer referred to in sub-section (1), considers that the accounts kept are not sufficiently clear or intelligible to determine, whether or not a person is liable to pay tax during any period or the accounts are so kept as not to enable a proper scrutiny of the returns or the statements furnished, he may require such person by notice in writing to keep such accounts, including records of sales or purchases in such form or manner, as in his opinion are necessary for the purpose of proper assessment of tax.

(3) Every taxable person and registered person shall keep all his account books including those relating to his stock of goods or to purchases, sales and delivery of goods made by him or payments made or received, at the place or places of business, specified in his registration certificate or with the previous approval of the commissioner or the designated officer at such other place or places, as may be allowed.

(4) Every person, shall produce all account books relating to his business, if so required by the designated officer, for the purpose of authentication in the manner as may be prescribed.

43. Audit of accounts by Chartered Accountant.—Every person whose gross turnover in a year exceeds the prescribed limit, shall have his accounts audited by an accountant and shall submit to the designated officer a VAT audit report in the prescribed form duly signed by such accountant and setting forth such particulars and certificates, as may be prescribed.

Explanation.—In this section “accountant” means a chartered accountant within the meaning of the Chartered Accountants Act, 1949 (Central Act No. 38 of 1949), and includes any person, who by virtue of the provisions of sub-section (2) of section 226 of the Companies Act, 1956 (Central Act No. 1 of 1956), is entitled to be appointed to act as an auditor of companies.

44. Period of retention of accounts.—Every person required under this Act to keep and maintain account books or other records, shall retain them until the expiry of six years after the end of the year to which these relate or for such other period, as may be required or until the assessment becomes final, whichever is later.

45. Taxable person and registered person to issue invoice.—(1) Every taxable or registered person or an agent of such person shall, in respect of the goods sold by him or on his behalf for the value, exceeding rupees one hundred, issue to the purchaser, in such manner, a VAT invoice or a retail invoice, as the case may be, containing such information, as may be prescribed.

(2) Each sale below rupees one hundred, where a VAT invoice or a retail invoice has not been issued, shall also be recorded in the account books on daily basis.

(3) Notwithstanding anything contained in sub-section (1) and (2) where a purchaser asks for an invoice, it shall be issued by the person irrespective of the fact that value of the goods sold is less than rupees one hundred.

(4) Where the goods are transferred otherwise than by way of sale, the taxable or registered person shall, in respect of the goods transferred or consigned by him or on his behalf, issue to the consignee a delivery challan in such manner and containing such particulars, as may be prescribed.

(5) Where a taxable person returns any goods purchased by him from another taxable person, against a VAT invoice, he shall issue to the selling taxable person at the time of return of the goods, a delivery cum debit note on the invoice book and shall reverse the input tax credit availed by him in respect of those goods.

46. Production and inspection of accounts, impounding of documents, search of premises and seizure of goods.—

(1) The Commissioner or the designated officer, as the case may be, may, subject to such conditions, as may be prescribed, require any taxable person, registered person or any other person to produce before him any account and document or to furnish any information, relating to stocks of goods or sale, purchase and delivery of goods or payments made or received by the person or any other information relating to his business, as may be necessary.

(2) All account, registers and documents relating to stocks of goods or purchase, sale and delivery of goods, payments made or received by any taxable person, registered person or any other person and all goods kept in any place of business of any person, shall at all reasonable times be provided for inspection by an officer referred to in sub-section (1), and that officer may take or cause to be taken such copies or extracts of the said accounts, registers or documents and such inventory of the goods, as appear to him to be necessary.

(3) If the officer referred to in sub-section (1), has reason to believe that any taxable person, registered person or any other person has evaded or is attempting to evade the payment of any tax due from him, he may, for reasons to be recorded in writing, seize such accounts, registers or documents, as may be necessary and shall issue a receipt for the same. The said officer shall retain such accounts, registers or documents for a period not exceeding thirty days in case of current account books and sixty days for old account books. The officer may, however, in case he finds any information necessary for further investigation, retain a photocopy of the documents, which shall be authenticated by the person himself and shall be treated as original.

(4) For the purpose of sub-section (2) or sub-section (3), the said officer may enter and search any place of business or any other place where he has reason to believe that the taxable person or registered person keeps or is for the time being keeping any account, registers or documents of his business or stocks of goods relating to his business :

Provided that no officer shall enter and search any premises, without prior permission of the Commissioner or of such other officer not below the rank of Assistant Excise and Taxation Commissioner, as the Commissioner may, authorize in writing.

(5) Where any books of accounts, documents, cash or goods are found in the possession or control of any person in the course of any search, it shall be presumed, unless the contrary is proved, that such books of accounts, documents, cash or goods belong to such person whose place of business is inspected.

(6) Any officer empowered to act under sub-section (2) or sub-section (3), shall have power to seize any goods, which are found in any office, shop, godown, vessel, vehicle or any other place of business, but not accounted for by the person in his books, accounts, registers, records and other documents :

Provided that a list of all the goods seized under this sub-section, shall be prepared by such officer and be signed by the officer and two independent witnesses, and a receipt of the goods shall be given to the person from whose possession or control these are seized.

(7) The officer shall have the power to record the statement of a person or any person connected with his business, including a bailee or a transporter, and such statement may, after giving the affected person a reasonable opportunity of being heard, be used for the purpose of determining his liability to tax.

(8) The officer after seizing the goods, may hand over the goods on sapurdari to the owner of the goods or a person duly authorized by such owner with the direction that he shall not part with the goods till verification is done or inquiry is made by such officer. The officer shall make necessary verification or inquiry within a period of fifteen days from the date of handing over the seized goods.

(9) The officer may release the goods, seized under sub-section (6), to the owner of the goods or to the person duly authorised by such owner, during the course of the proceedings, on furnishing security for an amount equal to the value of the goods to the satisfaction of such an officer.

(10) If the officer, on inquiry or verification is satisfied that the seized goods are not accounted for or that the person has attempted to evade payment of tax in respect of such goods, he shall, after giving the person an opportunity of being heard, impose penalty as per provisions of this Act.

(11) The penalty referred to under sub-section (10), shall be deposited by the person in the prescribed manner within a period of thirty days from the service of the notice. If the person does not deposit the penalty, the officer shall cause the goods to be sold in such manner, as may be prescribed and apply the sale proceeds thereof towards the penalty and tax and refund the balance, if any, to the owner or the person duly authorised by the owner of such goods, subject to provisions of Section 37. In the event of the goods having been released against security under sub-section (9), the amount of penalty imposed shall be recovered out of such security.

(12) Where the officer, seizing the goods or any other officer, as the case may be, is of the opinion that the goods are subject to speedy and natural decay or where the tax or penalty, as the case may be, is not deposited in accordance with the provisions of this Act, he may, without prejudice to any other action that may be taken in accordance with other provisions of this Act, cause the goods to be sold by public auction in the prescribed manner. The sale proceeds of such goods shall be adjusted towards the expenses of auction and amount of tax, penalty and interest, if any. The balance, if any, shall be refunded to the person concerned in accordance with the provisions of this Act.

(13) Notwithstanding anything to the contrary contained in this Act, all the provisions of this section shall *mutatis mutandis* apply to an unregistered person, who has failed to apply for registration for VAT or TOT, if the designated officer is satisfied on the basis of definite information that such a person is liable to pay tax under this Act.

47. Cross-checking of transactions.— (1) With a view to prevent evasion of tax and to ensure proper compliance of the provisions of this Act, the Commissioner or the designated officer may, from time to time, collect information in respect of sales and purchases effected by a person, class or group of persons and cause any of such sales and purchases to be cross-checked.

(2) The officer referred to in sub-section (1), may from time to time, require a person, class or group of persons to furnish such information, details and particulars, as may be specified in respect of sales and purchases effected by them during a particular period, to such authority and by such date, as may be required.

(3) The Commissioner or the designated officer, as the case may be, shall cause any of such transactions to be cross-checked by reference to the books of accounts of the purchasing and selling persons. For this purpose, the designated officer shall send a notice to the person, whose books of accounts are required for the purpose of cross-checking, stating therein the details of the transactions proposed to be cross-checked and the time and date on which any officer, duly authorized to cross-check the transactions, shall visit the place, where the books of accounts are kept by the taxable person or registered person or any other person.

48. Survey.— (1) with a view to identify persons, who are liable to pay tax under this Act, but have remained unregistered, the Commissioner may, from time to time, order survey of such unregistered persons to be conducted.

(2) The Commissioner or the designated officer, for the purpose of conducting survey under sub-section (1), may, by giving a notice, require any person, class or group of persons, to furnish the names, addresses and other particulars of the person or persons, who have purchased any goods from or sold any goods to any such person, class or group of persons during a given period.

(3) The officer referred to in sub-section (2), may, by issuing a notice, call for details and particulars of the services, provided by the financial institutions, Banking companies and other institutions, which shall be relevant and useful for the purpose of the survey. He may, from time to time, cause the results of the survey to be published in any manner that he deems proper. However, such publication shall not disclose or indicate the identity of any particular unregistered person identified during the survey.

(4) The officer referred to in sub-section (2), may, for the purpose of the survey, enter the place of business of a person, who is unregistered or has not applied for registration under this Act irrespective of the fact whether such place is the principal place of business or not of a person and he may, require any proprietor, partner, employee or any other person, who may at that time be attending to, in any manner or helping in the business—

(a) to afford him the necessary facility to inspect such account books, as he may require or which may be available at such place;

(b) to afford him the necessary facility to check or verify the cash, stock or other valuable articles or things, which may be found therein; and

(c) to furnish such information, as he may require in respect of any matter, which may be useful for or relevant to any proceedings under this Act.

Explanation.— A place of business, will also include any other place in which the person, engaged in business, or the said employee or other person attending to or helping in business states that any of the books of accounts or other documents or any part of cash, stock or other valuable articles or things relating to the business, are or is kept.

(5) The officer referred to in sub-section (2), shall enter the place of business only during the hours at which such place is open for business after sunrise and before sunset. The Commissioner or the designated officer may, make or cause to be made extracts or copies from books of account and other documents, inspected by him, make an inventory of any cash, stock or other valuable articles or things checked or verified by him, and record the statement of any person, which may be useful for or relevant to, any proceedings under this Act.

(6) The officer referred to in sub-section (2), in exercise of the powers conferred under this section, shall on no accounts, remove or cause to be removed from the place, where he has entered any books of account, other documents or any cash, stock or other valuable articles or things.

49. Power to collect statistics.—(1) The Commissioner may, for the purposes of better administration of this Act, direct that statistics be collected relating to any matter under this Act.

(2) Upon the direction made under sub-section (1), the Commissioner or the designated officer may, if found necessary, by notice in leading newspapers or in such other manner, as the Commissioner or the designated officer may deem fit, call upon all persons or any class or group of persons to furnish such information or returns, as may be stated therein for the purpose of collection of statistics.

(3) Without prejudice to the generality of the foregoing provisions, the State Government may provide that every person or class or group of persons, registered under this Act, shall furnish, in addition to any other returns, provided for elsewhere, an annual return in such form, by such date and to such authority, as may be notified, and different provisions may be made for different classes or group of persons.

50. Publication and disclosure of information in public interest.—(1) Notwithstanding anything contained in Section 69, if the State Government is of the opinion that it is necessary or expedient in the public interest to publish or disclose the names of any person or persons and any other particulars relating to any proceedings under this Act in respect of such person or persons, it may publish or disclose or cause to be published or disclosed such names and particulars in such manner as it may deem fit.

(2) No publication or disclosure under this section, shall be made in relation to any tax levied or penalty imposed or interest levied or any conviction inflicted for any offence, connected with any proceeding under this Act, until the time for presenting an appeal to the appropriate appellate authority has expired, if the appeal has not been filed or if the appeal has been filed, the same has been disposed of.

Explanation.—In the case of a firm, company or other association of persons, the names of the partners of the firm, the directors, managing agents, secretaries, treasurers or managers of the company or the members of the association, as the case may be, may also be published or disclosed, if, in the opinion of the State Government, the circumstances of the case justify to do so.

CHAPTER IX

ESTABLISHMENT OF INFORMATION COLLECTION CENTRES

51. Establishment of information collection centres or check posts and inspection of goods in transit.—(1) If, with a view to prevent or check avoidance or evasion of tax under this Act, the State Government considers it necessary so to do, it may, by notification, direct for the establishment of a check post or, information collection centre or both at such place or places, as may be specified in the notification.

(2) The owner or person Incharge of a goods vehicle shall carry with him a goods vehicle record, goods receipt, a trip sheet or a logbook, as the case may be, and a sale invoice or bill or cash memo, or delivery challan containing such particulars, as may be prescribed, in respect of such goods meant for the purpose of business, as are being carried in the goods vehicle and produce a copy each of the aforesaid documents to an officer Incharge of a check post or information collection centre, or any other officer not below the rank of an Excise and Taxation Officer checking the vehicle at any place :

Provided that a person selling goods from within or outside the State in the course of inter-State trade or commerce, shall also furnish or cause to be furnished a declaration with such particulars, as may be prescribed :

Provided further that a taxable person, who sells or despatches any goods from within the State to a place outside the State or imports or brings any goods or otherwise receives goods from outside the State, shall furnish particulars of the goods in a specified form obtained from the designated officer, duly filled in and signed.

(3) At every check post or information collection centre or at any other place when so required by an officer referred to in sub-section (2), the driver or any other person Incharge of the goods vehicle shall stop the vehicle and keep it stationary, as long as may reasonably be necessary, and allow the officer Incharge of the check post or the information collection centre or the aforesaid officer to check the contents in the vehicle by breaking open the package or packages, if necessary, and inspect all records relating to the goods carried, which are in the possession of the driver or any other

person, as may be required by the aforesaid officer, and if considered necessary, such officer may also search the goods vehicle and the driver or other person Incharge of the vehicle or of the goods.

(4) The owner or person Incharge of a goods vehicle entering the limits or leaving the limits of the State, shall stop at the nearest check post or information collection centre, as the case may be, and shall furnish in triplicate a declaration mentioned in sub-section (2) alongwith the documents in respect of the goods carried in such vehicle before the officer Incharge of the check post or information collection centre. The officer Incharge shall return a copy of the declaration duly verified by him to the owner or person Incharge of the goods vehicle to enable him to produce the same at the time of subsequent checking, if any :

Provided that where a goods vehicle bound for any place outside the State passes through the State, the owner or person Incharge of such vehicle shall furnish, in duplicate, to the officer Incharge of the check post or information collection centre, a declaration in respect of his entry into the State in the prescribed form and obtain from him a copy thereof duly verified. The owner or person Incharge of the goods vehicle, shall deliver within forty-eight hours the aforesaid copy to the officer Incharge of the check post or information collection centre at the point of its exit from the State, failing which, he shall be liable to pay a penalty to be imposed by an order, made by the officer Incharge of the check post or information collection centre equal to fifty per cent of the value of goods involved :

Provided further that where the goods carried by such vehicle are, after their entry into the State, transported outside the State by any other vehicle or conveyance, the burden of proving that the goods have actually moved out of the State, shall lie on the owner or person Incharge of the vehicle :

Provided further that no penalty shall be imposed unless the person concerned has been given an opportunity of being heard.

(5) At every station of transport of goods, bus stand or place of loading or unloading of goods, when so required by the Commissioner or the designated officer, the driver or the owner of the goods vehicle or the employee of transport company or goods booking agency, shall produce for examination, transport receipts and all other documents and account books concerning the goods carried, transported, loaded, unloaded, consigned or received for transport, maintained by him in the prescribed manner. The Commissioner or the designated officer shall, for the purpose of examining that such transport receipts or other documents or account books are in respect of the goods carried, transported, loaded, unloaded or consigned or received for transport, have the powers to break open any package, or packages of such goods.

(6) (a) If the officer Incharge of the check post or information collection centre or any other officer as mentioned in sub-section (2), has reasons to suspect that the goods under transport are meant for trade and are not covered by proper and genuine documents as mentioned in sub-section (2) or sub-section (4), or that the person transporting the goods is attempting to evade payment of tax, he may, reasons to be recorded in writing and after hearing the person concerned, order detention of the goods alongwith the vehicle for a period not exceeding seventy-two hours. Such goods shall be released on furnishing of security or executing a bond with sureties in the prescribed form and manner by the consignor or the consignee, if registered under this Act to the satisfaction of the officer on duty and in case the consignor or the consignee is not registered under this Act, then on furnishing of a security in the form of cash or bank guarantee or crossed bank draft, which shall be equal to the amount of penalty leviable rounded up to the nearest hundred.

(b) If the owner or the person Incharge of the goods has not submitted the documents as mentioned in sub-sections (2) and (4) at the nearest check post or information collection centre, in the State, as the case may be, on his entry into or before exit from the State, such goods shall be detained alongwith the vehicle for a period not exceeding seventy-two hours subject to orders under clause (c) of sub-section (7).

(7) (a) The officer detaining the goods under sub-section (6), shall record the statement, if any, given by the consignor or consignee of the goods or his representative or the driver or other person Incharge of the goods vehicle and shall require him to prove the genuineness of the transaction before him in his office within the period of seventy-two hours of the detention. The said officer shall, immediately thereafter, submit the proceedings alongwith the concerned records to the designated officer for conducting necessary enquiry in the matter ;

(b) The designated officer shall, before conducting the enquiry, serve a notice on the consignor or consignee of the goods detained under clause (a) of sub-section (6), and give him an opportunity of being heard and if, after the enquiry, such officer finds that there has been an attempt to avoid or evade the tax due or likely to be due under this Act, he shall, by order, impose on the consignor or consignee of the goods, a penalty, which shall be equal to thirty per cent of the value of the goods. In case he finds otherwise, he shall order release of the goods and the vehicle, if not already released, after recording reasons in writing and shall decide the matter finally within a period of fourteen days from the commencement of the enquiry proceedings;

(c) The officer referred to in clause (b), before conducting the enquiry, shall serve a notice on the consignor or consignee of the goods detained under clause (b) of sub-section (6) and give him an opportunity of being heard and if, after

the enquiry, such officer is satisfied that the documents are required under sub-sections (2) and (4), were not furnished at the information collection centre or the check post, as the case may be, with a view to attempt to avoid or evade the tax due or likely to be due under this Act, he shall by order, for reasons to be recorded in writing, impose on the consignor or consignee of the goods, penalty equal to fifty per cent of the value of the goods involved. In case, he finds otherwise, he shall order release of the goods for sufficient reasons to be recorded in writing. He may, however, order release of the goods and the vehicle on furnishing of a security by the consignor or the consignee in the form of cash or bank guarantee or crossed bank draft for an amount equal to the amount of penalty imposable and shall decide the matter finally within a period of fourteen days from the commencement of the enquiry proceedings; and

(d) The officer in charge of a check post or information collection centre or any other officer referred to in sub-section (2), may receive the amount of cash security as referred to in clause (a) of sub-section (6) and clause (c) of sub-section (7) and the amount of penalty imposed under sub-section (4) and clauses (b) and (c) of sub-section (7) against a proper receipt in the prescribed manner.

Explanation.—The detained goods and the vehicle shall continue to be so detained beyond the period specified in sub-sections (6) and (7), unless released by detaining officer or enquiry officer against surety or security as provided for in these sub-sections or the penalty imposed has been realized or the enquiry officer orders release of the detained goods after enquiry, whichever is earlier.

(8) In the event of the consignor or consignee of the goods not paying the penalty imposed under sub-section (7) within thirty days from the date of the communication of the order imposing the penalty, the goods detained shall be liable to be sold by the officer who imposed the penalty for realization of the penalty, by public auction in the prescribed manner. If the goods detained are of perishable nature or subject to speedy or natural decay or when the expenses of keeping them in custody are likely to exceed their value, the officer in charge of the check post or information collection centre or any other officer referred to in sub-section (2), as the case may be, shall order immediately to sell such goods or otherwise dispose them off after giving notice to the consignor or consignee in the prescribed manner. The sale proceeds shall be deposited in the State Government Treasury and the consignor or consignee of the goods shall be entitled to only the balance amount of sale proceeds after deducting the amount of penalty, interest and expenses and other incidental charges incurred in detaining and disposing of the goods.

Provided that if the consignor or consignee of the goods does not come forward to claim the goods, then the entire sale proceeds, shall be deposited in the State Government Treasury and no claim for balance amount of sale proceeds shall be entertained from any other person.

(9) The officer detaining the goods shall issue to the owner of the goods or his representative or the driver or the person in charge of the goods vehicle, a receipt specifying the description and quantity of the goods so detained and obtain an acknowledgement from such person or if such person refuses to give an acknowledgement, then record the fact refusal in the presence of two witnesses.

(10) If the order of detention of goods under sub-section (6) or of imposition of penalty under sub-section (4), or sub-section (7) or order under sub-section (8), is in the meantime set aside or modified in appeal or other proceedings, the officer imposing the penalty shall give effect to the orders in such appeal or other proceedings, as the case may be.

(11) No person or any individual including a carrier of goods or agent of a transport company or booking agency, acting behalf of a taxable person or a registered person, shall take delivery of, or transport from any station, airport or any other place, whether of similar nature or otherwise any consignment of goods, other than personal luggage or goods for personal consumption, the sale or purchase of which, is taxable under this Act, except in accordance with such conditions, as may be prescribed, with a view to ensure that there is no avoidance or evasion of the tax imposed by or under this Act.

(12) Where a transporter fails to give information as required under sub-section (2) about the consignor or consignee of the goods, within such time, as may be specified, or transports the goods without documents or with ingenuine documents he shall be liable to pay, in addition to the penalty leviable under this section, the tax due on such goods at the VAT rate applicable under this Act.

(13) The provisions of this Act, shall, for the purpose of levy and collection of tax, determination of interest and recovery of tax and interest, apply to the transport.

Explanation.—(1) For the purposes of this section, where goods are delivered to a carrier, a goods booking agency or any other bailee for transportation, the movement of the goods shall be deemed to commence at the time of such delivery and terminate at the time, such delivery is taken from such carrier, goods booking agency or any other bailee, as the case may be.

(2) For the purpose of sub-section (7), service of notice on the representative of the owner or the driver or other person in charge of the goods vehicle, shall be deemed to be a valid service on the consignor or consignee of the goods.

CHAPTER X

OFFENCES AND PENALTIES

52. Penalty for failure to register.—Whoever fails to make an application for registration, as required under sub-section (2) of section 21, shall be liable for penalty equal to the amount of tax, in addition to the tax due, and the interest payable from the date, the person becomes liable for registration as a taxable person or a registered persons, as the case may be, till the application for registration is made.

53. Penalty for failure to pay tax when due.—If a person registered under this Act, fails to pay the amount of tax in accordance with the provisions of this Act, he shall be liable to pay, in addition to the tax and the interest payable by him, a penalty, at the rate of two per cent per month on the tax, so due and payable from the date, it had become due to the date of its payment, or to the date of the order of the assessment, whichever is earlier. The amount of penalty payable under this section, shall be calculated by considering a part of the month as one month.

54. Penalty for failure to file return or annual statement.—If a person registered under this Act or any other person required to furnish return or annual statement without sufficient cause.—

- (a) fails to furnish any return or annual statement by the prescribed date; or
- (b) fails to furnish alongwith the return or annual statement, the proof of payment of tax in accordance with the provisions of this Act; or
- (c) fails to rectify any error or omission in any return or annual statement in accordance with the provisions of this Act; or
- (f) fails to comply with the requirements of any notice issued under this Act,

the Commissioner or the designated officer, may, direct him to pay in addition to tax, interest and penalty under any other provisions of this Act, a further penalty of a sum of rupees one hundred, per day of default, subject to the maximum of rupees ten thousands.

55. Penalty for unauthorized collection of tax.—Where a person collects tax in contravention of the provisions of this Act, he shall be liable to pay by way of penalty, a sum equal to one and half times of the tax so collected.

56. Penalty for evasion tax.—If the Commissioner or the designated officer is satisfied that the person, in order to evade or avoid payment of tax—

- (a) has concealed any particulars from any return furnished by him; or
- (b) has deliberately furnished incorrect particulars therein; or
- (c) has concealed any transactions of sale or purchase from his account books; or
- (d) has not maintained intelligible accounts, which prevent the Commissioner or the designated officer to assess the tax due from him; or
- (e) has availed input tax credit to which he is not entitled to; or
- (f) has claimed refund which was not due to him; or
- (g) has claimed credit in respect of tax, which was not actually paid,

he shall direct that the person shall pay, by way of penalty, in addition to the tax and interest payable by him, a sum equal to twice the amount of tax, assessed on account of the aforesaid reasons.

57. Penalty for failure to issue invoice and use of false invoice.—(1) A person, who fails to issue invoice for any sale transaction as required under section 45, shall be liable to pay a penalty of rupees two thousand or double the amount of tax involved in the transaction, whichever is higher.

(2) A person, who issues a false invoice or receives and uses an invoice knowing such invoice to be false, shall be liable, to pay a penalty of rupees five thousand or double the amount of tax involved in the false invoice, whichever is higher.

58. Penalty for misuse of registration number.—A person, who knowingly uses a false VAT registration number or TOT registration number, or uses a registration number of another person with a view to evade payment of due tax, he shall be liable to pay in addition to the due tax, penalty equal to the amount of tax evaded on this account.

59. Penalty for non payment of assessed demand.—Where a person fails to make payment of the tax assessed or interest levied or penalty imposed on him or any other amount due from him under this Act within a period of thirty days from the date of service of the notice of demand, he shall be liable, in addition to the interest and the amount due, to pay, by way of penalty, a sum equal to two per cent per month of such amount of tax, penalty, interest or any other amount due for the period for which payment has been delayed by him after the date on which such amount was due to be paid.

60. Penalty in cases not covered elsewhere.—(1) Whosoever contravenes or fails to comply with, any of the provisions of this Act or the Rules made thereunder or any order or direction made or given thereunder, shall, if no other

penalty is provided under this Act for such contravention or failure, be liable to pay penalty, not exceeding rupees ten thousand subject to a minimum of rupees one thousand.

(2) Where such contravention or failure continues thereafter, the person shall be liable to pay a further penalty of rupees one hundred per day from the due date specified for payment of penalty under sub-section (1).

61. Authority competent to impose penalty.—The Commissioner or the designated officer shall be the competent authority officer to impose penalty under this Act. No penalty shall, however, be imposed, unless the person concerned is afforded an opportunity of being heard by serving a notice.

62. First appeal.—(1) An appeal against every original order passed under this Act or the Rules made thereunder shall lie,—

(a) if the order is made by a Excise and Taxation Officer or by officer-in-charge of the information collection centre or check post or any other officer below the rank of Deputy Excise and Taxation Commissioner, to the Deputy Excise and Taxation Commissioner; or

(b) if the order is made by the Deputy Excise and Taxation Commissioner, to the Commissioner; or

(c) if the order is made by the Commissioner or any Officer exercising the powers of the Commissioner to the Tribunal.

(2) An order passed in appeal by a Deputy Excise and Taxation Commissioner or by the commissioner or any officer on whom the powers of the Commissioner are conferred, shall be further appealable to the Tribunal.

(3) Every order of the Tribunal and subject only to such order, the order of the Commissioner or any officer exercising the powers of the Commissioner or the order of the Deputy Excise and Taxation Commissioner or of the designated officer, if it was not challenged in appeal or revision, shall be final.

(4) No appeal shall be entertained, unless it is filed within a period of thirty days from the date of communication of the order appealed against.

(5) No appeal shall be entertained, unless such appeal is accompanied by satisfactory proof of the prior minimum payment of twenty five per cent of the total amount of tax, penalty and interest, if any.

(6) Notwithstanding anything contained in sub-section (5), if the appellate authority is satisfied that whole of the amount of tax, penalty and interest due from a person is required to be deposited before entertaining an appeal, it may order for the payment of the remaining amount of tax, penalty and interest, as a pre-condition for entertaining the appeal.

(7) In deciding an appeal, the appellate authority, after affording an opportunity of being heard to parties, shall make an order—

(a) affirming or amending or cancelling the assessment or the order under appeal; or

(b) may pass such order, as it deems to be just and proper.

(8) The appellate authority shall pass a speaking order while deciding an appeal and send copies of the order to the appellant and the officer whose order was subject matter of appeal.

63. Appeal to the Tribunal.—(1) A person or authorized officer of the State Government, feeling aggrieved with the order of the Appellate Authority, made under this Act, may file an appeal before the Tribunal.

(2) The appeal can be filed within a period of thirty days from the date of the communication of the order of the first appellate authority.

(3) The Tribunal may, on an application made by the appellant, order the stay of the recovery of the amount involved, subject to the payment of minimum twenty five per cent of the amount and fulfillment of such other conditions, as it may deem necessary.

(4) In deciding an appeal, the Tribunal after affording an opportunity of being heard to the parties, may make an order—

(a) affirming or amending or cancelling the order against which appeal has been filed; or

(b) may pass such order as it deems to be just and proper.

(5) The Tribunal shall pass a speaking order while deciding an appeal and send copies of the order to the appellant and the commissioner.

64. Condonation of delay.—Notwithstanding anything contained in sub-section (4) of Section 62 and Sub-section (2) of Section 63, the appellate authority may, in the interest of justice for the reasons to be recorded in writing, condone delay in cases where appeal is not filed within the stipulated period.

65. Revision.—(1) The Commissioner or designated officer may, at his own motion call for the record of any proceedings, which are pending before or have been disposed of by any authority subordinate to him for the purpose of satisfying himself as to the legality or propriety of such proceedings or order made therein and may pass such order in relation thereto as he may think fit.

(2) A Tribunal, on application made to it against an order of the Commissioner under sub-section (1), within a period of thirty days from the date of communication of the order, may call for and examine the record of any such case and pass such order thereon, as it thinks just and proper.

(3) No application for revision under sub-section (2), shall be entertained unless such application is accompanied by satisfactory proof of the prior minimum payment of twenty five per cent of the total amount of tax, penalty and interest, if any.

(4) No order shall be passed under this section, which adversely affects any person unless such person has been given an opportunity of being heard.

66. Rectification of mistakes.—(1) The Commissioner or a designated officer may, at any time within three years from the date of any order passed by him, not being an order passed under sub-section (2) or sub-section (3) of Section 29 at his own motion, rectify any mistake apparent from the record, and shall within a like period rectify any such mistake, which has been brought to his notice by any person affected by such order :

Provided that no such rectification shall be made, if it has the effect of enhancing the tax or reducing the amount of refund without affording an opportunity of being heard to the effected person.

(2) The Tribunal may *suo-moto* or on a reference from the affected person or the Commissioner or any other officer so authorised by the Commissioner may, consider rectification of an order passed by it. The provision of sub-section (1) shall apply *mutatis mutandis* to the rectification of mistake by the Tribunal.

(3) Where any such rectification has the effect of reducing the amount of the tax or penalty, the Commissioner shall in the prescribed manner, order the refund of the amount so due to such person.

(4) Where any such rectification has the effect of enhancing the amount of the tax or penalty or reducing the amount of the refund, as the case may be, the Commissioner shall make order for the recovery of the amount, due as per provisions of this Act.

67. Bar on appeal against certain orders.—No appeal or revision shall lie against.—

- (a) a notice issued under this Act calling upon a person for audit or assessment or for any other purposes including for recording statements; or
- (b) a notice issued under this Act asking to show cause as to why the penalty for an offence under this Act should not be levied; or
- (c) a notice providing an opportunity of being heard as required under this Act; or
- (d) any order pertaining to seizure or retention of accounts books ; or
- (e) any order issued under Section 74; or
- (f) any order issued under sub-section (1) of Section 87; or
- (g) a direction to maintain certain accounts or furnish certain information, statements, statistics or return; or
- (h) any guidelines formulated, instructions issued or directions given by the Commissioner for carrying out any purposes of this Act.

68. Appeal or revision to High Court.—(1) An appeal or revision shall lie to the High Court from every order passed in appeal or revision by the Tribunal, if the High Court is satisfied that the case involves a substantial question of law.

(2) The Commissioner or a person aggrieved by any order passed by the Tribunal, may file an appeal to the High Court and such appeal shall be

- (a) filed within a period of sixty days from the date on which the order appealed against is received by the aggrieved person or the Commissioner;
- (b) in the form of a memorandum of appeal, precisely stating therein the substantial question of law involved.

(3) Where the High Court is satisfied that substantial question of law is involved in any case it shall formulate that question.

(4) The appeal or revision shall be heard only on the question so formulated, and the respondents shall, at the hearing of the appeal or revision, be allowed to argue that the case does not involve such question.

Provided that nothing in this section shall be deemed to take away or abridge the power of the High Court to hear, for reasons to be recorded, the appeal or revision on any other substantial question of law, not formulated by it, if it is satisfied that the case involves such question.

(5) The High Court shall decide the question of law, so formulated and deliver such judgment thereon containing the grounds on which such decision is founded and may award such cost as it deems fit.

(6) The High Court may determine any issue which—

(a) has not been determined by the Tribunal; or

(b) has been wrongly determined by the Tribunal, by reason of a decision on such question of law as is referred to in sub-section (1).

(7) The payment of any amount, due to be paid by a person, in accordance with the order of the Tribunal in respect of which an appeal has been preferred under this section, shall not be stayed by the High Court pending the final disposal of such appeal, but if such amount is reduced as the result of such appeal, the excess tax, penalty, interest or sum forfeited shall be refunded in accordance with the provisions of Section 39 of this Act.

(8) Save as otherwise provided in this Act, the provisions of the Code of Civil Procedure, 1908 (5 of 1908) relating to appeals to the High Court shall, as far as may be, apply in the case of appeals or revisions under this section.

CHAPTER XII MISCELLANEOUS

69. Returns to be confidential.—(1) Subject to provisions of Section 50, all particulars contained in any statement made, return furnished or accounts or documents produced in accordance with this Act or in any evidence recorded in the course of any proceedings under this Act, other than the proceedings before a Criminal Court, shall, save as provided in sub-section (2) be treated as confidential.

(2) Notwithstanding anything contained in the Indian Evidence Act, 1872 no Court shall, save as aforesaid, be entitled to require any officer of the State Government to produce before it any such statement, return, account, record or document or any part thereof or to give evidence before it in respect thereof.

Nothing in this section shall apply to the disclosure of any of the particulars referred to in sub-section (1) for the purpose of prosecution under the Indian Penal Code, 1860 (Central Act, 45 of 1860) in respect of any such statement, return, accounts, records, documents or evidence or for use of the Excise and Taxation Department of the State or of the officials of the Government of India or any State Government or for the purpose of preparing data by the official of an agency with whom the State Government have entered into a contract.

70. Power to make rules.—(1) The state Government may, by notification in the Official Gazette, make rules for carrying out the purposes of this Act.

(2) The rules under this Act, may be made either with prospective effect or with retrospective effect:

Provided that the rules shall be made under this Act with retrospective effect only, if the same are required to be made in public interest.

(3) Every rule made under this Act shall be laid, as soon as may be, after it is made, before the House of the State Legislature, while it is in session, for a total period of ten days, which may be comprised in one session or in two or more successive sessions, and if, before the expiry of the session in which it is so laid or the successive sessions as aforesaid, the House agrees in making any modification in the rules, or the House agrees, that the rules should not be made, the rules shall thereafter have effect only in such modified form or be of no effect, as the case may be, so however, that any such modification or annulment shall be without prejudice to the validity of anything previously done or omitted to be done under that rule.

71. Court fees on memorandum of appeal and application for revision.—A memorandum of appeal filed under sections 62 and 63, and an application for revision made under section 65, shall bear court fee stamps of such value, as may be prescribed.

72. No time limit for completion of assessment or amended assessment in certain cases.—(1) Notwithstanding the period of limitation provided for assessment or amended assessment in section 29 or in any other provisions of this Act, the assessment or amended assessment may be made at any time in consequence of or to give effect to, any order made by any court or other authority, in exercise of the powers vested in it under the law for the time being in force.

(2) Where the assessment proceedings relating to any person remained stayed under the orders of any Court or other authority for any period, such period shall be excluded in computing the period of limitation for assessment or amended assessment provided under this Act.

73. Assessee permitted to attend through authorized agent.—(1) A person, who is entitled or required to attend before any authority in connection with any proceedings under this Act, may represent through an agent. For the purpose of this section, an agent means a person authorised by the principal in writing to appear on his behalf before a designated officer, the Commissioner or the Tribunal or any other officer appointed by the State Government to assist the Commissioner under sub-section (1) of section 3 being,—

- (a) a relative; or
- (b) a person regularly employed; or
- (c) a legal practitioner, who is entitled to plead in any court of law in India; or
- (d) a bona fide income tax practitioner; or
- (e) a chartered accountant within the meaning of the Chartered Accountants Act, 1949 (38 of 1949), and includes a person who by virtue of the provisions of sub-section (2) of section 226 of the Companies Act, 1956 (1 of 1956), is entitled to be appointed to act as an auditor of companies registered in the State; or
- (f) a retired gazetted officer of the Punjab Excise and Taxation Department, who has an experience of working in any capacity for a minimum period of five years under this Act and/or the repealed Act; provided a period of two years had elapsed since the date of his retirement.

(2) No person, who has been dismissed from Government service, shall be qualified to represent any person under sub-section (1) :

(3) If any practitioner or an agent of a person, is found guilty of misconduct in any proceedings before any authority under this Act by the Commissioner, the Commissioner may order that he shall be disqualified to represent under sub-section (1) :

Provided that no such order shall be made in respect of such person unless he is given an opportunity of being heard.

(4) Any person against whom any order is made under sub-section (3), may appeal to the Tribunal against such order in accordance with the provisions of section 63.

74. Power to call for information.—The Commissioner or any officer, appointed to assist him under sub-section (1) of section 3, may, for carrying out the purposes of this Act, by an order in writing, require any person, including a banking company, Railways, Post Office or any officer thereof to furnish any information or statement, useful for or relevant to any proceeding under this Act.

75. Delegation of powers.—Subject to such conditions, as may be prescribed, the Commissioner may, by an order in writing, delegate any of his powers under this Act, to any officer appointed under sub-section (1) of section 3 to assist him :

Provided that the powers conferred upon the Commissioner specifically by the State Government, shall not be delegated.

76. Information to be furnished regarding change of business.—If any taxable person or registered person—

- (a) sells or otherwise disposes of his business or acquires a new place of business; or place of business; or
- (b) discontinues or transfers his business or changes his place of business; or
- (c) changes the name, constitution or nature of his business; or
- (d) wants to make any change in the class or classes of goods dealt by him,

he shall, inform the designated officer in the prescribed manner, and, if any such person dies, his legal representative shall in the like manner, inform the said authority.

77. Transfer of business.—Where the ownership of the business of a person is entirely transferred and the transferee carries on such business either in the same name or in some other name, the transferee shall for all the purposes of this Act, be deemed to be and to have always been registered as if, the registration of such person had initially been granted to the transferee; and the transferee shall on application to the designated officer, be entitled to have the registration amended accordingly in the prescribed manner.

78. Liability to tax on stock in certain cases.—Notwithstanding anything to the contrary contained in this Act, a person whose registration has been cancelled, shall be liable to pay tax on the unsold stock, held on the date of cancellation, as per the provisions of this Act.

79. Liability of partners.—(1) Notwithstanding anything contained in the Indian Partnership Act, 1932 or any agreement to the contrary, where any firm is liable to pay tax under this Act, the firm and each of the partners of the firm, shall

be jointly and severally liable for such payments and accordingly any notice or order under this Act, may be served on any person, who was a partner during the relevant time whether or not the firm has been dissolved and all the provisions of this Act shall apply accordingly.

(2) Where any such partners retires from the firm, he shall be liable to pay the tax, penalty, sum forfeited and interest remaining unpaid at the time of his retirement and any such amount due up to the date of retirement, though unassessed on that date.

80. Liability to pay tax in case of death— (1) Where a person, liable to pay tax under this Act, dies then—

- (a) if the business carried on by that person is continued after his death by his legal representative or any other person, such legal representative or other person shall be liable to pay tax including any penalty, sum forfeited and interest due from such person under this Act or under the repealed Act, in the like manner and to the same extent as the deceased person was; and
- (b) if the business carried on by the person is discontinued whether before or after his death, his legal representative shall be liable to pay out of the estate of the deceased, in the like manner and to the same extent as the deceased person would have been liable to pay, if he had not died, the tax including any penalty, sum forfeited and interest due from such person under this Act or under the repealed Act, whether such tax including any penalty, sum forfeited and interest has been assessed before his death, but has remained unpaid, or is assessed after his death.

(2) Where a person, liable to pay tax under this Act, is a Hindu Undivided Family and the joint family property is apportioned amongst the various members or group of members, then each member or group of members shall be jointly and severally liable to pay the tax including any penalty, sum forfeited and interest due from the person under this Act or under the repealed Act, up to the time of the partition, whether such tax including any penalty, sum forfeited and interest has been assessed before partition, but has remained unpaid, or is assessed after partition.

(3) Where a person liable to pay tax under this Act, is a firm, and the firm is dissolved, then every person who was a partner, shall be jointly and severally liable to pay to the extent to which he is liable under this section, the tax including any penalty, sum forfeited and interest due from the firm under this Act or under the repealed Act, up to the time of dissolution, whether such tax including any penalty, sum forfeited and interest has been assessed before such dissolution, but has remained unpaid or is assessed after dissolution.

(4) Where a person, liable to pay tax under this Act, transfers or otherwise disposes of his business in whole or in part, or effects any change in the ownership thereof, in consequence of which he is succeeded in the business or part thereof by any other person, then both the persons shall jointly and severally be liable to pay the tax including any penalty, sum forfeited and interest due from the person under this Act or under the repealed Act, up to the time of such transfer, disposal or change, whether such tax including any penalty, sum forfeited and interest has been assessed before such transfer, disposal or change, but has remained unpaid, or is assessed thereafter.

(5) Where the person, liable to pay tax under this Act—

- (a) is the guardian of a ward on whose behalf the business is carried out by the guardian; or
- (b) is trustee, who carries on the business under a trust for the beneficiary, then—

if the guardianship or the trust is terminated, the ward or, as the case may be, beneficiary, shall be liable to pay the tax including any penalty, sum forfeited and interest due from the person up to the time of the termination of the guardianship or trust, whether such tax including any penalty, sum forfeited and interest has been assessed before the termination of the guardianship or trust, but has remained unpaid, or is assessed thereafter.

(6) Where a person is liable to pay tax under this Act, is succeeded in the business by any person in the manner described in clause (a) of sub-section (1) or in sub-section (4), then such a person shall be liable to pay tax on the sales or purchases of goods, made by him on and after the date of such succession and shall, unless he already holds a registration, apply for registration within a period of sixty days from the date of such succession.

81. Certain agents liable to pay tax for sales behalf of Principal.—(1) Where any person sells or purchases any taxable goods on behalf of his principal, any taxable goods despatched to/by him from/to outside the State, then such person and his principal, shall both be jointly and severally liable to pay tax on the turnover of such sales or purchases.

(2) If the principal, on whose behalf the Commission agent has sold or purchased any goods, shows to the satisfaction of the Commissioner that the tax has been paid by such Commission agent on such goods under sub-section (1), the principal shall not be liable to pay the tax again in respect of the same transaction.

(3) Where a manager or an agent of a non-resident person sells or purchases any goods on behalf of a non-resident person in the State, then the non-resident person and the manager or agent residing or working in the State, shall be jointly and severally liable to pay tax on the turnover of such sales or purchases :

Provided that, if the non-resident person shows to the satisfaction of the Commissioner that the tax payable in respect of such sale or purchase has been paid by the manager or agent residing in the State, then the non-resident person shall not be liable to pay tax in respect of the same transaction.

82. Amalgamation of companies.—(1) When two or more companies are to be amalgamated by the order of a Court or of the Central Government and the order is to take effect from a date earlier to the date of the order, and such companies have sold or purchased any goods to or from each other in the period commencing on the date from which the order is to take effect, and ending on the date of the order, then such transactions of sale or purchase shall be included in the turnover of the sales or of the purchases of the respective companies and will be assessed to tax accordingly.

(2) Notwithstanding anything contained in the said order, for all purposes of this Act, the said two or more companies shall be treated as distinct companies and shall be treated as such for all periods up to the date of the said order and the registration of the said companies under this Act shall be cancelled with effect from the date of the said order.

(3) The words and expressions used in this section, but not defined, shall have the respective meanings assigned to them in the Companies Act, 1956 (1 of 1956).

83. Liability in case of company, firm or society in liquidation.—(1) Every person—

- (a) who is a liquidator of any company, firm or society, which is being wound up whether under the orders of a Court or otherwise; or
- (b) who has been appointed as receiver of any assets of a company (hereinafter referred to as the “liquidator”), shall within thirty days after he has become such liquidator, give notice of his appointment as such to the Commissioner or the designated officer.

(2) The Commissioner or the designated officer shall, after making such inquiries or calling for such information, as he may deem fit, notify the liquidator within three months from the date on which he received notice of appointment of the liquidator, the amount which in the opinion of the Commissioner or the designated officer, would be sufficient to provide for any tax, interest or penalty, which is then, or is likely thereafter, to become payable by the company.

(3) Notwithstanding anything contained in the Companies Act, 1956, when any private company is wound up and any tax, interest or penalty assessed under this Act on the company for any period, whether before or in the course of or after its liquidation, cannot be recovered, then every person, who was a director of the private company at any time during the period for which the tax is due, shall be jointly and severally liable for the payment of such tax, interest or penalty, unless such person proves to the satisfaction of the Commissioner or the designated officer that non-recovery cannot be attributed to any gross neglect, misfeasance or breach of duty on his part in relation to the affairs of the company.

Explanation.—For the purpose of this section, the expression ‘private company’ shall have the meaning assigned to it under section 3 of the Companies Act, 1956 (1 of 1956)

84. Provisions in case of inter-State trade.—Notwithstanding anything contained in this Act, a tax on the sale or purchase of goods shall not be imposed under this Act,—

- (a) where such sale or purchase takes place outside the State; or
- (b) where such sale or purchase takes place in the course of inter-State trade or commerce; or
- (c) where such sale or purchase takes place in the course of import of the goods into or export of the goods out of the territory of India :

Provided that the last sale or purchase of any goods preceding the sale or purchase occasioning the export of such goods out of the territory of India, shall also be deemed to be in the course of such export, if such last sale or purchase takes place after making an agreement or order for such export.

85. Determination of disputed questions.—If any question arises, otherwise than in proceedings before a Court or before the commencement of assessment of a person under section 29, whether or not, for the purpose of this act,—

- (a) any person, society, club or association or any firm or any branch or department of any firm, is a person; or
- (b) any particular thing done to any goods amounts to or results in the manufacture of goods, within the meaning of that term; or
- (c) any transaction is a sale or purchase or where it is a sale or purchase, the sale price or the purchase price, as the case may be, thereof; or
- (d) any purchase person is required to be registered; or
- (e) in the case of any person liable to pay tax, any tax is payable by such person in respect of any particular sale or purchase or if, tax is payable, the rate thereof; or
- (f) input tax credit can be claimed on any particular transaction of purchase and if, it can be claimed then what are the conditions and restrictions subject to which, such credit can be claimed; or

- (g) any other question, as may be raised relating to the procedures and processes under this Act or the Rules made thereunder, the Commissioner shall, subject to the provisions of this Act and the Rules framed thereunder, make an order determining such question.

Explanation.—

- (1) For the purposes of this section, the assessment of the person shall be deemed to have commenced under section 29 when the person is served with any notice by the designated officer.
- (2) The Commissioner may direct that the determination shall not affect the liability of any person under this Act, in respect of any sale or purchase, effected prior to the determination.
- (3) If any such question arises from any order already passed under this Act or the repealed Act, no such question shall be entertained for determination under this section, but such question may be raised in appeal against such order.

86. Power to seek assistance from police officer or other officer.—An officer exercising the power under this Act, may take the assistance of any police officer or other officer of the State Government, as and when required and upon such request for assistance being made, the police officer or the other officer, shall render necessary help in accordance with law.

87. Power to summon witness and production of records.—(1) In exercising the functions conferred on it by or under this Act, the Tribunal or the Commissioner or the officers appointed under sub-section (1) of section 3, to assist the Commissioner, shall have all the powers conferred on a Civil Court under the provisions of the Civil Procedure Code, 1908 (Central Act 5 of 1908) in respect of the following matters, namely:—

- (a) summoning and enforcing the attendance of any person and examining him on oath or affirmation;
- (b) compelling the production of documents and impounding them;
- (c) proof of facts by affidavits; and
- (d) issuing commissions for examination of witnesses.

(2) In the case of an affidavit, any officer appointed under sub-section (1) of section 3, may administer the oath to the deponent.

(3) Any proceeding under this Act before the Tribunal or the Commissioner or any person appointed to assist the Commissioner under sub-section (1) of section 3, shall be deemed to be “judicial proceedings” within the meaning of sections 193 and 228 of the Indian Penal Code, 1860 (Central Act 45 of 1860) and for the purposes of Section 199 of that Code.

88. Bar on certain proceedings.—No assessment made and no order passed under this Act or the rules made thereunder, shall be called into question in any Civil Court.

89. Indemnity.—No suit, prosecution or other legal proceedings shall lie against any officer or servant of the State Government for anything which is in good faith done or intended to be done under this Act or the rules made thereunder.

90. Burden of proof.—The burden of proving that any sale or purchase, effected by a person, is not liable to tax under this Act or to prove entitlement for input tax credit on any purchase, shall be on such person.

91. Power to remove difficulties.—(1) If any difficulty arises in giving effect to any of the provisions of this Act, the State Government may, by order published in the Official Gazette, make such provision not inconsistent with the provisions of this Act, as may appear to be necessary for removing the difficulty:

Provided that no order shall be made under this section after the expiry of a period of two years from the date of commencement of this Act.

(2) Every order made under this section, shall be laid, as soon as may be, after it is made, before the Legislative assembly.

CHAPTER—XIII

REPEAL AND SAVING

92. Repeal and saving of Punjab Act, 46 of 1948.—(1) With effect from the date of coming into force of this Act, the Punjab General Sales Tax Act, 1948 (Punjab Act 46 of 1948), shall stand repealed.

(2) The repealing of the Act under sub-section (1) shall not,—

- (a) revive anything not in force or existing at the time when the repeal takes effect; or
- (b) affect the previous operation of the repealed Act or anything done or suffered thereunder; or
- (c) affect any obligation, or liability acquired, accrued or incurred under the repealed Act; or
- (d) affect any penalty, forfeiture or punishment incurred or inflicted in respect of any offence or violation committed under the provision of the repealed Act; or

- (e) affect any investigation, enquiry, assessment, proceeding, any other legal proceeding or remedy instituted, continued or enforced under the repeal Act,

and any such penalty, forfeiture or punishment or any proceeding or remedy instituted, continued, or enforced under the repealed Act, shall be deemed to be instituted, continued or enforced under the corresponding provisions of this Act.

(3) Notwithstanding such repeal,—

- (a) the provisions of Sections 10A, 10B and 30A of the repealed Act and the rules framed thereunder relating to tax concessions to industrial units and assessment thereof, shall remain in force subject to the exceptions, restrictions and conditions, as may be notified by the State Government from time to time;
- (b) all rules made and notification issued under the provisions of the repealed Act and/or rules made thereunder and in force on the date of the commencement of this Act, shall remain in force, unless such rules and notifications are superseded in express terms or by necessary implication by the provisions of this Act or the rules made and notifications issued thereunder;
- (c) any reference to any section of the repealed Act in any rule or notification, shall be deemed to refer to the relevant corresponding section of this Act, until necessary amendments are made in such rule or notification;
- (d) the limitations provided in this Act, shall apply prospectively, and all events occurred and all issues, which arose prior to the date of commencement of this Act, shall be governed by the limitations provided or the provisions contained in the repealed Act;
- (e) anything done or any action taken under the act so repealed (including any notification, order, notice issued, application made, or permission granted), which is not inconsistent with the provisions of this Act, shall be deemed to have been done or taken under the corresponding provisions of this Act as if, this Act was in force at the time when such thing was done, or action was taken, and shall continue to be in force, unless and until superseded by anything done or any action taken under this Act ;
- (f) any reference to any provisions of the repealed Act by this Act to an officer, authority or Tribunal shall, for the purposes of carrying into effect the provisions contained in this section, be construed as reference to the corresponding officer, authority or Tribunal, appointed or constituted by or under this Act; and if any question arises as to who such corresponding officer, authority or Tribunal is, then the matter shall be referred to the State Government and the decision of the State Government thereon shall be final; and
- (g) if any difficulty arises in giving effect to the provisions of this section, the State Government may, by general or special order published in the Official Gazette, do anything not inconsistent with such provisions which appears to it to be necessary or expedient, keeping in view the context of the subject matter.

93. Transitional provisions.—(1) A person, who would have continued to be liable to pay tax under the repealed Act, had this Act not come into force, shall be deemed to be registered under this Act, till a fresh registration is granted to him under this Act or till a period of sixty days expires from the date of the appointed day, whichever is earlier.

(2) Notwithstanding anything contained in this Act,—

- (a) for the purposes of the levy, assessment, reassessment, appeal, revision, review, rectification, reference, registration, collection, refund or credit of input tax, or allowing benefit of exemption or deferment of tax, imposition of any penalty or of interest or forfeiture of any sum, which relates to any period ending before the appointed day or for any other purpose whatsoever connected with or incidental to any of the purposes aforesaid, and whether or not, the tax, penalty, interest or sum forfeited, if any, in relation to such proceedings, is paid before or after the appointed day, the repealed Act and all rules, regulations, orders, notifications, forms and notices issued thereunder and in force immediately before the appointed day shall, in so much as they apply, shall continue to have effect, till the conclusion of proceedings;
- (b) any person appointed as Commissioner or any person appointed to assist the Commissioner under the repealed Act and continuing in office as such immediately before the appointed day, shall, on and from the appointed day, be deemed to have been appointed under this Act and shall continue in office as such, till such person ceases to be the Commissioner or ceases to be the person appointed to assist the Commissioner;
- (c) the Presiding Officer of the Sales Tax Tribunal, appointed under the repealed Act and continuing in office as such, immediately before the appointed day, shall on and from the appointed day, be deemed to have been appointed as the Chairman of the Tribunal under this Act and shall continue in office as such, till the Constitution of the Tribunal under this Act or till he ceases to be such Presiding Officer (Chairman) as per the terms and conditions under the repealed Act, whichever is earlier;
- (d) any order or notification delegating any power or conferring any jurisdiction under the repealed Act or the repealed rules, by the State Government or the Commissioner to any person appointed by any designation, under sub-section (1) of section 3 of the repealed Act to assist him before the appointed day and continuing

- in force on the day immediately before the appointed day, shall with effect from such appointed day, continue in force until the State Government or the Commissioner amends, varies or rescinds such order after such appointed day under this Act;
- (e) any accounts, registers or documents of any person, seized before the appointed day under any of the provisions of the repealed Act and not returned till the day, immediately before such appointed day, shall continue to be retained in accordance with the provisions of such Act;
- (f) any goods seized or detained before the appointed day under any of the provisions of the repealed Act or the repealed rules and not released before such appointed day, shall continue to remain seized, until such goods are released in accordance with the provisions of such Act;
- (g) all forms or declarations under the repealed Act or the repealed rules and continuing in force on the day immediately before the appointed day shall, with effect from such appointed day, and continue in force and shall be used *mutatis mutandis* for the purposes for which those were being used before such appointed day, until the State Government directs by notification, the discontinuance of the use of such forms, till such time, as the State Government may, specify in this behalf;
- (h) any tax assessed, deferred, interest determined or penalty imposed under the repealed Act in respect of the sales or purchases made or in respect of the tax payable or in respect of the contravention of any provision of the repealed Act before the appointed day, shall be payable or recoverable in accordance with the provisions of the repealed Act;
- (i) a person liable to furnish return under the repealed Act, immediately before the appointed day shall, notwithstanding that a period in respect of which, he is so liable to furnish return, begins on any day before such appointed day and ends on any day after such appointed day, furnish such return in respect of the tax, payable for sales or purchases made up to the day immediately before such appointed day and pay tax in accordance with the provisions of repealed Act, and shall furnish a separate return in respect of the remaining part of the period, which commences on such appointed day and pay tax due on such return for sales or purchases, made on and from such appointed day in accordance with the provisions of this Act; and
- (j) any prescribed declaration/form, obtained or obtainable by the person from any designated officer or any declaration, furnished or to be furnished by or to the person under the repealed Act or the rules made thereunder in respect of any sale of goods before the appointed day, shall be valid where such declaration/form is furnished on or after such appointed day.

94. Repeal of Punjab Ordinance 5 of 2005.—The Punjab Value Added Tax Ordinance, 2005 (Punjab Ordinance 5 of 2005), is hereby repealed.

"SCHEDULE-A"

(See section 16)

LIST OF TAX FREE GOODS

Serial No.	Name of Commodity
1.	2.
1.	Agricultural implements and parts thereof as per detail given below :—
(A)	Ordinary Agricultural Implements
(1)	Hand/Hoe or Khurpa
(2)	Sickle
(3)	Spade
(4)	Baguri
(5)	Hand-wheel-Hoe
(6)	Horticultural tools like budding, grafting knife, secateur, pruning shear or hook, hedge shear, sprinkler, rake.
(7)	Sprayer, duster and sprayer-cum-duster
(8)	Soil injector
(9)	Jandra
(10)	Wheel Borrow
(11)	Winnowing fan or winnower

1. 2.

- (12) Dibbler
 - (13) Gandasa
 - (14) Puddler
 - (15) Fertilizer seed broadcaster
 - (16) Maize sheller
 - (17) Ground-nut dcoorticator
 - (18) Manure or seed screen
 - (19) Flame Gun
 - (20) Seed grader
 - (21) Hand driven chaff-cutter
 - (22) Tasla
 - (23) Tangli
 - (B) Animal Driven agricultural Implements**
 - (1) Yoke
 - (2) Plough
 - (3) Harrow and its following parts :—
 - (i) Harrow frame
 - (ii) Harrow spool
 - (iii) Harrow axle
 - (iv) Harrow scrappers
 - (v) Harrow draw bar
 - (vi) Harrow draw bar 'U'
 - (vii) Harrow clamp
 - (viii) Harrow handle
 - (ix) Harrow clutch
 - (x) Harrow pathala
 - (4) Cultivator or triphali
 - (5) Seed drill, fertilizer drill, seed-cum-fertilizer drill
 - (6) Planter
 - (7) Plank or float
 - (8) leveller or scoop
 - (9) Ridger
 - (10) Ditcher
 - (11) Bund former
 - (12) Thrasher or Palla
 - (13) Transplanter
 - (14) Chaff-cutter
 - (15) Persian wheel and bucket chain or washer chain
 - (16) Cart and its following parts :—
 - (i) ADV rims
 - (ii) ADV axle
 - (iii) Draw bar
 - (iv) Hook
 - (17) Reaper
 - (18) Mower
 - (19) Sugar-cane crusher
 - (20) Cane juice boiling pan and grater
 - (21) Roller
-

1.	2.
----	----

(C) Camel drawn cart**(D) Tractor driven agricultural Implements****(1) Plough and its following parts :—**

- (i) Mould board plough assembly
- (ii) Disc Plough covers
- (iii) Disc Plough hubs
- (iv) Disc Plough wheels
- (v) Disc Plough shoes
- (vi) Disc Plough bracket cap
- (vii) Disc Plough bracket
- (viii) Disc Plough assembly scrapper
- (ix) Disc Plough bracket scrapper
- (x) Disc Plough bracket furrow wheel
- (xi) Disc Plough assembly axle
- (xii) Disc Plough spring cap
- (xiii) Disc Plough assembly spindle and dust cap
- (xiv) Disc Plough furrow wheel

(2) Harrow and its following parts :—

- (i) Harrow frame
- (ii) Harrow spool
- (iii) Harrow bush
- (iv) Harrow C.I. nut and chunk nut
- (v) Harrow hub
- (vi) Harrow axle
- (vii) Harrow nipple bolt
- (viii) Harrow lock patti
- (ix) Harrow scrapper
- (x) Harrow draw bar
- (xi) Harrow draw bar "U"
- (xii) Harrow clamp
- (xiii) Harrow handle
- (xiv) Harrow clutch
- (xv) Harrow pants

(3) Cultivators or tiller and its following parts :—

- (i) Tiller tyne assembly
- (ii) Tiller tyne
- (iii) Tiller spring
- (iv) Tiller shovel/phalla
- (v) Tiller tyne assembly
- (vi) Tiller anchor pin
- (vii) Tiller toggle assembly
- (viii) Tiller Link Pin
- (ix) Tiller tyne stop
- (x) Tiller assembly tool bar
- (xi) Tiller 3 point linkage
- (xii) Tiller twist patti
- (xiii) Tiller angle bracket
- (xiv) Tiller frame front and rear

1. 2

(4) Seed Drill, fertilizer drill or seed-cum-fertilizer drill and its following parts :—

- (i) Seed drill tyne
- (ii) Seed drill shovel/phalla
- (iii) Seed drill grani
- (iv) Seed drill feeder (pistol)
- (v) Seed drill spout
- (vi) Seed drill hopper assembly
- (vii) Seed drill ground wheel

(5) Fertilizer broadcaster

(6) Planter

(7) Plank or float

(8) Leveller or scoop and its following parts :—

- (i) Leveller frame assembly
- (ii) Leveller blade
- (iii) Leveller main frame

(9) Bound former

(10) Ridger and its following parts :—

- (i) Ridger tyne
- (ii) Ridger shoes
- (iii) Ridger shovel/phalla

(11) Traller and its following parts :—

- (i) ADV Rims
- (ii) ADV Axles
- (iii) Trailer draw bar
- (iv) Trailer hook

(12) Punddler

(13) Ditcher

(14) Cage wheel

(15) Sprayer, duster or sprayer-cum-rotovator

(16) Roller

(17) Hoe, rotary hoe or rotovator

(18) Reaper or mower, harvester

(19) Potato harvester or spinner

(20) Groundnut digger shaker

(21) Transplanter

(E) Power implements

(1) Thrasher and its following parts :—

- (i) Thrasher
- (ii) Thrasher jail
- (iii) Thrasher sieve set
- (iv) Thrasher 'U' clamp and beater
- (v) Thrasher rotor
- (vi) Thrasher ground wheels

(2) Chaff curter

(3) Maizer sheller

(4) Groundnut decorticator

(5) Seed grader

(6) Winnower

1.	2.
(7)	Seed treater
(8)	Power sprayer or duster
(9)	Poultry feed grinder and mixer
(10)	Transplanter
2.	Aids and implements used by handicapped persons
3.	All types of bangles excluding those made of precious metals
4.	Aquatic feed, poultry and cattle feed including feed supplements, grass, hay and straw
5.	Betel leaves
6.	Books, periodicals and journals including maps, charts and globes
7.	Bread
8.	Charcoal
9.	Charkha, Ambar Charkha, handlooms and handloom fabrics and Gandhi Topi
10.	Coarse grains other than paddy, rice and wheat
11.	Condoms and contraceptives.
12.	Crudely tanned leather and desi jutties made thereof
13.	Curd, Lassi, butter milk
14.	Earthen pots
15.	Electrical energy
16.	Fertilizers including bio-fertilizers and organic fertilizers, gypsum, pesticides, weedicides, insecticides and fungicides.
17.	Firewood except casurina and calyptus timber
18.	Fishnet, fishnet fabrics and fish seeds
19.	Fresh milk, pasteurized milk and separated milk other than covered by Entry 55 of Schedule B
20.	Fresh plants, saplings and fresh flowers
21.	Fresh vegetables and fruits
22.	Garlic and ginger
23.	Green Tea
24.	Goods taken under customs bond for re-export after manufacturing or other wise
25.	Gur and jaggery
26.	Hawan Samagri
27.	Human blood and blood plasma
28.	Husk of pulses
29.	Indigenous handmade musical instruments
30.	Khadi garments, Khadi goods and made ups
31.	Kirpan
32.	kumkum, bindi, alta and sindhoor
33.	Liquor sold against licenses L-1A, L-2, L-2A, L-2B, L-3, L-3A, L-4, L-4A, L-5, L-5A, L-5B, L-5C, L-9, L-12A, L-12C, L-13, L-13A, L-14, L-14A, L-14AA or/and L-14B issued under Punjab Excise Act, 1914: Provided that VAT has been paid in the State of Punjab.
34.	Meat, fish prawn and other aquatic products when not cured or frozen, eggs, livestock and animal hair
35.	Misri, Patasha, Fullian, Makhana and Chirbara
36.	National flag
37.	Non-branded Atta, Maida, Suzi and Besan.
38.	Non-judicial stamp paper sold by Government Treasuries; postal items like envelope and post card sold by Government; rupee note, when sold to the Reserve Bank of India and cheques either in loose or book form
39.	Organic manure
40.	Pappad
41.	Rakhi
42.	Raw wool and its waste

1. 2

43. Sales made by Canteen Stores Department to serving military personnel and ex-servicemen directly or through unit run canteens
44. Salt of all kinds including processed and branded salts
45. Seeds of all kinds except oil seeds
46. Semen including frozen semen
47. Silk worm laying cocoon and raw silk and its waste
48. Slate and slate pencils and chalks
49. Sugar and Khandsari
50. Sweetmeats (Halwai goods only)
51. Tender green coconut
52. Textile fabric including terry towels
53. Tabacco
54. Toddy, Neera and Arak
55. Wan
56. Water other than aerated, mineral, distilled, medicinal, tonic, battery, demineralised water and water sold in sealed container
57. Wheat bran".

3. For the said Schedule 'B', including the List of Industrial Inputs and Packing Materials appended thereto, the following Schedule and List shall be substituted, namely:—

"SCHEDULE-B

(See Section 8)

LIST OF GOODS TAXABLE @ 4 Per cent

Serial No.	Name of Commodity
1.	Agricultural implements and parts thereof other than those mentioned in schedule A
2.	Areca nut powder and betel nut
3.	Bamboo
4.	Bearings of all types
5.	Bed sheets, pillow covers and other made ups
6.	Beedi leaves
7.	Beltings of all varieties and descriptions
8.	Bicycles, tricycles, cycle rickshwas, tyres and tubes and parts thereof
9.	Biomass briquettes
10.	Bitumen
11.	Bone meal
12.	Branded atta, maida, suji and besan
13.	Bricks of all kinds including fly ash bricks, refractory bricks and asphaltic roofing earthen tiles
14.	Buckers made of iron and steel, aluminum, plastic or other materials excluding those made of precious materials
15.	Candles
16.	Capital goods i.e. Plant and Machinery but excluding the goods on the sale of which a taxable person is not entitled for input tax credit under sub-section 5 of section 13 of the Act.
17.	Castor oil
18.	Centrifugal, mono block and submersible pump sets and parts thereof
19.	Clay including fireclay, fine china clay and ball clay
20.	Coal tar
21.	Coffee beans and seeds, cocoa pod and chicory
22.	Coir and Coir products, excluding coir mattresses
23.	Combs
24.	Communication equipments such as, Private Branch Exchange (P.B.X.) and Electronic Private Automatic Branch Exchange (E.P.A.B.X)
25.	Computer stationary
26.	Cottage cheese (Paneer)
27.	Cotton and cotton waste
28.	Crucibles

1.	2.
29.	Cups and glasses of paper and plastic
30.	Declared goods as specified in Section 14 of the Central Sales Tax Act, 1956 except those included in any other schedule.
31.	Drugs and medicines including vaccines, syringes and dressing, mediated ointments produced under drugs license, light liquid paraffin of IP grade, medical equipments/devices and implants.
32.	Dry fruits
33.	Edible oils
34.	Electrodes
35.	Embroidery or zari articles, that is to say, - imi, zari, Kasab, saima, dabka, chumki, gota stiara, naqsi, kora, glass bead and badla
36.	Exercise books, graph books and laboratory note books
37.	Feeding bottles and nipples
38.	Ferrous and non-ferrous metals and alloys; non-metals such as aluminum, copper, zinc, and extrusions of these
39.	Fibres of all types and fibre waste
40.	Fly ash
41.	Fried and roasted grams and groundnuts
42.	Hand pumps, spare parts and fittings thereof
43.	Hand Tools
44.	Handicrafts
45.	Hardware of iron and steel (not enameled or plated)
46.	Herb, bark, dry plant, dry root, commonly known as jari booti and dry flower
47.	Hing (asafoetida)
48.	Honey
49.	Hosepipes and fittings thereof
50.	Hosiery goods
51.	Hurricane lanterns
52.	Husk and bran of cereals
53.	Ice
54.	Imitation jewellery and sunthetic gems
55.	Incense sticks commonly known as agarbatti, dhupkathi or dhupbatti
56.	Industrial cables (High Voltage cables, PVC or XPLE insulated wires and cables, jelly filled cables, optical fibres)
57.	Insulators
58.	Industrial inputs and packing materials (as per list appended to the Schedule)
59.	Intangible goods of all kinds like copyright, patent and rep license.
60.	IT products including computer, telephone, cell phones, Digital Video Disk and Compact Disk, Teleprinter and Wireless Equipment and parts thereof
61.	Kattha
62.	Kerosene lamps/lantern petromax and glass chimney
63.	Kerosene oil sold through PDS
64.	Knitting wool and knitting needles
65.	Lac and shellac
66.	Leaf plates and cups
67.	Lignite
68.	Lime, Lime stone, Clinker and dolomite
69.	Linear alkyl benzene, L.A.B Sulphonic Acid, Alfa Olefin Sulphonate
70.	Metal Castings
71.	Milk when purchased for use in manufacture of any goods other than tax free goods
72.	Moulded plastic footwear, Hawai chappals and straps thereof
73.	Murmuralu, pclalu, atukulu, puffed rice and muri
74.	Napa slabs (Rough flooring stones) and Shahbad stones
75.	Newars
76.	Non-mechanized boats used by fishermen for fishing
77.	Nuts, bolts, screws, fasteners and nails
78.	Oil cake, de-oiled cake and de-oiled rice-bran
79.	Oil seeds
80.	Paddy, rice, wheat and pulses

1.	2.
81.	Paper, Paper Board and Newsprint
82.	Pipes and pipes fittings of all varieties including G.I. pipes, C.I. pipes, ductile pipes and PVC
83.	Pizza bread
84.	Plastic footwear
85.	Plastic granules, plastic powder and master batches
86.	Printed material including diary and calendar
87.	Printing ink excluding toner and cartridges.
88.	Processed fruits, vegetables including fruit jams, jelly, pickle, fruit squash, paste, fruit drink and fruit juice juice (whether in sealed container or otherwise)
89.	Processed meat poultry and fish
90.	Pulp of bamboo, wood and paper
91.	Railway wagons, engines, coaches and parts thereof
92.	Readymade garments
93.	Refractory monolithic
94.	Renewable energy devices and spare parts
95.	Residues of starch manufacture and similar residues, beet-pulp, bagasse and other waste of sugar manufacture, brewing or distilling dregs and waste whether or not in the form of pellets excluding molasses
96.	Rice bran
97.	River sand
98.	Roasted or fried grams and groundnut
99.	Safety matches
100.	Sales made to Government of India or State Government against declaration in form 'D' as provided for under the Central Sales Tax Act, 1956
101.	Sales made to P.S.E.B. for generation, transmission and distribution of electrical energy against a certificate duly filled and signed by the competent authority
102.	School Bags
103.	Scrap, parings and waste of metals, non-metals, glass and plastic
104.	Sewing machines and parts thereof
105.	Ship and other water vessels
106.	Silk fabrics excluding handloom silks
107.	Skimmed milk powder and UHT milk
108.	Solvent oils other than organic solvent oil
109.	Spices of all varieties and forms including cumin seed, aniseed, turmeric and dry chillies
110.	Spectacles, parts and components thereof, contact lens and lens cleaners
111.	Sports goods including exercise and multi gym equipments, accessories and parts thereof, sports apparel, football shoes and spikes
112.	Stainless steel sheets
113.	Starch
114.	Sugarcane
115.	Sulphur of all kinds, other than sublimed sulphur, precipitated sulphur and colloidal sulphur
116.	Tamarind seed and powder
117.	Tea excluding green tea
118.	Toys excluding electronic toys
119.	Tractors and harvesters and attachments and parts thereof
120.	Transformers
121.	Transmission towers
122.	Umbrella except garden umbrella
123.	Unbranded bhujia and namkeen
124.	Unbranded washing soap
125.	Utensils of all kinds including pressure cookers and pans excluding utensils made of precious metals
126.	Vanaspati (Hydrogenated Vegetable Oils)
127.	Vegetable oils including gingili oil and bran oil
128.	Waste paper
129.	Wet dates and porridge
130.	Windmill for water pumping and for generation of electricity
131.	Wooden crates

1.	2
132.	Writing ink
133.	Writing instruments, geometry boxes, colour boxes, crayons and pencil sharpeners
134.	Yarn of all types, including yarn waste and sewing thread
135.	Zippers

LIST OF INDUSTRIAL INPUTS AND PACKING MATERIALS
(SEE ENTRY NUMBER 58 OF SCHEDULE-B)

S.No.	Heading No.	Description
1	2	3
1.	1516.00.00	Animal (including fish) fats and oils, (crude, refined or purified).
2.	1518.00.40	Animals or vegetable fats boiled, oxidised, dehydrated, sulphurised, blown, polymerised by heat in vacuum or in inert gas or otherwise chemically modified; inedible mixtures or preparations of fats and oils of this chapter
3.	1520.00.00	Glycerol, Crude, Glycerol Waters and Glycerol lyes
4.	1521.00.00	Vegetable waxes (other than triglycerides), beeswax, other insect waxes and spermaceti, whether or not refined or coloured;
5.	1522.00.00	Degras; residues resulting from the treatment of fatty substances or animal or vegetable waxes
6.	1702.00.00	Liquid glucose (non-medicinal)
7.	2102.00.00	Yeasts (Active or Inactive); other single cell micro-organism, dead (but not including vaccines of headings 3002); prepared baking powder
8.	2207.20.00	Denatured ethyl alcohol of any strength
9.	2601.00.00	Iron ores and concentrates, including roasted iron pyrites
10.	2602.00.00	Manganese ores and concentrates, including ferruginous manganese ores and concentrate with a manganese content of 20% or more, calculated on the dry weight
11.	2603.00.00	Copper ores and concentrates
12.	2604.00.00	Nickle ores and concentrates
13.	2605.00.00	Cobalt ores and concentrates
14.	2606.00.00	Aluminium ores and concentrates
15.	2607.00.00	Lead ores and concentrates
16.	2608.00.00	Zinc ores and concentrates
17.	2609.00.00	Tin ores and concentrates
18.	2610.00.00	Chromium ores and concentrates
19.	2611.00.00	Tungsten ores and concentrates
20.	2612.00.00	Uranium or Thorium ores and concentrates
21.	2613.00.00	Molybdenum ores and concentrates
22.	2614.00.00	Titanium ores and concentrates
23.	2615.00.00	Niobium, Tantalum, Vanadium or Zirconium ores and concentrates
24.	2616.00.00	Precious metal ores and concentrates
25.	2617.10.00	Other ores and concentrates
26.	2618.00.00	Granulated slag (slag sand) from the manufacture of Iron or steel
27.	2714.90.20	Bitumen
28.	2707.00.00	Oils and other products of the distillation of high temperature coal tar; similar products in which the weight of the aromatic constituents exceeds that of the non-aromatic constituents
29.	2707.10.00	Benzole
30.	2707.30.00	Xylole
31.	2707.40.00	Naphthalene
32.	2707.60.00	Phenols
33.	2707.91.00	Creosote oils
34.	2710.11.90	Naphta
35.	2711.11.00	Natural gas in Liquefied state (except LPG, Propane and Butane)
36.	2711.14.00	Butadiene
37.	2711.21.00	Natural Gas in Gaseous State other than Compressed Natural Gas (used as transport fuel)
38.	2712.20.00	Normal paraffin and paraffin wax
39.	2707.20.00	Toluole

I	2	3
40.	2801.00.00	Fluorine, chlorine, Bromine and Iodine
41.	2802.00.00	Sulphur, sublimed or precipitated; colloidal sulphur
42.	2803.00.00	Carbon (carbon blacks and other forms of carbon not elsewhere specified or included)
43.	2804.00.00	Hydrogen, rare gases and other non-metals
44.	2805.00.00	Alkali or alkaline-earth metals; rareearth metals, scandium and yttrium, whether or not intermixed or inter alloyed; mercury
45.	2807.00.10	Sulphuric acid and anhydrides thereof; Oleum
46.	2808.00.00	Nitric acid; sulphonitric acids.
47.	2809.00.00	Diphosphorus pentoxide phosphoric acid and polyphosphoric acids
48.	2810.00.00	Oxides of boron; boric acids
49.	2811.00.00	Other inorganic acids and other inorganic oxygen compounds of non-metals.
50.	2812.00.00	Halides and halide oxides of non-metals.
51.	2813.00.00	Sulphides of non-metals, commercial phosphorus trisulphide
52.	2814.00.00	Ammonia, anhydrous or in aqueous solution
53.	2815.00.00	Sodium hydroxide (caustic soda); potassium hydroxides (caustic potash); peroxides of sodium or potassium
54.	2806.00.00	Hydrogen chloride (hydrochloric acid); chlorosulphuric acid
55.	2816.00.00	Hydroxide and peroxide of magnesium; oxides hydroxides and peroxides of strontium or barium
56.	2818.00.00	Artificial corundum, whether or not chemically defined; aluminium oxide, aluminium hydroxide
57.	2818.30.00	Aluminium hydroxides
58.	2819.00.00	Chromium oxides and hydroxides
59.	2820.00.00	Manganese oxides
60.	2821.00.00	Iron oxides and hydroxides
61.	2822.00.00	Cobalt oxides and hydroxides; commercial cobalt oxides
62.	2823.00.00	Titanium oxide
63.	2825.00.00	Hydrazine and hydroxylamine and their inorganic salts; other inorganic bases; other metal oxides, hydroxides and peroxides
64.	2826.00.00	Fluorides; fluorosilicates, fluoroaluminates and other complex fluorine salts
65.	2827.00.00	Chlorides, chloride oxides and chloride hydroxides; bromides and bromide oxides; iodides and iodide oxides
66.	2828.00.00	Hypochlorites; commercial calcium hypochlorite; chlorites, hypobromites
67.	2829.00.00	Chlorates and Perchlorates; Bromates and Perbromates; Iodates and periodates
68.	2830.00.00	Sulphides; Polysulphides
69.	2831.00.00	Dithionites and sulfoxylates
70.	2832.00.00	Sulphides; thiosulphates
71.	2833.00.00	Sulphates; alums; peroxosulphates (persulphates)
72.	2834.00.00	Nitrite, nitrates
73.	2835.00.00	Phosphinacs (hypophosphites), phosphonates (phosphites); phosphates and polyphosphates
74.	2836.00.00	Carbonates; peroxocarbonates (percarbonates); commercial ammonium carbonates containing ammonium carbonates
75.	2837.00.00	Cyanides, cyanide oxides and complex cyanides
76.	2838.00.00	Fulminates, cyanates and thiocyanates
77.	2840.00.00	Borates; Peroxborates (perborates)
78.	2841.30.00	Sodium dichromate
79.	2841.50.90	Potassium dichromate
80.	2844.00.00	Radioactive chemical elements and radioactive isotopes (including the fissile chemical elements and isotopes) and their compounds; mixtures and residues containing these products
81.	2845.00.00	Isotopes other than those of heading No. 2844: compounds, inorganic or organic of such isotopes, whether or not chemically defined
82.	2846.00.00	Compounds, inorganic or organic, of rare earth metals of yttrium or scandium or of mixtures of these metals
83.	2847.00.00	Hydrogen peroxide, whether or not solidified with urea
84.	2848.00.00	Phosphides, whether or not chemically defined, excluding ferrophosphorus
85.	2849.10.00	Calcium Carbide

1	2	3
86.	2901.00.00	Acyclic Hydrocarbons
87.	2901.00.00	Propylene, Ethylene
88.	2902.00.00	Cyclic Hydrocarbons
89.	2903.00.00	Halogenated derivatives of Hydrocarbons
90.	2904.00.00	Sulphonated, nitrated or nitrosated derivatives of hydrocarbons, whether or not halogenated
91.	2905.00.00	Acyclic alcohols and their Halogenated, sulphonated, nitrated or nitrosated derivatives
92.	2905.11.00	Methanol
93.	2901.51.00	Di-ethylene Glycol, Mono Ethylene Glycol, Tri-Ethylene Glycol, Ethylene Glycol, Heavy Ethylene Glycol
94.	2906.00.00	Cyclic alcohols and their halogenated, sulphonated nitrated or nitrosated derivatives
95.	2907.11.00	Phenols and its salts
96.	2908.00.00	Halogenated, sulphonated, nitrated or nitrosated derivatives of phenols or phenol-alcohols
97.	2909.00.00	Ethers, ether -alcohols peroxides, ether peroxides, ketone peroxides (whether or not chemically defined) and their halogenated, sulphonated, nitrated or nitrosated, derivatives
98.	2910.00.00	Epoxides, Epoxyalcohols, epoxyphenols and epoxyethers, with a three-membered ring and their halogenated, sulphonated, nitrated or nitrosated derivatives
99.	2910.10.00	Ethylene Oxide
100.	2911.00.00	Acetals and hemiacetals, whether or not with other oxygen function and their halogenated, sulphonated, nitrated or nitrosated derivatives
101.	2912.00.00	Aldehyde-function compounds, Aldehydes, whether or not with other oxygen function; cyclic polymers or aldehydes; paraformaldehyde
102.	2913.00.00	Halogenated, sulphouated, nitrated or nitrosated derivatives or products of heading No. 2912
103.	2915.00.00	Saturated acyclic monocarboxylic acids and their anhydrides, halides, peroxides and peroxyacids; their halogenated, sulphonated, nitrated and nitrosated derivatives
104.	2916.00.00	Unsaturated acyclic monocarboxylic acids, cyclic monocarboxylic acids, their anhydrides, halides, peroxides and peroxyacids; their halogenated, sulphonated, nitrated or nitrosated derivatives
105.	2917.00.00	Polycarboxylic acids, their anhydrides, halides, peroxides and peroxyacids; their halogenated, sulphonated, nitrated or nitrosated derivatives
106.	2917.36.00	Terephthalic Acid and its salt
107.	2917.37.00	Dimethyl terephthalate
108.	2918.00.00	Carboxylic acids with additional oxygen function and their anhydrides, balides, peroxides and peroxyacides: their halogenated, sulphonated, nitrated or nitrosated derivatives
109.	2919.00.00	Phosphoric eaters and their salts, including lactophosphates; their halogenated, sulponated nitrated or nitrosated derivatives
110.	2920.00.00	Esters of other inorganic acids (excluding esters of hydrogen halides) and their salts, their halogenated, sulphonated, nitrated or nitrosated derivatives
111.	2921.00.00	Amine-function compounds
112.	2922.00.00	Oxygen-function amino-compounds
113.	2923.00.00	Quaternary ammonium salts and hydroxides; lecithins and other phosphoinolipids
114.	2924.00.00	Carboxyamide-function compounds; amide-function compounds of carbonic acid
115.	2925.00.00	Carboxyamide-function compounds (including saccharin and its salts) and imine function compounds
116.	2926.00.00	Nitrile-function compounds.
117.	2927.00.00	Diazo, Azo-or-azoxy-compounds
118.	2928.00.00	Organic derivatives of hydrazine or of hydroxylamine
119.	2929.00.00	Compounds with other nitrogen function
120.	2930.00.00	Organo-sulphur compounds
121.	2931.00.00	Other organo—inorganic compounds.
122.	2932.00.00	Heterocyclic compounds with oxygen heteroatom(s) only

1	2	3
123.	2933.00.00	Heterocyclic compounds with nitrogen heteroatom(s) only
124.	2934.00.00	Nucleic acids and their salts; other heterocyclic compounds
125.	2935.00.00	Sulphonamides
126.	2938.00.00	Glycosides, natural or reproduced by synthesis and their salts, ethers, esters and other derivatives
127.	2939.00.00	Vegetable alkaloids, natural or reproduced by synthesis, and their salts, ethers, esters and other derivatives
128.	2942.00.00	Other organic compounds
129.	3201.00.00	Tanning extracts of vegetable origin; tannins and their salts, ethers, esters and other derivatives
130.	3202.00.00	Synthetic organic tanning substances; inorganic tanning substances; tanning preparations, whether or not containing natural tanning substances; enzymatic preparations for pre-tanning
131.	3203.00.00	Colouring matter of vegetable or animal origin (including dyeing extracts but excluding animal black), whether or not chemically defined; preparations based on colouring matter of vegetable or animal origin as specified in Note 3 to this Chapter
132.	3204.00.00	Synthetic organic colouring matter, whether or not chemically defined; preparations based on synthetic organic colouring matter as specified in Note 3 to this Chapter; synthetic organic products of a kind used as fluorescent brightening agents or as luminophores, whether or not chemically defined
133.	3205.00.00	Colour lakes; preparations based on colour lakes, as specified in Note 3 to this chapter
134.	3206.00.00	Other colouring matter, preparations as specified in Note 3 this Chapter, other than those of heading 3203, 3204 or 3205; inorganic products of a kind used as luminophores whether or not chemically defined
135.	3207.00.00	Glass frit and other glass, in the form of powder, granules or flaked
136.	3211.00.00	Prepared driers
137.	3212.00.00	Dyes, acid dyes, alizarine dyes, basic dyes
138.	3215.90.00	Printing ink whether or not concentrated or solid
139.	3302.10.10	Synthetic flavoring essences
140.	3402.00.00	Organic surface active agents (other than soap), surface-active preparations, washing preparations (including auxiliary washing preparation) and cleaning preparations, whether or not containing soap, other than those of heading 3401
141.	3403.00.00	Lubricating preparations (including cutting-oil preparations, bold or nut release preparations, anti-rust or anti-corrosion preparations and would release probations, based on lubricants) and preparations of a kind used for the oil or grease treatment of textile materials, leather, furskins or other materials, but excluding preparations containing, as basic constituents, 70% or more by weight of petroleum oils or of oils obtained from bituminous minerals — Containing petroleum oil or oils obtained from bituminous minerals
142.	3501.00.00	Casein, caseinates and other Casein derivatives, casein glues
143.	3503.00.30	Glues derived from bones, hides and similar items; fish glues
144.	3507.00.00	Enzymes; prepared enzymes not elsewhere specified or included
145.	3707.00.00	Chemical preparations for photographic uses (other than varnishes, glues, adhesives and similar preparations); unmixed products for photographic uses, put up in measured portions or put up for retail sale in a form ready for use.
146.	3801.10.00	Artificial graphite; colloidal or semicolloidal graphite; preparations based on graphite or other carbon in the form of pastes, blocks, pastes or other semi-manufacturers
147.	3802.00.00	Activated carbon, activated natural mineral products, animal black, including spent animal black
148.	3804.00.00	Residual lyes from the manufacture of wood pulp, whether or not concentrated, desugared or chemically treated, including lignin sulphonates, but excluding tall oil of heading No. 38.3
149.	3806.00.00	Rosin and resin acids and derivatives thereof, rosin spirit and rosin oils, rosin gums
150.	3806.10.00	Reducers and blanket wash/roller wash used in the printing industry (organic composite solvents and thinners not elsewhere specified or included)
151.	3807.00.00	Wood tar, wood tar oils, wood creosote, wood naphtha, vegetable pitch, brewers pitch and similar preparations based on rosin, resin acids or on vegetable pitch

1	2	3
152.	3809.00.00	Finishing agents, dye carriers to accelerate the dyeing or fixing of dye-stuffs and other products and preparations (for example, dressings and mordants). Of a kind used in textile, paper, leather or like industries, not elsewhere specified or included
153.	3810.00.00	Picklings preparations for metal surfaces; fluxes and other auxiliary preparations for soldering brazing or welding; soldering brazing or welding powders and pastes consisting of metal and other materials; preparations of a kind used as cores or coatings for welding electrodes or rods.
154.	3812.10.00	Prepared rubber accelerators, compounded plasticisers for rubber or plastics, not elsewhere specified or included anti-oxidising preparations and other compound stabilisers for rubber or plastics.
155.	3815.00.00	Reaction initiators, reaction accelerators and catalytic preparations, not elsewhere specified or included
156.	3817.00.00	Mixed alkylbenzenes and mixed alkylnaphthalenes, other than those of heading No. 2707 or 2902
157.	3818.00.00	Chemical elements doped for use in electronics, in the form of discs, wafers or similar forms; chemical compounds doped for use in electronics
158.	3823.00.00	Industrial monocarboxylic fatty acids, acid oils from refining, industrial fatty alcohols
159.	3824.90.21	Electroplating salts
160.	3901.00.00	Polymers of ethylene in primary forms
161.	3901.10.10	Linear Low Density Polyethylene (LLDPE) and Low Density Polyethylene (LDPE).
162.	3901.10.90	High Density Polyethylene (HDPE).
163.	3902.00.00	Polymers of propylene in primary forms.
164.	3903.00.00	Polymers of styrene, in primary forms. —Polystyrene:
165.	3904.00.00	Polymers of vinyl chloride or of other halogenated olefins, in primary forms.
166.	3904.00.00	Polyvinyl Chloride (PVC)
167.	3905.00.00	Acrylic polymers in primary forms
168.	3907.10.00	Polyacetals other polyethers and epoxide resin in primary forms, polycarbonates, alkyd polyallylestere and other polyesters, in primary forms
169.	3907.00.00	Polyethylene Terephthalate Chips
170.	3908.00.00	Polyamides in primary forms
171.	3909.00.00	Amino-resins, Polyphenylene oxide, phenolic resins and polyurethanes in primary forms.
172.	3910.00.00	Silicones in primary forms
173.	3911.00.00	Petroleum resins, coumarone-indene resins, polyterpenes, polysulphides, polysulphones and other products specified in Note 3 to this Chapter, not elsewhere specified or included in primary forms.
174.	3912.00.00	Cellulose and its chemical derivatives, and cellulose others, not elsewhere specified or included in primary forms
175.	3913.00.00	Natural polymers (for example, alginic acid) and modified natural polymers (for example, hardened proteins, chemical derivatives of natural rubber), not elsewhere specified or included, in primary forms.
176.	3914.00.00	Ion-exchangers based on polymers of headings Nos. 3901 to 4913. In primary forms.
177.	3917.22.00	Polymers of propylene or of other olefins, in primary forms.
178.	3918.10.00	Polymers of vinyl chloride or of other halogenated olefins, in primary forms.
179.	3919.00.00	Self-adhesive plates, sheets, film foil, tape, strip and other flat shapes, of plastic, whether or not in rolls.
180.	3920.00.00	Flexible plain films.
181.	3923.00.00	Articles for the packing of goods, of plastics; namely boxes, cases, crates, containers, carboys, bottles, jerry cans and their stoppers, lids, caps of plastics (but not including insulated ware).
182.	3923.00.00	Stoppers, caps and lids (including crown corks, screw caps and pouring stoppers) capsules for bottles, threaded bungs, bung covers, seals and other packing accessories of base metal.
183.	4001.00.00	Natural Rubber, balata, gutta percha, Guayule, chicle and similar natural gums, in primary forms or in plates, sheets or strips.

1	2	3
184.	4002.00.00	Synthetic rubber and factice derived from oils in primary forms or in plates, sheets or strip; mixtures of any product of heading No. 4001 with any product of this heading, in primary forms or in plates, sheets or strip.
185.	4003.00.00	Reclaimed rubber in primary forms or in plates, sheets or strip
186.	4005.00.00	Compounded rubber, unvulcanised, in primary forms or in plates, sheets or strip, other than the forms and articles of unvulcanised rubber described in heading No. 4006
187.	4408.00.00	Veneer
188.	4701.00.00	Mechanical wood pulp.
189.	4702.00.00	Chemical wood plump, semi-chemical wood pulp and pulps of other fibrous cellulosic materials.
190.	4819.00.00	Cartons (including flattened or folded cartons). Boxes (including flattened or folded boxes) cases, bags and other packing containers of paper, paperboard, whether in assembled or unassembled condition.
191.	4821.00.00	Paper printed labels and paperboard printed labels
192.	4823.12.00	Paper self adhesive tape and printed wrappers used for packing.
193.	5402.00.00	Synthetic filament yarn (Partially Oriented Yarn, Polyester Texturised Yarn).
194.	5505.10.00	waste (including nolls, yarn waste and garneted stock) of man-made fibres.
195.	6305.10.00	Sacks and bags of a kind used for the packing of goods, of jute or of other textile based fibres of heading No. 5303.
196.	7010.90.00	Carboys, bottles jars, phials of glass, of a kind used for the packing of goods; stoppers, lids and other closures of glass.
197.	7601.20.00	Aluminium its alloys and products (except extrusions).
198.	7604.29.10	Aluminium conductor steel reinforced (ASCR)
199.		Acid slurry.
200.		Activated Carbon.
201.		Additives, Salts, Steppers, Passivations, Intermediate and other chemical used in various types of Electroplating such as Nickel, Zinc, Copper, Satin Nickel, Chrome Brass, Silver, Gold, Aluminum, Lead Tin, Tin Cibalt, etc.
202.		All packing material including plastic containers, tin containers and glass containers.
203.		Amino Hardener, Epoxy Hardener, Accelater, Epoxy Resins, Epoxy Hardener UF Resin.
204.		Basic chromium sulphate, sodium bi-chromate; bleach liquid.
205.		Bone sinews.
206.		Bones (burnt).
207.		Bones (crushed).
208.		Boric Acid and Borax Powder.
209.		Brackets of bearings.
210.		Buttons, Elastic, Zip Paper Foam.
211.		Caustic and Soda Ash.
212.		CP accessories.
213.		Degreasing, Preparations, Wetting Agents Penetrators
214.		Emery Powders, Animal Glue, Leather Wheels, Lustre (Polishing Composition) Cotton Buffs, Namda, Flap Wheels and all types of polishing materials steel wire brush
215.		Ethylene Diamine Tetra Acetic Acid, Nitrillo Triacetic Acid and their Derivatives. (Other organic-inorganic compounds)
216.		Hand Tools.
217.		Hosiery Knitting needles.
218.		Maize starch, glucose 'D', maize gluten, maize germ and oil.
219.		Motor stampings
220.		Nickel Sulphate, Nickel Chlorite, Nickel Carbonate, chromic Acid, Chrome Salt and other Acids etc.

1	2	3
221.		Nitrocellulose Lacquers in Aqueous and Non-Aqueous Medium.
222.		Nonferrous metals like Copper., Zinc, Nickel, Tin, Manganese Silicon, Aluminium, Lead Amode,
223.		Nuts and bolts, screws and fasteners.
224.		Organic Composite Solvents/Thinners.
225.		Paper Cones and Paper Pipes.
226.		Polyester Staple Fibre waste.
227.		Polyester Staple Fibre, Polyester Staple Fibre Fill and Acrylic Fibre.
228.		Power Coating, Stoving Enamels, Stoving primers and Stoving thinners.
229.		Prepared Liquid Pigments and Dye Solutions.
330.		Pulley.
231.		Retarders used in the printing Industry.
232.		Sodium Acetate, Sodium Sulphate, Hydrogen Peroxide.
233.		Sodium Bi Sulphate and Sodium Meta Bi Sulphate
234.		Sodium Nitrite, Sodium Nitrate, Potassium Nitrate.
235.		Sodium Silicate.
236.		Sodium Sulphide.
237.		Turpentine Oil.
238.		Wool tops, acrylic tops, viscose tops, nylon tops and blended tops.
239.		Zinc Oxide."

4. In the said Schedule 'E', for the word. "Liquor", the words "Liquor and molasses" shall be substituted.

SCHEDULE-C

(See section 8)

LIST OF GOODS TAXABLE @ 1 per cent

Serial No.	Name of the Commodity	Rate of tax
1.	Bullions	
2.	Gold, silver and platinum ornaments	
3.	Noble metals and ornaments	
4.	Precious Stones	

SCHEDULE-D

(See section 8)

LIST OF GOODS TAXABLE @ 20 per cent

Serial No.	Name of the Commodity
1.	Aviation Turbine Fuel

SCHEDULE-E

(See section 8)

LIST OF GOODS TAXABLE AT SPECIAL RATES

Serial No.	Name of the Commodity	Rate of tax
1.	Diesel	8.8 percent
2.	Liquor	22 percent
3.	Lotteries	30 percent
4.	Petrol	27.5 percent

SCHEDULE-F

(See section 8)

LIST OF GOODS TAXABLE @ 12.5 per cent

Goods not mentioned in any other Schedule

SCHEDULE-G

(See section - 18)

(1) United Nations and its constituent agencies like :

- (i) UNDP
- (ii) UNESCO
- (iii) UNFPA
- (iv) UNHCR
- (v) UNICEF
- (vi) UNIDO
- (vii) UNIFEM
- (viii) WFAO
- (ix) WHO
- (x) ILO

(2) Diplomatic Missions

SCHEDULE-H

(See section - 19)

- (i) Paddy
- (ii) Wheat
- (iii) Cotton
- (iv) Sugar-cane
- (v) Milk, when purchased for use in manufacture of any goods other than tax free goods.